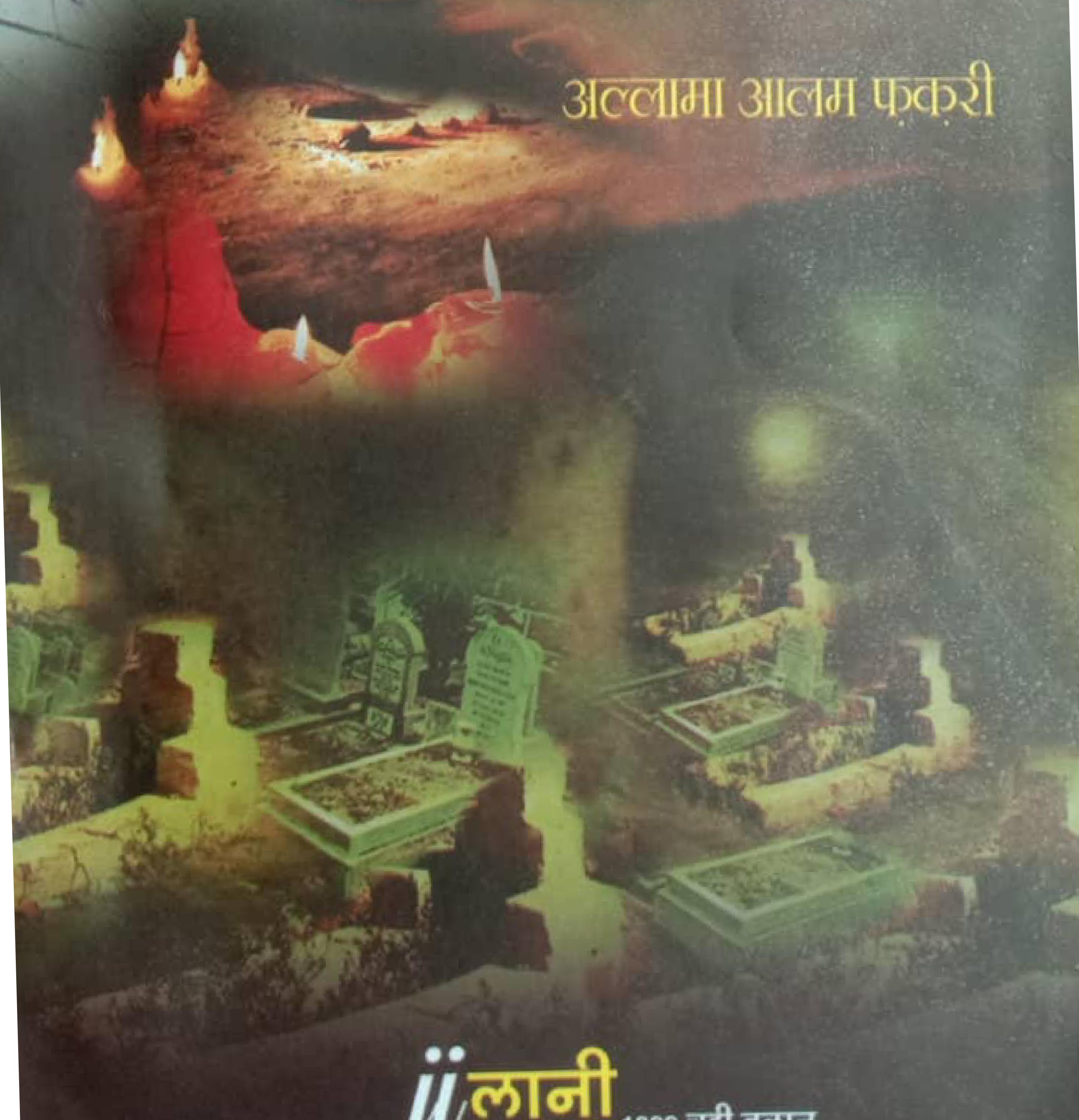
क़ब्र की पहली रात

अल्लामा आलम फ़क़री



jiलानी बुक डिपो
1229 चूड़ी वलान
जामा मस्जिद, दिल्ली-6

आप इस किताब को इस नियत से पढ़े

1 मोमिन के भविष्य आख़िरत है अपना भविष्य यानी आख़िरत बनाने के नियत से

2 रोजाना मौत और कब्र के अज़ाब को याद करने के नियत से ताकि गुनाहो से बचे रहो

3 अपने दिल मे खौफे खुदा पैदा करने के नियत से

4 इस किताब को पढके अपनी पिछली गुनाहो से तौबा करके अल्लाह व रसूल (ﷺ) को राजी करने के नियत से

5 इस किताब को पढ़कर कोई भी काम जो ख़िलाफ़े इस्लाम हो वो करने से पहले ये किताब और क़ब्र का अज़ाब याद कर लेना ताकि कदम गुनाह करने से रुक जाए

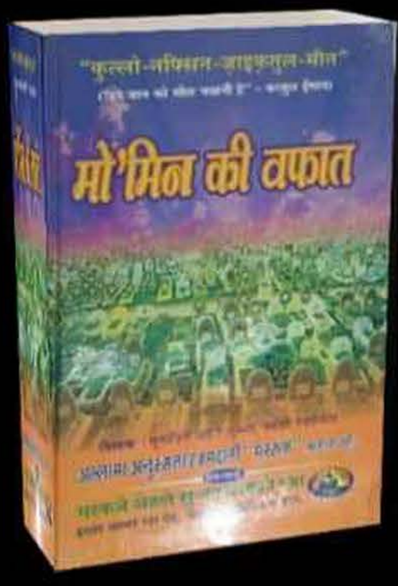
आख़िरत में आपके भलाई के लिए ये किताबें आप तक पहुँचा दिया, अब आप अपना भलाई के लिए ये किताबे डाउनलोड करे और सिर्फ पढ़े नही बल्कि अमल करें।

अल्लाह हम सब को इल्म पर अमल करने वाला बनाये

Click करे और Free डाउनलोड करे



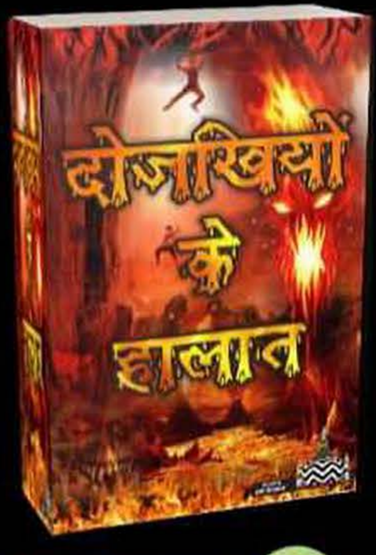
Download



Download



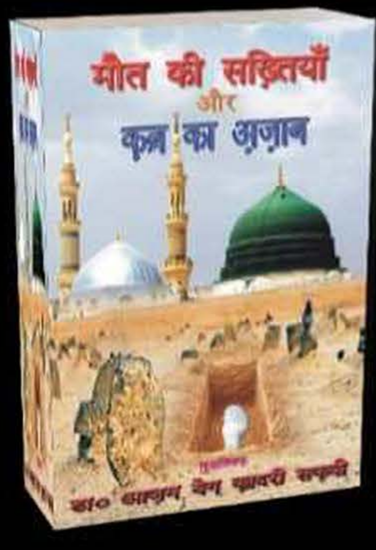
Download



Download



Download



Download

क़ब्र की पहली रात

मुसन्निफ़

अल्लामा आलम फ़क़री

ज़ेरे एहतिमाम

(हाफ़िज़) मशकूर अहमद अशरफ़ी

जीलानी बुक डिपो

1229, Churi Walan, Jama Masjid, Delhi-110006
Mobile: 011-23256577, 9350046577, 9212346577
Email: jilani.book.depot@gmail.com

नाम किताब : क़ब्र की पहली रात

मुसन्निफ़ : अल्लामा आलम फ़करी

अनुवादक : सय्यद अख़तर आलम

तादाद : 1100

एडीशन : 2014

क़ीमत :

कम्पोज़िंग : जीलानी ग्राफ़िक्स

जीलानी बुक डिपो

1229, Churi Walan, Jama Masjid, Delhi-110006
Mobile: 011-23256577, 9350046577, 9212346577
Email: jilani.book.depot@gmail.com

फेहरिस्त

□□□

क़ब्र

कब्र अमूमन उस जगह को कहा जाता है जहाँ मौत के बाद ज़मीन को खोद कर मय्यत को दफ़न किया जाता है। ज़मीन खोद कर मुर्दे को दफ़न करने का रिवाज आग़ाज़ ईन्सानियत ही से हो गया था। मुर्दे को बा इज़्ज़त तौर पर ज़मीन खोद कर इसके सुपुर्द कर देना ही सबसे आला तरीक़ा है। क़ब्र के इस तरीके को इस्लामी तरीक़ाए दफ़न कहा जाता है। इस्लाम के अलावा बाज़ क़ौमें ऐसी भी हैं जो मुर्दो को दफ़न नहीं करती बल्कि मुर्दों को आग में जलाकर राख को दरयाओं में बहा देती हैं बाज़ क़ौमें मुर्दों को बुलन्द मुक़ाम पर रख देती हैं जहाँ से परिन्दे और दिगर जानवर मुर्दे के जिस्म को खा जाते हैं। इसी तरह बाज़ क़ौमे अपने मुर्दे को दरियाओं में व समुंद्रों में बहा देती हैं। ग़रज़े कि ग़ैर इस्लामी मज़हब में मुर्दे को दफ़न करने कि बजाय उसके जिस्म को किसी न किसी तरह ख़त्म कर दिया जाता है। मौत के बाद मुर्दे के जिस्म को ख़वाह क़ब्र बनाकर दफ़न कर दिया जाय या किसी और तरह से बर्बाद कर दिया जाय उसे क़ब्र ही कहा जायगा।

क़ब्र क्या है :-

क़ुरआन व हदीस की रू से क़ब्र की ज़िन्दगी मौत से लेकर क़यामत तक है हर इंसान का वास्ता इससे पड़के रहेगा। मुर्दा ख़्वाह मिटटी के तूदे के नीचे क़ब्र की सूरत में हो या ज़र्रो की सूरत में इसका जिस्म हवा में बिखेर दिया गया हो या किसी दरिन्दे के पेट में चला गया हो या पानी में गल गया हो वह क़ब्र ही में है। क़ब्र की राहत या अज़ाब इसे हर सूरत में मिलेगा गोया क़ब्र से मुराद वह आलम है जिसमें इंसान मौत के बाद दाख़िल होता है। क्योंकि अल्लाह तआला ने इसके लिये अपने कलाम में क़ब्र का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है। (व अन्नल्लाह यबअसो मन फ़िलक़बूर) और बेशक अल्लाह उनको क़बरों से उठाएगा।

इससे मालूम हुआ कि क़यामत के रोज़ अल्लाह तआला हर इंसान को जिस मुकाम से भी उठाएगा उससे मुराद क़ब्र है। यानी मौत के बाद

इंसान क़ब्र ही की ज़िन्दगी में दाख़िल हो जाता है चाहे इसकी ज़ाहिरी कैफ़ियत कुछ ही क्यों न हो शरई लिहाज़ से क़ब्र के आलम को आलमे बरज़ख़ कहा जाता है।

क़ब्र पुकारती है कि ऐ अल्लाह के बन्दों, मैं क़ब्र वोह हूँ कि जिसमें हर किसी को आना है याद रख कोई भी मुझ से बच न सका सिकन्दर व दारा मुझी में आए मैंने जिम व रूस्तम का निशान ना छोड़ा दुनिया के बड़े बड़े बादशाह मर के मुझी में पेवस्त हुए मुझमें ऐसे सोये कि कोई उन्हें जगा ना सका।

क़ब्र कहती है कि ऐ दुनिया वालों मैं वह मुक़ाम हूँ जहाँ पे आके कोई लौट नहीं सकता जहाँ तारीकी ही तारीकी है जहाँ तेरे अमल की रौशन शमा काम आ सकती है। हाय तेरा अमल अगर अच्छा ना हुआ फिर तू ही सोच ले तेरा अंजाम क्या होगा ऐ मेरे दोस्त आख़रत के मुक़ाम को मत भूल क्योंकि क़ब्र तुझे भूले हुए नहीं है कभी ना कभी तेरा गुज़र इसके क़रीब से ज़रूर होता है इसे देख कर मौत याद आये बग़ैर रह नहीं सकती फिर ऐ नादान इसका सामान पैदा कर लिहाज़ा आज के करने वाले नेक अमल कल पर ना छोड़।

आलमे बरज़ख़ का ज़माना क़ब्र ही हैः-

मौत की बिना पर इंसानी ज़िन्दगी आख़रत की ज़िन्दगी में दाख़िल हो जाती है। इसका नाम बरज़ख़ है गोया दुनियावी ज़िन्दगी के ख़ात्मा के साथ ही बरज़ख़ी ज़िन्दगी का आग़ाज़ हो जाता है जो क़यामत तक रहेगी क़यामत के दिन इंसान की हयाते आख़रत की दूसरी और हक़ीक़ी मंजिल का आग़ाज़ होगा जो हमेशा हमेशा के लिये होगी इसके बाद इंसान को कभी मौत की लज़्ज़त नहीं चखनी पड़ेगी। बरज़ख़ के लग़वी मानी दो चीज़ों के दरमियान का परदा है गोया इंसान की हयात दुनियावी के ख़ातमा (मौत) और हयाते अब्दी (क़यामत के शुरू होने वाली ज़िन्दगी) के दरम्यान जो मुक़ाम हाईल है उसका नाम बरज़ख़ है उसको हयात दुनियावी और हयात अब्दी की दरम्यानी मंज़िल एक ही बात है।

क़ुरआन हकीम में बरज़ख़ की हक़ीक़त यों बयान की गई है। (वमिंऊवरायेहिम बरज़ख़ुन ईला यौमी युब असून) और उन (मरने वालों) के पीछे एक परदा है उस दिन तक जबकि (वह क़यामत में) उठाए जायेंगे। (मोमनून - 6)

सूरह मोमिनून के अलावा बरज़ख़ का लफ़्ज़ कुरआन हकीम में दो जगह और आया है। सूरह रहमान में सूरह फुरक़ान में वहाँ भी यह दरम्यान के परदा के मफ़हूम में इस्तेमाल हुआ है सूरह रहमान में इरशाद हुआ है (बैईन हुमा बरज़खुल यब गियान) इन दोनों के दरम्यान एक परदह हैं (जिसमें) एक दूसरे पर बढ़ नहीं जाती। इन आयात से मालूम हुआ कि दुनिया और आख़रत के दरम्यान वह आलमे बरज़ख़ कहलाता है जिसमें मरने के बाद से क़यामत तक आदमी रहता है। अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरते कामिला और हिकमते बालेग़ा से आदम अलैहिस्सलाम को मिटटी से पैदा किया और तमाम चीज़ों के नाम उनको सिखाये मस्जूदे मलायक बनाया और बहिश्त को उनका मसकन बनाया फिर उनकी मंशाये तख़्लीक़ को पूरा करने के लिये उनको ज़मीन पर उतारा इस तरह उनके लिये पहला घर जन्नत और दूसरा घर दुनिया तीसरा घर बरज़ख़ चौथा जन्नत या दोज़ख़ मोक़र्रर किया हर घर के लिये मोनासिब एहकाम क़ायम फ़रमाए और औलाद आदम के लिये अव्वल घर माँ का पेट दूसरा दुनिया तीसरा घर बरज़ख़ चौथा जन्नत या दोज़ख़ मोकर्रर किया हर घर के लिये मोनासिब एहकाम मोअईयन फ़रमाये दुनिया को दारे अमल और मज़रअे आख़रत क़रार दिया पसन्दीदा और ग़ैर पसन्दीदा आमाल की तालीम के लिये अंबिया अलैहुमुस्सलाम को मबउस फ़रमाकर इंसान पर अज़ीम अहसान फ़रमाया सब अंबिया की नबुव्वत और उनकी तालीम को हक़ मानने वाले मोमनीन और इनकार करने वाले काफ़िर हुए मौत से क़यामत तक का ज़माना बरज़ख़ कहलाता है इसमें मोमिन राहत में और काफिर तकलीफ़ में रहता है।

क़ब्र के बारे में हुज़ूर का फ़रमान :-

नेक और बुरे के लिये क़ब्र की कैफ़ियत अलग-अलग है नेकों ज़ाहिदों आबिदों अल्लाह के दोस्तों और सच्चों के लिये क़ब्र की ज़िन्दगी मिस्ल जन्नत है जबकि बुरे और गुनहगारों के लिये क़ब्र जहन्नम के गढ़ों में से एक गडढा की मानिंद है जहाँ वहशत ही वहशत होगी और जिस्म को तक्लीफ़ देने वाली चीज़ें होंगी इसके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहे वसल्लम की हदीस पाक यह है। तर्जुमा, हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक मर्तबा हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहे वसल्लम के हमराह एक जनाज़ा में शरीक हुए थे। आप क़ब्र के पास तशरीफ़ फ़रमा हुए और इरशाद फ़रमाया कि क़ब्र हर रोज़ हैबतनाक

कराहने वाली आवाज़ में पुकारती है कि ऐ आदम के बेटे क्या तूने मुझे भुला दिया था क्या तुझे मालूम नहीं कि मैं गोशा-ए-तनहाई हूँ और मुसाफिरों का ठिकाना हूँ और वहशत का घर हूँ और हशरातुल अर्ज़ का मस्कन हूँ और नेहायत ही तंग हूँ मगर जिसके लिये अल्लाह मुझे फ़राख़ कर दे फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ब्र या तो जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या जहन्नम के गडढ़ों में से एक गडढ़ा। (तरग़ीब जि.2)

क़ब्रों को भुलाने के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहे वसल्लम का एक और इरशाद गिरामी है। तर्जुमा नबी सल्लल्लाहू अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अनक़रीब मेरी उम्मत पर एक ऐसा ज़माना आयेगा जबकि मेरी उम्मत के लोग पाँच चीज़ों से मोहब्बत करेंगे और पाँच चीज़ों को भूल जायेंगे दुनिया को चाहेंगे जबकि आख़रत को भूल जायेंगे हयात को पसंद करेंगे और मौत को भूला देंगे महलों को पसंद करेंगे और क़ब्रों को भूल जायेंगे माल से मोहब्बत करेंगे और हिसाब को भूल जायेंगे ख़िलक़त को पसंद करेंगे और ख़ालिक़ को भूल जायेंगे।

क़ब्र को भूलाने से नेक आमाल की तरफ़ रग़बत कम होने का अन्देशा होता है इसलिये क़ब्र को भुलाना नहीं चाहिये क़ब्र को याद रखने से मौत का वक़्त इंसान के ज़ेहन में रहेगा जिसके बाअस उसके दिल में यह लगन बेदार रहेगी कि ज़्यादा से ज़्यादा नेक आमाल कर लूं जो उसकी नजात का बाअस बनेंगे।

क़ब्र से इंसान का तअल्लुक़ सच्चा है :-

क़ब्र में नजात का तअल्लुक़ नेक आमाल से है जब इंसान क़ब्र में दाख़िल होता है तो अमल उसके साथ होता है और जब क़यामत में उठाया जायगा तो उस वक़्त भी अमल उसके साथ होगा इससे मालूम हुआ कि इंसान का सच्चा दोस्त उसका अमल है इसके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहे वसल्लम की हदीस मुन्दरजा ज़ैल है। हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि इंसान के तीन दोस्त हैं उनमें से एक दोस्त कहता है जो तूने राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दिया वह तेरा है और जो तेरे क़ब्ज़े में है वह तेरा नहीं है यह इसका (दोस्त) माल है और एक उसका दोस्त उसे कहता है कि मैं तेरा साथ दूंगा मगर जब तू बादशाह के दरवाज़े पर जायगा (यानी लेहद में उतरेगा) तो मैं तेरा साथ छोड़ दूंगा यह इसके अईज़्ज़ा व

अक़रबा हैं और तीसरा उसका दोस्त (उसका अमल है) जो उसे कहता है कि जब तू क़ब्र में दाखिल होगा और क़ब्र से उठेगा तो मैं तेरे हमराह हूँगा वह मय्यत कहती है तू इन तीनों में मेरा सच्चा दोस्त है।

(कन्जुलअम्माल)

क़ब्र के लिये तैयारी की ताकीद :-

क़ब्र की तैयारी के लिये हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहे वसल्लम का फ़रमान हस्ब ज़ैल है।

हज़रत बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहे वसल्लम की मईयत में एक जनाज़ा में शरीक थे (जब मय्यत को लेहद में उतारा गया) आप सिर्रे क़ब्र बैठ गये और (यह मंजर देखकर) इस क़दर आबदिदा हुए कि क़ब्र के किनारे की मिटटी तर हो गई फिर इरशाद फ़रमाया कि ऐ मेरे भाईयों इस (खतरनाक) मुक़ाम के लिये कुछ तैयारी कर लो (इब्ने माजा) अब्दुल्लाह बिन ओबैद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब मुर्दे के साथ आने वाले चलते हैं तो मुर्दा बैठकर उनके क़दमों की आवाज़ सुनता है और उससे इसकी क़ब्र से पहले कोई हम कलाम नहीं होता क़ब्र कहती कि इब्ने आदम क्या तूने मेरे हालात ना सुने थे क्या तू मेरी तंगी बदबू हौलनाकी और कीड़ों मकोड़ों से ना डराया गया था तो फिर तूने क्या तैयारी की।

(इब्ने अबीअददुनिया)

क़ब्र को ना भुलाना असल ज़ोहद है :-

जो शख़्स रेयाज़त व एबादत की कसरत करता है और हर वक़्त ज़िक्र इलाही में मसरूफ़ रहता है उसे आख़िरत का फ़िक्र दामनगीर रहता है जिसकी बिना पर क़ब्र उसे नहीं भूलती इसलिये सालेहीन के नज़दीक असल ज़ोहद क़ब्र को ना भुलाना है हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने भी अपने उम्मतियों को इस बात की बड़ी ताकीद फ़रमाई है कि क़ब्र को ना भूलो ताकि तुम नेकियों की तरफ़ राग़िब रह सको।

हज़रत ज़हाक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के पास एक शख़्स आया और सवाल किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! लोगों में ज़ाहिद कौन है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो क़ब्र और क़ब्र में जिस्म के गल जाने को नहीं भुलाता और दुनिया की बेजा ज़ेब व ज़ीनत से गुरेज़ करता है और फ़ानी

(दुनिया) पर बाक़ी (आख़रत) को तरजीह देता है रोज़े फ़रदा को ज़िन्दगी में शुमार नहीं करता और अपने आप को मुर्दों में शुमार करता है।

(तरग़ीब जि. 4)

हज़रत मोहम्मद बिन सबीह से रिवायत है कि जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है और उसको अज़ाब होता है तो उसके मुर्दे पड़ोसी उसको पुकार कर कहते हैं कि ऐ दुनिया से आने वाले क्या तूने हमसे नसीहत हासिल ना की क्या तूने ना देखा कि हमारे आमाल कैसे ख़त्म हुए और तुझे अमल करने की गुंजाईश थी लेकिन तूने वक़्त ज़ाया किया क़ब्र के गोशे से पुकार कर उसको कहते हैं कि ऐ ज़मीन पर इतरा कर चलने वाले क्या तूने मरने वालों से इबरत हासिल ना की क्या तूने ना देखा कि किस तरह तेरे रिशतेदारों को लोग उठा कर क़ब्रों तक ले गये (इब्ने अबीअददुनिया)

हज़रत ओबैद बिन ओमैर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि क़ब्र मुर्दे से कहती है कि अगर तू अपनी ज़िन्दगी में अल्लाह तआला की अताअत करता तो आज मैं तेरे लिये राहत होती और अगर नाफ़रमान है तो मैं तेरे लिये अज़ाब हूँ मैं वह घर हूँ कि जो मुझ में अताअत गुज़ार होकर दाख़िल हुआ तो मुझसे खुश होकर निकलेगा और जो नाफ़रमान व गुनहगार होगा वह मुझसे बुरी हालत में निकलेगा। (इब्ने अबीअददुनिया)

हज़रत जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से मरफ़ूअन रिवायत है कि क़ब्र की एक ज़बान है जिससे वह कहती है कि ऐ इंसान तूने मुझ को क्यों भुला दिया क्या तू मेरे बारे में ना जानता था कि मैं वहशत, ग़ुरबत, कीड़ों मकोड़ों और तंगियों का घर हूँ। (इब्ने अबीअददुनिया)

क़ब्र को ना भुलाने का मक़सद दर हक़ीक़त कसरते इबादत की तरफ़ मायल रहना है क्योंकि इंसानी ज़िन्दगी का असल मक़सद तो अल्लाह तआला की इबादत और अताअत है चूंकि जो शख़्स इबादत करता है और नेकआमाल की कसरत करता है मौत के बाद अल्लाह तआला उसे सुख चैन की ज़िन्दगी अता फ़रमायेगा जो उसकी इबादत का सिला होगा और जो नेक आमाल नहीं करेगा उसे मौत के बाद सज़ा मिलेगी जो उसके बुरे आमाल को बिना पर होगी यह दोनों बातें मौत के बाद क़ब्र में पेश आएंगी इसलिये इस क़ब्र की बिना पर अल्लाह को याद रखने और उसकी इबादत की ताकीद फ़रमाई गई है ताकि क़ब्र में अंजाम बख़ैर हो।

क़ब्र की पुकार :-

क़ब्र में मोमिन और काफ़िर के साथ जो सुलूक होना होता है उसके बारे में क़ब्र रोज़ाना पुकारा करती है कि ऐ इंसान मैं एक ऐसा मुक़ाम हूँ कि जहाँ एक न एक दिन तू ज़रूर आयगा और आने से पहले क़ब्र में अपनी सहूलत का सामान पैदा कर ले इसके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का इरशाद गिरामी मुन्दरजा ज़ैल है।

हज़रत अबू सईद ख़िज़री रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम (मस्जिद में) नमाज़ पढ़ाने तशरीफ़ लाये देखा की सहाब ए किराम रदियल्लाहु अन्हु बैठे हुए हंस रहे हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया काश तुम लज़्ज़तों को तोड़ने वाली मौत का ज़िक्र कसरत से करते (तो यह बात न होती) फ़रमाया क़ब्र पर कोई दिन एसा नहीं आता जिस दिन के वह यह मनादी ना करती हो कि मैं मुसाफ़िरों का ठिकाना हूँ और मैं गोशय तनहाई हूँ और मैं मिटटी का घर हूँ और मैं हशरातुलअर्ज़ का मसकन हूँ पस जब मोमिन बन्दे को दफ़न किया जाता है तो क़ब्र उसे खुश आमदीद कहती है और कहती है कि जब तू मेरी पुश्त पर महवे ख़राम होता था तो मुझे बहुत प्यारा लगता था अब जबकि तू मेरे पास आ पहुंचा है तो देखेगा मैं तेरे साथ कैसा (बेहतरीन) सलूक करती हूँ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया फिर उसके लिये जहाँ तक उसकी नज़र जाती है क़ब्र फ़राख़ हो जाती है और क़ब्र में जन्नत की तरफ़ से एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है (ताकि वह जन्नत के जांफज़ा मंज़र से लुत्फ़ अन्दोज़ हो सके) और जब फ़ासिक़ व फ़ाजिर उसके सुपुर्द किया जाता है तो क़ब्र उसे खुश आमदीद नहीं कहती बल्कि उससे यों हम कलाम होती है (क्या तुझे खबर है) जब तू मेरी पुश्त पर चला करता था तो मैं तुझे बदतरीन वजूद समझती थी आज जबकि तू मेरे पास आ पहुंचा है अब तू देखेगा कि मैं तेरे साथ क्या सलूक करती हूँ। हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया फिर क़ब्र उस पर तंग हो जाती है और उसे इस तरह भीच लेती है कि उसकी पस्लियों की हडिडयां एक दूसरे में फंस जाती हैं और हडिडयां टूट जाती हैं (इस मौका पर) आपने अपने दोनों हाथों की उंगलियों का एक दूसरी में दाख़िल किया (और यह मंज़र सहाबा रदियल्लाहु अन्हु को दिखाया) और आपने इरशाद फ़रमाया कि (इस काफ़िर व क़ाजिर मय्यत पर) सत्तर अज़्दहे मोसल्लत कर दिये जाते हैं कि उनमें से एक सांप ज़मीन पर फूंक मारे तो

जब तक दुनिया क़ायम रहेगी कभी ज़मीन पर कोई सब्ज़ी पैदा ना हो वह उसे डसते रहेंगे यहाँ तक कि रोज़े जज़ा आ जाये यानी क़यामत क़ायम होने तक क़ब्र में इसी अज़ाब में मुब्तला रहेगा। (तरग़ीब)

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम एक मर्तबा रसूले अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की मईयत में एक जनाज़े के साथ चले क़ब्रिस्तान में पहुंच कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम एक क़ब्र के पास तशरीफ़ फ़रमा हुए और इरशाद फ़रमाया कि क़ब्र पर कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता जिसमें वह निहायत फ़सीह और साफ़ आवाज़ के साथ यह ऐलान नहीं करती कि ऐ आदम के बेटे तू मुझे भूल गया मैं तन्हाई का घर हूँ अजनबीयत का घर हूँ मैं वहशत का घर हूँ मैं कीड़ों का घर हूँ मैं निहायत तंगी का घर हूँ मगर उस शख़्स के लिये जिस पर अल्लाह तआला शान्हू मुझे वसी बना दे इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या दोज़ख़ के गडढ़ों में से एक गडढा है। (तिबरानी)

अबू अल हजाज समाली से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि क़ब्र में जब मुर्दा रखा जाता है तो क़ब्र कहती है कि क्या तू नहीं जानता कि ख़राबी हो तेरे लिये मैं फ़ितना तारीकी और कीड़े मकोड़ों का घर हूँ ऐ इंसान तू मेरे पास से अकड़ता हुआ गुज़रता था अगर नेक होगा तो क़ब्र में जवाब देने वाला फ़रिश्ता जवाब देगा कि अगर यह मुर्दा नेकी का हुक्म करने वाला और बुराई से रोकने वाला हो तो क्या होगा? क़ब्र कहेगी तो फिर मैं उसके लिये राहत बन जाउंगी और उसका तमाम जिस्म नूर से मामूर हो जायगा और उसकी रूह बारगाह खोदावन्दी में चली जाएगी। (अबूनईम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि इंसान को जब क़ब्र में रख दिया जाता है तो क़ब्र उससे कहती है कि क्या तूने नहीं सुना था कि मैं तारीकी और तनहाई का घर हूँ ऐ आदम तू मेरे इर्द गिर्द चलने के बावजूद किस चीज पर इतराता था पस अगर मुर्दा मोमिन होगा तो उसकी क़ब्र को कुशादा किया जाता है और उसकी रूह को आसमान पर पहुंचा दिया जाता है। (अबी इब्ने शैबह)

इन अहादीस से मालूम हुआ कि क़ब्र रोज़ाना पुकारती है कि ऐ शख़्स तू कितना ग़ाफ़िल है और बेफ़िक्र है कि तू मेरे सीने को सारी उम्र बड़ी बेदर्दी से रौंदता रहा हालांकि तुझे मालूम है कि तेरी आख़री मंज़िल मैं हूँ

और दुनिया से मरने के बाद मेरे पास ही आना है मेरे अन्दर कीड़ों और तकलीफ़ देने वाले हशरात की पनागाहें हैं मैं बड़ी अज़ीयत की जगह हूँ और हैबत का मुक़ाम हूँ जहाँ हर तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा है लेकिन अफ़सोस तू ने कभी ना सोचा कि मैं तेरा कफ़न फाड़ दूंगी तेरा जिस्म मुझमें गल सड़ जायगा सिवाय उन जिस्मों के जिन्हें अल्लाह महफ़ूज़ रखेगा। क़ब्र कहती है कि मैं तेरे जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर डालती हूँ सारा खून चूस लेती हूं गोश्त खा लेती हूँ और आदमी के जोड़ जोड़ जुदा कर देती हूँ ग़र्ज़ कि क़ब्र की यह सारी बातें इंसान की तंबीह के लिये हैं ताकि वह नेक आमाल की बिना पर क़ब्र की अज़ीयत से बच जाय।

किताबुर्रूह में लिखा है कि क़ब्रों से आवाज़ आ रही है कि ऐ दुनिया में रहने वालों तुमने ऐसा घर आबाद कर रखा है जो बहुत जल्द तुमसे छिन जाएगा और इस घर को उजाड़ रखा है जिसमें तुम तेज़ी से मुन्तक़िल होने वाले हो तुमने ऐसे घर आबाद कर रखे हैं जिससे तुम अनक़रीब निकाल दिये जाओगे और इन में दूसरों को आबाद कर दिया जायगा तुम इन मकानों को सामाने ऐशो इशरत से मोज़इअन कर रहे हो मुमकिन है तुम्हें इनमें रहना नसीब भी ना हो और तुम्हारे बाद दूसरे लोग इन पर क़ाबिज़ हो जायें और तुमने अपने वह घर उजाड़ रखे हैं जिसमें तुमको दायमी ज़िन्दगी गुज़ारनी है ऐ दुनिया वालों यह दुनिया आख़रत के लिये जद्दो जहद और खेती की पैदावार मोहय्या करने का घर है और क़ब्र इबरतों का मुक़ाम है यह या तो बाग़ीचा-ए-जन्नत है या जहन्नम का खतरनाक गडढा है। (किताबुर्रूह इब्नक़ीम)

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की बेटे को नसीहतः-

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे साम को नसीहत फ़रमाई मेरे प्यारे बेटे क़ब्र में इस हाल में हरगिज़ ना दाखिल होना कि तेरे दिल में ज़र्रा बराबर तकब्बुर हो इसलिये कि किब्रियाई (तकब्बुर) की चादर अल्लाह तआला के लिये मख़्तस है जो शख़्स अल्लाह तआला की इस चादर को फ़ाड़ने की कोशिश करता है अल्लाह तआला उस पर ग़ज़बनाक हो जाता है ऐ मेरे प्यारे बेटे क़ब्र में इस हाल में हरगिज़ दाख़िल ना होना कि तेरे दिल में ज़र्रा बराबर रहमते इलाही से ना उम्मीदी हो इसलिये कि (बदबख़्त) गुमराह आदमी ही अल्लाह तआला की रहमत से ना उम्मीद होता है। (किताबुज़्ज़ोहद)

क़ब्र के बारे में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का फ़रमान :-

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने हवारियों के हमराह क़ब्रिस्तान में एक क़ब्र पर खड़े थे इसी मौक़ा पर आपके हवारियों ने क़ब्र की तारीकी उसकी तंगी और उसकी वहशत का ज़िक्र किया तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम अपनी माँओं के पेट में इससे भी ज़्यादा तंग व तारीक मुक़ाम पर थे जब अल्लाह तआला फ़राख़ करना चाहता है फ़राख़ कर देता है। (किताबुज़्ज़ोहद)

"क़ब्र के बारे में अकाबरीन के एक़वाल"

क़ब्र चूंकि इबरत का मुक़ाम है इसलिये अकाबरीन ने इसके बारे में बड़ी बसीरत अंगेज़ बातें कही हैं ताकि इंसान क़ब्र के मुक़ाम को पहचान कर इसके लिये नेक आमाल से कुछ तैयारी कर ले क़ब्र के बारे में अकाबिर सहाबा रदियल्लाहु अन्हु और औलिया रहमतुल्लाहि अलैहि के चन्द एक़वाल मुन्दरजा ज़ैल है।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हु का इरशादः-

क़ब्र के बारे में आप रदियल्लाहु अन्हु का इरशाद मुन्दर्जा ज़ैल है हज़रत अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि तोशय आमाल के बग़ैर क़ब्र में दाख़िल होने वाले की मिसाल उस शख़्स की सी है जो समुंद्र में बग़ैर कश्ती उतर जाय।

उस्मान ग़नी रदियल्लाहु अन्हु का फ़रमान :-

हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया है कि जब क़ब्र का ज़िक्र सुनता हूँ या मेरा किसी क़ब्र के पास से गुज़र होता है तो क़ब्र के मोताअलिक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहे वसल्ल्म के इरशादात याद आ जाते हैं और मैं घबरा उठता हूँ और बे अख़्तयार आँखें आंसूओं से तर हो जाती हैं। हज़रत उस्मान रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि (उनका यह हाल था) जब वह किसी क़ब्र के पास खड़े होते तो इस क़दर रोते की उनकी दाढ़ी आंसूओं से तर हो जाती उनसे पूछा गया कि आप जब जन्नत और जहन्नम का ज़िक्र करते हैं तो नहीं रोते और क़ब्र की वजह से रोते हैं फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहे वसल्ल्म फ़रमाते थे कि क़ब्र आख़िरत की मंज़िलों में से पहली मंज़िल है अगर बन्दा इससे नजात पा गया तो आईन्दा पेश आने वाली मंज़िलें इससे आसान हैं और

अगर क़ब्र की मंज़िल से बन्दा नजात ना पा सका तो इससे बाद की मंज़िलें और ज़्यादा सख़्त और कठिन हैं नीज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ये भी फ़रमाते थे कि क़ब्र के मंज़र से मैंने कोई ख़ौफ़नाक मन्ज़र नही देखा। (तिर्मिज़ी)

हज़रत उस्मान रदियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि चार चीज़ें ऐसी हैं ज़ाहिर तो फ़ज़ीलत का दर्जा रखता है और बातिन फ़र्ज़ का हुक्म रखता है। खुदा के नेक बन्दों से ताल्लुक़ रखना फ़ज़ीलत है लेकिन उनके नक्शे क़दम पर चलना फ़र्ज़ है कुरआन करीम की तिलावत फ़ज़ीलत है लेकिन इस पर अमल करना फ़र्ज़ है क़ब्रों की ज़ियारत करना फ़ज़ीलत है लेकिन खुद क़ब्र में पहुंचने की तैयारी करना फ़र्ज़ है बीमार की बीमारपुर्सी करना भी फ़ज़ीलत है लेकिन इससे इबरत हासिल करना फ़र्ज़ है।

हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हु का इरशाद :-

हज़रत कमील रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक मर्तबा हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हु के हमराह क़ब्रिस्तान पहुंचा आपने एक क़ब्र की तरफ़ मोतवज्जह होकर फ़रमाया ऐ अहले क़बूर ऐ क़ब्रों के गड्ढों में बोसीदा हो जाने वालों ऐ वहशत और तन्हाई से हमकिनार लोगो कुछ बताओ तुम्हारा क्या हाल है यहाँ किस तरह गुज़र हो रही है फ़िर खुद ही यों गोया हुए कि तुम्हारे बाद तुम्हारे माल तक़सीम हो गये औलादें यतीम हो गई बीवीयों ने दूसरे शौहर कर लिये इसके बाद मुझसे मोख़ातिब हुए और फ़रमाया कमील, अगर इन लोगों को बोलने की ताक़त होती और यह कलाम कर सकते तो यह इस तरह कहते (कि दुनिया की माल व दौलत की निस्बत) बेहतरीन ज़ादे राह तक़वा है। (इंसान का यही अमल और नाफ़े सरमाया है जो कि राह-आख़रत में काम आता है।) यह फ़रमाया और अशकबार हो गये फिर फ़रमाया ऐ कमील रदियल्लाहु अन्हु क़ब्र अमल का सन्दूक़ है यानी इंसान के आमाल क़ब्र में उसके साथ होते हैं इंसान अच्छा या बुरा जो अमल करता है यानी क़ब्र इस सन्दूक़ में महफ़ूज़ रहता है।

हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौलः-

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि एक बार जनाज़े की नमाज़ पढ़ने लगे तो जब लोग दफ़न से फ़ारिग़ हो गये और क़ब्र दुरूस्त कर चुके तो आप उस क़ब्र पर बैठकर बहुत रोये। फिर आपने हाज़रीन से फ़रमाया

कि ऐ लोगों सुनो अव्वल और आख़िर क़ब्र है दुनिया के आख़िर क़ब्र और आख़रत के अव्वल क़ब्र है और फिर तुम ऐसे आलम से क्यों नहीं डरते जिसके अव्वल क़ब्र है और जब तुम्हारा अव्वल व आख़िर यह है तो ऐ ग़ाफ़िलों, अव्वल व आख़िर को दुरूस्त कर लो आपके इस वाअज़ से लोग बहुत मोतासिर हुए और सब रोने लगे। (तज़किरतुल औलिया)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि का इरशादः-

मुहम्मद बिन कआब क़रतबी का कहना है कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि जब ख़लीफ़ा हुए तो मुझे बुलाने के लिये मेरे पास एक आदमी भेजा और मैं उस वक़्त मदीने में था मैं आपके पास हाज़िर हुआ मैं उन्हें हैरत की नज़र से देख रहा था मेरी आँख उन पर जमी हुई थी आपने फ़रमाया ऐ इब्ने काअ्ब तुम मेरी तरफ़ इस तरह देख रहे हो कि इस तरह तुम्हें देखने की आदत नहीं है मैंने कहा कि मैं ताअज्जुब से देख रहा हूँ आपने फ़रमाया तुम किस लिये मोताज़िब हो मैंने अर्ज़ किया या अमीरूल मोमिनीन मैं आपके (बदन के) रंग और जिस्म को लाग़री और (सर के) बाल झड़ जाने पर तआजुब कर रहा हूँ आपने फ़रमाया तुम्हारा उस वक़्त क्या हाल होगा जब तुम मुझे क़ब्र में बेयारो मददगार पड़ा हुआ देखोगे जहाँ कोई पुरसाने हाल ना होगा और जब मेरी आँखें ढलक कर रूख़सारों पर पड़ रही होंगी और जब मेरी नाक से बदबूदार माद्दाह बह रहा होगा यह कैसा मंजर होगा कि हर कोई देखने वाला हैरान होगा। (किताबुज़्ज़ोहद)

हज़रत बहलूल का क़ब्र के बारे में इरशाद :-

हज़रत सरी सक़्ती रहमतुल्लाहि अलैहि का कहना है कि मैं एक रोज़ क़ब्रिस्तान से गुज़रा तो मैंने देखा कि बहलूल अपने दोनों पावों एक क़ब्र में लटकाए हुए मिटटी से खेल रहे हैं मैने कहा आप यहाँ बहलूल ने जवाब दिया मैं उन लोगों के पास हूँ जिनसे मुझे कोई तकलीफ़ नहीं पहुंचती और जब मैं उनके पास से चला जाता हूँ तो वह मेरी ग़ीबत नहीं करते मैंने कहा ऐ बहलूल रोटी मंहगी हो गई है कहने लगे ख़ुदा की क़सम मुझे कुछ परवाह नहीं अगरचे एक रोटी एक मिस्क़ाल के बराबर क्यों न हो जाय हम पर तो यह फ़र्ज़ है कि हम उस (अल्लाह) की इबादत करें जैसा कि उसने हमें हुक्म दिया है और उसके ज़िम्मे हमारा रिज़्क़ है जैसा कि उसने हमसे वादा किया है इसके बाद वह मेरे पास से यह अशआर पढ़ता हुआ

रुख़सत हुआ (ऐ वह शख़्स जो दुनिया और ज़ीनत से मुस्तफ़ीद हो रहा है और आँखें इस (दुनिया) की लज़्ज़तों में महवियत के बाअस बेदार हैं (अफ़सोस) तू अपनी उम्र ऐसी चीज़ के हुसूल में ज़ाया कर रहा है जिसे तू हासिल नहीं कर सकता तो जब अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश होगा तो उसे क्या जवाब देगा।

"क़ब्र की तारीकी"

बग़दाद में एक बुज़ुर्ग रहते थे उनका नाम अबू अली था एक मर्तबा वह बग़दाद के महल्ला महज़म में जा रहे थे कि एक शख़्स जिसका नाम ख़लफ़ बिन सालिम था ने पूछा कि ऐ अबू अली आपके पास रहने की कोई जगह है उन्होंने कहा जी हाँ सालिम ने कहा वह कहाँ है अबू अली ने फ़रमाया वह ऐसा घर है जहाँ अमीर व ग़रीब शाह व गदा सब बराबर हैं और वह क़ब्रिस्तान हैं सालिम ने पूछा ऐ अबू अली रात की तारीकी में किस तरह वक़्त गुज़ारते हो अबू अली ने कहा मैं क़ब्र की तारीकी और उसकी वहशत यानी तन्हाई को कसरत से याद करता रहता हूँ इस तरह रात के अंधेरे में वक़्त गुज़ारना मुझ पर सहल हो जाता है मैंने कहा आपने क़ब्रिस्तान में कोई नागवार चीज़ भी देखी होगी फ़रमाया मुमकिन है लेकिन आख़रत (क़यामत) का ख़ौफ़ मुझे क़ब्रिस्तान के ख़ौफ़ से मुस्तग़नी (लापरवाह) कर देता है।

"साबित बनानी रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल :-

हज़रत साबित बनानी रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल है कि एक मर्तबा मैं क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुआ जब वहाँ से निकलने का इरादा किया तो मुझे एक आवाज सुनाई दी कहने वाला कह रहा था ऐ साबित-ख़बरदार यहाँ रहने वालों की ख़ामोशी से धोखा ना खाना इनमें कितने ऐसे हैं जो निहायत ग़म ज़दा हैं। (अहियाउल उलूम जि. 4)

हिकायतः-

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि एक मर्तबा एक जनाज़ा के साथ तशरीफ़ ले गये और क़ब्रिस्तान में पहुंचकर अलग एक जगह बैठकर कुछ सोचने लगे। किसी ने अर्ज़ किया अमीरूल मोमिनीन-आप इस जनाज़ा के वली थे आप ही अलग बैठ गये? फ़रमाया हाँ - मुझे एक क़ब्र ने आवाज़ दी और मुझे यह कहा ऐ उमर बिन अब्दुल अज़ीज़

रहमतुल्लाहि अलैहि तू मुझसे यह नहीं पूछता कि मैं इन आने वालों के साथ क्या क्या करती हूँ? मैंने कहा तू ज़रूर बता उसने कहा उसके कफ़न फाड़ देती हूं बदन के टुकड़े टुकड़े कर देती हूँ खून सारा चूस लेती हूँ गोश्त खा लेती हूँ और बताऊं कि आदमी के जोड़ों के साथ क्या करती हूँ मूढों को बाहों से जुदा कर देती हूँ और सुरीनों को रानो से अलग कर देती हूँ और रानों को गुठनों से और गुठनों को पिंडलियों से और पिंडलियों को पावों से जुदा जुदा कर देती हूँ यह फ़रमाकर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि रोने लगे और फ़रमाया कि दुनिया का क़याम बहुत ही थोड़ा है और इसका धोका बहुत ज़्यादा है इसमें जो अज़ीज़ है आख़िरत में ज़लील है इसमें जो दौलत वाला है वह आख़िरत में फ़क़ीर है इसका जवान बहुत जल्द बूढ़ा हो जायगा इसका ज़िन्दह बहुत जल्द मर जायगा इसका तुम्हारी तरफ मोतवज्ज़ह होना तुमको धोका में ना डाल दे हालांकि तुम देख रहे हो कि यह कितनी जल्दी मुँह फेर लेती है और बेवकूफ़ वह है जो इसके धोके में फंसे जाय कहाँ गये इसके वह दिलदादह जिन्होंने बड़े-बड़े शहर आबाद किये बड़ी बड़ी नहरें निकाली बड़े-बड़े बाग़ लगाये और बहुत थोड़े दिन रहकर सब को छोड़ कर चल दिये वह अपनी सेहत और तन्दरूस्ती से धोका में पड़े कि सेहत के बेहतर होने से उनमें निशात पैदा हुआ और इससे गुनाहों में मुबतला हुए वह लोग खुदा की क़सम दुनिया में माल की कसरत से क़ाबिले रशक थे बावजूदे कि माल के कमाने में उनको रूकावटें पेश आती थीं मगर फिर भी ख़ूब कमाते थे इन पर लोग हसद करते थे लेकिन वह बेफ़िक्री से माल को जमा करते रहते थे और उसके जमा करने में हर प्रकार की तकलीफ को खुशी से बरदाश्त करते थे लेकिन अब देख लो कि मिटटी ने उनके बदनों का क्या बना डाला और ख़ाक ने उनके बदनों का क्या बना दिया कीड़ों ने उनके जोड़ों और हडिडयों का क्या हाल किया वह लोग दुनिया में ऊँची ऊँची मसहरियों और ऊँचे ऊँचे फ़रशों और नरम नरम गददों पर नौकरों और ख़ादिमों के दरमियान आराम करते थे लेकिन अब क्या हो रहा है आवाज़ देकर उनसे पूछा कि क्या गुज़र रही है ग़रीब अमीर सब एक मैदान में पड़े हुए हैं मालदार से पूछ कि इसके माल ने क्या काम दिया फ़क़ीर से पूछा कि उनके फ़िक्र ने क्या नुक़सान किया उनकी ज़बान का हाल पूछ कि बहुत चहकती थी उनके आँखों को देख जो हर तरफ देखती थीं उनकी नर्म नर्म खालों का हाल दरयाफ़्त कर उनकी खूबसूरत

और दिलरूबा चेहरों का हाल पूछ क्या हुआ? उनके नाज़ुक बदन को मालूम कर कहाँ गया और कीड़ों ने सबका क्या हशर किया उनके रंग काले कर दिये उन का गोश्त खा लिया उनके मुँह पर मिटटी डाल दी आज़ा को अलग अलग कर दिया जोड़ों को तोड़ दिया आह कहाँ हैं उनके खुददाम जो हर वक्त हाज़िर हूँ जी कहते थे कहाँ हैं उनके खेमे और वह क़मरे जिनमें आराम करते थे कहाँ हैं उनके वह माल और ख़ज़ाने जिनको जोड़ जोड़कर रखते थे उनके खुददाम ने उनको क़ब्र में खाने के लिये कोई तोशा भी ना दिया और उनकी क़ब्र में कोई बिस्तर भी न बिछा दिया कोई तकिया भी न रख दिया ज़मीन ही पर डाल दिया कोई दरख़्त फूल फुलवारी भी ना लगायी आह-अब वह अकेले पड़े हैं अंधेरे में पड़े हैं उनके लिये अब दिन रात बराबर है। दोस्तों से मिल नही सकते किसी को अपने पास बुला नही सकते कितने नाज़ुक बदन मर्द, नाज़ुक बदन औरतें आज उनके बदन बोसीदह हैं उनके आज़ा एक दूसरे से जुदा हैं आँखें निकलकर मुँह पर गिर गई गर्दन जुदा हुई पड़ी है मुँह में पानी पीप भरा पड़ा है और सारे बदन में कीड़े चल रहे हैं वह इस हाल में पड़े हैं और उनकी बीवीयों ने दूसरे निकाह कर लिये वह मज़े उड़ा रही हैं बेटों ने मकानों पर कब्ज़ा कर लिया वारिसों ने माल तक़सीम कर लिया मगर बाज़ खुश नसीब क़ब्र में ऐसे भी हैं जो अपनी क़ब्रों में लज़्ज़तें उड़ा रहे हैं तरो ताज़ा चेहरों के साथ राहत व आराम में हैं (लेकिन ये वही लोग हैं जिन्होंने इस धोका के घर में उस घर को याद रखा इसकी उम्मीदों से उसकी उम्मीदों को मोक़ददम किया और अपने लिये तोशा जमा किया और अपने पहुंचने से पहले अपने जाने का सामान कर दिया) ऐ वह शख़्स जो कल को क़ब्र में ज़रूर जायगा तुझे इस दुनिया के साथ आख़िर किस चीज़ ने धोका में डाल रखा है तुझे उम्मीद है कि यह कमबख़्त दुनिया तेरे साथ रहेगी क्या तुझे यह उम्मीद है कि तू इस कोच के घर में हमेशा रहेगा तेरे यह वसी मैदान तेरे बाग़ों के पके हुए फल तेरे नरम नरम बिस्तर तेरे गर्मी सर्दी के जोड़े यह सब के सब एक दम रखे रह जायेंगे जब मलाकुल मौत आकर मोसल्लत हो जायगा कोई चीज़ इसको ना हरा सकेगी पसीनों पर पसीने आने लगेंगे प्यास की शिददत बढ़ जाएगी और जानकुनी की सख़्ती में करवटें बदलता रह जायगा अफ़सोस सद अफ़सोस ऐ वह शख़्स जो आज मरते वक्त अपने भाई की आँख बन्द कर रहा है अपने बेटे की आँख बन्द कर रहा है अपने बेटे की आँख बन्द कर रहा है अपने बाप की आँख

बन्द कर रहा है इन में से किसी को नहला रहा है किसी को कफ़न दे रहा है किसी के जनाज़े के साथ जा रहा है किसी को क़ब्र के गडढे में डाल रहा है कल को तुझे भी यह सब पेश आना है और भी इस क़िस्म की बातें फ़रमाई फिर दो शेर पढ़े जिनका तर्जुमा यह है।

"आदमी ऐसी चीज़ के साथ खुश होता है जो अनक़रीब फ़िना होने वाली है और लम्बी लम्बी आरज़ूओं और दुनिया की उम्मीदों में मशगूल रहता है। अरे बेवकूफ़ ख़्वाब की लज़्ज़तों से धोका में नहीं पड़ा करते तेरा दिन सारा ग़फ़लत में गुज़रता है और तेरी रात सोने में गुज़रती है और मौत तेरे ऊपर सवार है आज तू वह काम कर रहा है कि कल को इन पर रंज करेगा दुनिया में चौपाये इसी तरह ज़िन्दगी गुज़ारते हैं जिस तरह तू गुज़ार रहा है।" कहते हैं कि इस वाक़िया के बाद एक हफ़्ता भी ना गुज़रा था कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि का विसाल हो गया।

"असल आबादी"

एक घोड़ सवार ने जाते हुए एक शख़्स से पूछा भई आबादी यहाँ से कितनी दूर है उस शख़्स ने जवाब दिया आप अपनी दाई तरफ़ देखिये वह देखिये सामने आबादी नज़र आ रही है घोड़ सवार ने उधर देखा तो उसे एक वसी व अरीज़ क़ब्रिस्तान नज़र आया घोड़ सवार ने दिल में सोचा कि यह शख़्स या तो दीवाना है और या कोई मर्द कामिल फिर उसने इससे कहा कि भई मैंने आबादी का पूछा है और तुम क़ब्रिस्तान बता रहे हो यह क्या बात? तो वह बोला यह इसलिये कि मैंने दूसरे तमाम मुक़ामात के लोगों को यहाँ आते देखा है और यहाँ से किसी को जाते नहीं देखा और आबादी कहते ही इस मुक़ाम को है जहाँ दूर-दूर से लोग आएं और वहाँ से फिर वीराने को ना जायें तो मेरी नज़र में सही मानों में आबादी यही है (रौज़ुलफ़ाइक़)

इस हिकायत से मालूम हुआ कि हर एक को एक दिन मरना है और अपने शानदार मकान और शहर छोड़कर क़ब्र में जाना है जिसे हम आबादी कहते हैं उसे एक दिन आबादी का सामना होगा असल आबादी तो क़ब्रिस्तान में है जहाँ आहिस्ता आहिस्ता सब लोग जमा हो रहे हैं।

"क़ब्र की पहली रात"

अल्लाह के बन्दों-क़ब्र की पहली रात का मंजर बड़ा इबरत अंगेज़ है

यह रात नेकों के लिये बहुत अच्छी है मगर बुरों के लिये बड़ी वहशतनाक है मौत के बाद जब मुर्दा आलमे बर्ज़ख़ में पहुंच जाता है तो इस पर क़ब्र की पहली रात आ जाती है क्योंकि इस रात ने हर किसी पर एक ना एक दिन आकर ही रहना है क़ब्र की पहली रात हर नये आने वाले मुर्दा से कहती है कि तूने ज़िन्दगी भर बड़ी रातें देखी होंगी मगर मुझ जैसी रात तूने ना कभी देखी होगी ना आईन्दा देखेगा मुद्दतों भर मैं तेरे इन्तज़ार में रही आख़िर आज तू आ ही पहुंचा है आ देख मैं क्या हूँ।

अगर तू दुनिया से अपने साथ नेक आमाल लाया तो मैं तेरे लिये मज़दऐ बहार हूँ मताए लाज़वाल हूँ हयाते बे मिसाल हूँ तेरे ईमान का पुरकैफ़ कमाल हूँ अल्लाह से तेरी मोहब्बत का जमाल हूँ तेरे मुक़ददर का चमकता हुआ सितारा हूँ अदाए सर्मदी का राज़ो नेयाज़ हूँ मैं तो तेरे इश्क़ का तराना हूँ गरज़ेकि मैं वह रात हूँ जिसमें तेरे लिये राहत ही राहत है तेरी बख़्शिश का एक बहाना हूँ मैं हर तरह से तेरी ख़िदमतगार मेरे यहाँ तेरे लिये इज़्ज़त व रफ़अत है तेरे ग़मों का मदावा हूँ आज तेरे लिये कोई परेशानी नहीं तो यहाँ दोबारा उठने तक बड़े आराम से रह। क़ब्र की पहली रात बुरे लोगों से कहती है कि मैं तुम्हारे लिये ग़म कदह हूँ मैं ऐसी क़ैद हूँ जहाँ से कभी छुटकारा नहीं यहाँ हर तरफ तारीकी ही तारीकी है यहाँ तुम्हारे बुरे अमलों के बाअस तुम्हें सज़ा मिलेगी यहाँ की सज़ाऐं बड़ी शदीद हैं कि जिनका तसव्वुर अगर तुम दुनियावी ज़िन्दगी में करो तो खौफज़दा हो जाओगे काश-तू अल्लाह से डरा होता और आज के लिये कुछ नेक आमाल का सामान पैदा किया होता तो यहाँ तुम्हारे साथ मुजरिमों जैसा सलूक ना होता लिहाजा ग़ौर का मुक़ाम है कि क़ब्र की रात के लिये हमेशा तोशए आख़िरत तैयार करना चाहिये ताकि वहाँ ज़िल्लत से बच जायें।

क़ब्र की पहली रात के बारे में हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि क्या तुम को दो दिनों और दो रातों की ख़बर न दूँ एक दिन वह है जब बशारत देने वाला तुम्हारे पास आयेगा या तो अल्लाह तआला की रज़ामन्दी या उसकी नाराज़ी का पैग़ाम लेकर और दूसरा दिन वह है जबकि तुम अल्लाह के हुज़ूर खड़े होंगे और तुम्हारा नामाए आमाल तुम्हारे हाथ में दिया जाएगा। दायें हाथ में या बायें हाथ में एक रात वह है जब मय्यत अपनी पहली रात क़ब्र में गुज़ारेगी यह रात वह होगी कि उससे

पहले ऐसी रात कभी ना आई होगी और एक रात वह है कि जिसकी सुबह कयामत क़ायम होगी कि उसके बाद कोई रात ना होगी।

(बेहक़ी फी शुएेब उल ईमान)

क़ब्र की रात का इम्तेहान

क़ब्र में दबाने के बाद इंसान की पहली मंज़िल का इम्तेहान शुरू हो जाता है क़ब्र का यह इम्तेहान मुर्दे के पास फ़रिश्तों का आकर सवाल व जवाब करना है आलमे बरज़ख़ में जब कोई दाख़िल होता है तो उसकी रूह को क़ब्र में लौटा दिया जाता है क़ब्र में रूह का लौटाया जाना और मय्यत को बिठाकर फ़रिश्तों का सवाल व जवाब करना हर शख़्स के लिये यक्साँ है मगर जवाबात और अज्र में फ़र्क़ है जिसकी तफसील ज़ैल में है।

मुनकिर नकीर का हुलिया

मुर्दे को जब क़ब्र में रख दिया जाता है तो उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं दोनों के रंग स्याह होंगे दोनों की आँखे नीली होंगी उनमें से एक को मुनकिर और दूसरे को नकीर कहा जाता है अगर मय्यत से इस्लाम की अलामात ज़ाहिर हो रही होंगी तो वह फ़रिश्ता सवाल करेगा जिसका नाम मुनकिर होगा और कुफ़्र की अलामात ज़ाहिर हो रही होंगी तो सवाल करने वाले फ़रिश्ता का नाम नकीर होगा।

मुनकिर अनकर से बना है जिसका मतलब नकर वाला यानी अजनबी है इसी तरह नकीर नकर से बना है इसका मतलब भी अजनबी है यानी दोनों लफ़्ज़ों का एक ही मानी है कि वह अजनबी की तरह होगा। इनको कोई नहीं पहचानता होगा मुनकिर और नकीर का माना हुआ ना पहचाना हुआ क्योंकि मय्यत से सामने उनकी सूरते अजनबी की तरह होंगी इससे पहले मय्यत ने ऐसी सूरत कभी नहीं देखी होंगी क्योंकि इनको क़ब्र में आने के लिये स्याह रंग क़बीह सूरतें नीली आँखे एक जगह टकटकी बांधकर (दूसरों को डराने वाली) देखने वाली आँखें दी गई होंगी यह मंज़र यक़ीनन मय्यत के लिये अजीबो ग़रीब होगा इनके हुलिये के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का इरशाद ज़ैल में है।

तर्जुमा :- हज़रत अबू हुर्रह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब मय्यत को क़ब्र में दाखिल किया जाता है तो उसके पास स्याह रंग के नील गों आँखों वाले दो फ़रिश्ता आता है एक को मुनकिर और दूसरे को नकीर कहा

जाता है वह दोनों इस मय्यत से पूछते हैं इस (अज़ीम) शख़्स (रसूल अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) के बारे में क्या कहता था वह शख़्स वही बात कहता है जो दुनिया में कहता था कि वह अल्लाह तआला के बन्दे और रसूल हैं मैं गवाही देता हू कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और बेशक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम उसके (ख़ास) बन्दे और रसूल हैं। वह कहते हैं हमें मालूम था तू यही कहेगा फिर उसके क़ब्र को सत्तर सत्तर हाथ कुशादा और मोनव्वर किया जाता है फिर कहा जाता है (आराम से) सो जा वह कहता है मैं वापस जाकर घर वालों को बता आऊं वह कहते हैं नहीं दुल्हन की तरह सो जाओ जिसको घर वालों में से महबूब तरीन शख़्स ही उठाता है यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसे उसकी ख़्वाब गाह से उठायेगा और मुनाफ़िक़ हो तो कहता है मैं लोगों से कुछ सुना करता था और खुद भी कहता था मुझे मालूम नहीं फ़रिश्ते कहते हैं हमें मालूम था तू यही बात कहेगा फिर ज़मीन से कहा जाता है कि इस पर मिल जा पस वह इस पर इकटठी हो जाती है यहाँ तक कि उसकी पस्लियां एक दूसरी में दाखिल हो जाती हैं वह मुसलसल अज़ाब में मुब्तला रहता है यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसको उसकी ख़्वाब गाह से उठाए। (तिर्मिज़ी)

क़ब्र में फ़रिश्ते हैबतनाक और ख़ौफ़नाक शक्ल में आते हैं ताकि उनमें दहशत और हौलनाकी पाई जाय और उनको देख कर कुफ़्फ़ार हैरान हो जायें और उनसे डरें इस तरह वह जवाब देने में हैरान होंगे लेकिन मोमिनों की सिर्फ आज़माइश होगी अल्लाह तआला इनको साबित क़दम रखेगा वह किसी क़िस्म का ख़ौफ़ महसूस नहीं करेंगे इसकी वजह यह होगी कि मोमिन दुनिया में अज़ाबे क़ब्र और मुनकिर नकीर से डरता है तो इस वजह से क़ब्र में अल्लाह तआला उसे मुनकिर नकीर से अमन में रखकर दुनिया के ख़ौफ़ का बदला अता फ़रमायेगा।

शैख अब्दुल हक़ मोहद्दिस रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जब मय्यत को क़ब्र में रखा जाता है तो उसके पास दो फ़रिश्ते ऐसे आदमी की सूरत में आते हैं जिसका रंग स्याह और आँखें नीली होती हैं स्याह रंग से या तो हक़ीक़तन स्याह रंग ही मुराद है कि स्याह रंग में दूसरे रंगों की निस्बत दहशत व वहशत ज्यादा होती है या स्याह रंग से उनका बदशक्ल होना मुराद है और नीली आँखों से उनके तेज़ आँखों से देखना और नज़र को घुमाना मुराद है जिस तरह दुश्मन, दुश्मन को तेज़ आँखों से देखता

और अपनी निगाह घुमाता है कि उसकी स्याही छुप जाती है और सफ़ेदी नुमायां हो जाती है बाज़ कहते हैं कि अरब दुश्मन को नीली आँख से मौसूफ करते हैं कि रूमी लोग अरब के दुश्मन हैं और उनकी आँखें नीली होती हैं। (अशअतुल लमआत जि. 1)

फ़रिश्तों के बारे में एक रिवायत हज़रत अबूदर्दा रदियल्लाहु अन्हु से यों मरवी है कि एक शख़्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मुझे एक ऐसा इल्म सिखाइये कि जिससे आख़रत में अल्लाह तआला मुझे फ़ायदा अता फ़रमाये नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ज़रा यह तसव्वुर करो कि जब तुम्हारे लिये ज़मीन चार हाथ लम्बी और दो हाथ चौड़ी जगह होगी तो तेरे वह घर वाले और भाई जो तेरी जुदाई को नापसन्द करते थे यह करेंगे कि वह तुझे इसमें दाखिल करके ऊपर ईंट और मिटटी डाल देंगे फिर तेरे पास नीली आँखों और घुंघरियाले बालों वाले दो फ़रिश्ते आऐंगे जिनका नाम मुनकिर नकीर है। (फिर सवाल व जवाब का ज़िक्र है) तो अगर तूने ठीक जवाब दिया तो तुझे नजात हासिल होगी और महज़ अल्लाह की तरफ़ से अता करदह साबित क़दमी से हो सकती है और तूने कुछ ना कहा तो तू नाकाम हो जायगा। (बैहक़ी)

हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ इब्ने उमर बताओ तुम्हारा उस वक़्त क्या हाल होगा जब तुम्हारे लिये तीन हाथ और एक बालिश्त लम्बा एक हाथ एक बालिश्त चौड़ा गडढा खोदा जायगा फिर तुम्हारे पास मुनकिर नकीर स्याह शक्ल वाले अपने बालों को घसीटते हुए आएंगे उनकी आवाज़ें कड़कदार बिजली की मानिन्द होंगी और निगाहें ख़ैरह कर देने वाली बिजली की तरह वह ज़मीन को अपनी दांतों से खोदेंगे और तुझको बैठायेंगे और डरायेंगे तो इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम क्या मेरी उस वक़्त भी यही हालत होगी? आपने फ़रमाया हाँ! तो उन्होंने अर्ज़ की कि तब तो मैं बहुक्मे इलाही उनके लिये काफ़ी हो जाउंगा। (बैहक़ी)

"क़ब्र में मुनकिर नकीर के सवाल व जवाब"

मुनकिर नकीर जब सवाल करेंगे 'मनरब्बोकअ' (तेरा रब कौन है?) मोमिन जवाब देगा 'रब्बि अल्लाह' मेरा रब अल्लाह तआला है वह दूसरा सवाल करेंगे "मा दीनोका" तुम्हारा दीन क्या है वह जवाब देगा "दीनियल

इस्लाम" मेरा दीन इस्लाम है फिर वह सवाल करेंगे "मा हाज़ा अर्रजलुल्लज़ी बायसाफिकुम" यह शख़्स कौन है जो तुम में मबऊस हुआ है "होवा रसूलअल्लाह" वह रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम हैं।

जब फ़रिश्ते उससे पूछेंगे कि तुम्हें अल्लाह तआला, दीन इस्लाम, और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में कैसे पता चला तो वह कहेगा मैंने कुरआन पढ़ा उसकी फ़साहत व बलागत को देखा तो मुझे पता चल गया कि यह कलाम किसी इंसान का नहीं बल्कि यह कलाम तो मोजज़ह है जिसके मोक़ाबिल बड़े बड़े आलिम अपना कलाम पेश करने में आजिज़ हैं यह यक़ीनन अल्लाह का कलाम ही हो सकता है फिर जब मैंने इसके मानी में ग़ौर किया तो मेरे यक़ीन में और इज़ाफ़ा हुआ क्योंकि इसमें मोकारीम इख़्लाक़ (अच्छे अख़्लाक़) नेक आमाल ग़ैबी ख़बरें और पहली उम्मतों का ज़िक्र है जबकि मुझे यह भी मालूम था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी से ना पढ़ा और ना ही दूसरो की मजालिस में बैठकर ऐसे वाक़ियात सुने तो मुझे मालूम हो गया कि यह अल्लाह तआला का कलाम है तो मैं इस पर ईमान ले आया और मैंने इसकी तस्दीक़ की तो मुझे पता चल गया कि मेरा रब अल्लाह है क्योंकि रब्बे करीम ने अपनी शान खुद बयान फ़रमाई "फ़आलम अन्नहू ला इलाहा इल्लल्लाहो" यक़ीनन जान लो बेशक अल्लाह के बग़ैर कोई इबादत के लायक़ नहीं और फ़रमाया "ज़ालिकोमुल्लाहो रब्बोकुम ख़ालिको कुल्ले शईन" अल्लाह ही तुम्हारा रब है वही हर चीज़ को पैदा करने वाला है और अल्लाह तआला ने दीन के मोतआलिक़ फ़रमाया "इन्नल लज़ीना इन्दल्लाहिल इस्लाम" बेशक अल्लाह के यहाँ पसन्दीदा दीन इस्लाम ही है और इरशाद हुआ "वमईयबतागि ग़ैरल इस्लाम दीनन फलईन युक़बला मिन्हो" जिस शख़्स ने इस्लाम के सिवा और दीन को पसन्द किया वह इससे हरगिज़ क़बूल नहीं किया जायगा इसी तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मोतआलिक़ रब्बेक़ुद्दूस ने इरशाद फ़रमाया मोहम्मदुर रसूलुल्लाह मोहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं फिर इरशाद फ़रमाया "क़ुल या अईयो हन्नासो इन्नी रसूलुल्लाही इलैकुम जमीआ" ऐ महबूब! आप फ़रमा दीजिये ऐ लोगों बेशक मैं तुम तमाम की तरफ अल्लाह का रसूल बनकर आया हूँ। (मिशक़ात)

इसके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की अहादीस नीचे दी गई हैं।

हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इंसान जब क़ब्र में दफ़न कर दिया जाता है और लोग मुड़ने लगते हैं तो वह जूतों की आहट बखूबी सुनता है दो फ़रिश्ते उसके पास आते हैं और उससे बैठा कर उससे कहते हैं इस शख़्स मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है। वह कहता है मैं गवाह हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मआबूद नहीं और आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं उसे कहा जाता है दोज़ख़ में अपनी जगह देख ले अल्लाह तआला ने तुझे इसके बदले में जन्नत अता फ़रमादी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं वह यह दोनों ठिकाने देखता है और काफ़िर या मुनाफ़िक़ कहता है मुझे मालूम नहीं मैं तो वही कहता हूँ जो लोग कहते थे इसे कहा जायगा ना तो तूने जाना और समझा फिर लोहे के हथोड़े उसके कानों के दरमियान मारे जाते हैं और वह चीख़ता है इस चीख़ को इंसानों और जिनों के अलावा आस पास की तमाम चीज़ें सुनती हैं। (बुख़ारी)

हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु से मरफ़ूअन रिवायत है कि मुनकिर नकीर मय्यत की क़ब्र में दाख़िल होकर उसको बैठाते हैं तो अगर वह मोमिन होता है तो उससे दरयाफ़्त करते हैं "मन रब्बोका"? तो वह कहता है अल्लाह तआला फिर कहते हैं "मन नबीयोका" वह कहता है मोहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम फिर पूछते हैं "मन ईमामोका" तेरा ईमान कौन है वह कहता है कुरआन - फिर वह उसकी क़ब्र को कुशादह कर देते हैं। फिर यही सवाल काफ़िर से किये जाते हैं लेकिन वह हर सवाल के जवाब में "ला अदरी" कहता है। तो इसको खूब तौर पर जदोकूब किया जाता है कि जिससे आग के शोले निकलें और तमाम क़ब्र को रौशनी से भर देते हैं फिर उसकी क़ब्र को इतना तंग कर दिया जाता है कि उसकी पस्लियां टूट जाती हैं। (वीलमी)

हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि नबी अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब इंसान अपनी क़ब्र में रखा जाता है और उसके साथी वापस लैटते हैं तो वह उनकी जूतीयों की आवाज़ सुनता है बाद अज़आं उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं उसे बेठाते हैं और उससे दरयाफ़्त करते है कि तू इस अज़ीम हस्ती के बारे में क्या अक़ीदा रखता था जो शख़्स मुसलमान होता है वह कहता है इस बात की गवाही देता हूँ कि हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम

अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं इससे कहा जाता है कि तुम अपनी जगह जहन्नम में देखो अल्लाह तआला ने तुझे जन्नत में इससे बेहतर ठिकाना दिया है। (निसाई)

हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब मोमिन पर वक़्त निज़ाअ होता है तो उसके पास फ़रिश्ते आते हैं और उसको सलाम करके जन्नत की ख़ुशख़बरी देते हैं और जब मर जाता है तो उसके जनाज़े के साथ चलते हैं और लोगों के हमराह उसकी नमाज़ जनाज़ा अदा करते हैं और जब उसे क़ब्र में दाख़िल कर दिया जाता है तो उससे दरयाफ़्त किया जाता है कि तेरा रब कौन है वह कहता है अल्लाह! फिर पूछते हैं कि तेरी गवाही क्या है वह कहता है "अशहदो अन लाईलाहा इल्लल्लाहो व अशहदा अन्ना मोहम्मर्रसूल्लाह और यही मक़सद है इस आयत करीमा का "योसब्बेतल्लाहल्लज़ीना आमनू बिलक़ौलिस्साबित" फिर हद्दे निगाह तक उसकी क़ब्र को कुशादा कर दिया जाता है। लेकिन काफ़िर को किसी सवाल का जवाब ना आयेगा यही मतलब है अल्लाह तआला के इस फ़रमान का कि "योहिल्लाहुज़्ज़ालिमीन" (बैहक़ी)

हज़रत सईद बिन मोसय्यब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आईशा सिद्दिक़ा रदियल्लाहु अन्हा ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम जब से आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने मुनकिर नकीर की आवाज़ और क़ब्र के दबाने का ज़िक्र किया है मुझे किसी चीज़ में मज़ा नहीं आता। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ आईशा रदियल्लाहु अन्हा, मुनकिर नकीर की आवाज़ मोमिनीन के कानों में ऐसी है जैसे आँखों में ईष्मद का सुर्मा और क़ब्र का दबाना उनके लिये ऐसा है जैसा माँ अपने इस बच्चे का सर दबाती है जिसके सर में दर्द हो लेकिन वह लोग जो अल्लाह के बारे में शक करते हैं उनके लिये हिलाकत हो। क़ब्र उनको इस तरह कुचलेगी जिस तरह पत्थर अण्डे कुचल देती है। (बैहक़ी)

हज़रत बराअ बिन आज़िब रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मय्यत के पास दो फ़रिश्ते आते हैं और मुर्दे को बैठाते हैं और उससे सवाल करते हैं वह शख़्स कौन है जिसको तुम्हारी तरफ़ मबऊस किया गया था। मुर्दा कहता है वह अल्लाह के रसूल हैं फ़रिश्ते कहते हैं

तुम्हें किस तरह मालूम हुआ तो वह कहता है कि मैंने अल्लाह की किताब पढ़ी इस पर ईमान लाया और उसकी तस्दीक़ की और उसी को क़ुरआन फ़रमाया "अल्लाह तआला मुसलमानों को क़ौल महकम पर साबित रखता है। इस वक़्त एक मनादी आसमान से निंदा करता है कि मेरे बन्दे ने सच कहा है इसके लिये जन्नत का बिस्तर बिछाओ और जन्नती लिबास पहनाओ जन्नत की तरफ़ के दरवाज़े खोल दो जब दरवाज़ों को खोला जाता है तो उसके पास जन्नती हवा और खुशबू आती है और ताहद निगाह उसकी क़ब्र में वुसअत कर दी जाती है लेकिन काफ़िर की मौत का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि उसकी रूह जिस्म में वापिस की जाती है और उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं उसको बैठा कर दरयाफ़्त करते हैं तेरा रब कौन है? तो वह कहता है अफ़सोस, अफ़सोस मैं नहीं जानता दूसरा सवाल करते हैं तेरा दीन क्या है तो वह कहता है अफ़सोस मैं नहीं जानता तीसरा सवाल करता है वह शख़्सीयत कैसी है जिसको तुम्हारी जानिब मबउष किया गया तो वही जवाब देता है अफ़सोस मैं नहीं जानता उस वक़्त आसमान से एक मनादी कहता है यह झूठा है इसको आग का लिबास पहनाओ और आग का बिस्तर दो और दोज़ख़ की जानिब के दरवाज़े खोल दो जिससे लू और गर्मी आती है हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस पर क़ब्र तंग कर दी जाती है यहाँ तक कि उसकी पस्लियाँ आपस में मिल जाती हैं फिर उस पर एक नाबीना और बहरा फ़रिश्ता मोकर्रर कर दिया जाता है जिसके पास लोहे का गुर्ज़ होता है उस गुर्ज़ को पहाड़ पर मारा जाय तो रेज़ह रेज़ह हो जाय। वह फ़रिश्ता इस गुर्ज़ से इस मुर्दा को मारता है तो इसकी आवाज़ को जिन व ईंस के अलावा मशरिक़ व मग़रिब में सब सुनते हैं उसकी ज़र्ब से वह मिट्टी हो जाता है फिर उसमें रूह लौटाई जाती है।

(अहमद अबूदाऊद)

हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने एक शख़्स से कहा कि ऐ भाई क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मौत तुम्हारे सामने भी कब आ जाये ख़्वाह सुबह को या शाम को रात को या दिन को फिर क़ब्र और वह निकलने की जगह है और मुनकिर नकीर और फिर क़यामत जिसमें बातिल परस्तों को जमा किया जायगा। (बैहक़ी)

हज़रत उमर बिन आस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने वसीयत की कि जब तुम मुझको दफ़न करो तो मुझ पर मिट्टी डाल कर

इतनी देर ठहरना कि जितनी देर में ऊँट ज़बह करके उसका गोश्त तक़सीम कर दिया जाता है ताकि मुझे उन्स हासिल हो और मैं मुनकिर नकीर को जबान दे सकूँ। (मुस्लिम)

हज़रत अबू सईद ख़िदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक जनाज़ा में मैं हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के साथ था तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह उम्मत अपनी क़ब्रों में आज़माईश में डाली जायगी। जब इंसान को दफ़न करने वाले इसको दफ़न करके रुख़्सत हो जाते हैं तो मौत का फ़रिश्ता अपने हाथ में एक हथौड़ा लेकर आता है और उसको बैठा दिया जाता है और पूछा जाता है तुम इस शख़्स (मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में क्या कहते हो तो अगर वह मोमिन होगा तो कहेगा "अशहदो अन लाईलाहा इल्लला हो व अशहदो अन्ना मोहम्मदन अब्दहू व रसूलहू" फ़रिश्ता यह सुनकर कहेगा तूने यह सच कहा फिर उसके सामने एक दरवाज़ा जहन्नम का खोला जायगा और इससे कहा जायगा कि अगर तू ईमान ना लाता तो तेरा ठिकाना यह था लेकिन अब इसके बजाय तेरा ठिकाना जन्नत में कर दिया गया है वह जन्नत का दरवाजा देख कर उसकी तरफ़ जायगा ताकि दाख़िल हो जाय तो उस से कहा जायगा कि अभी यहीं ठहरो फिर उसकी क़ब्र को खोल दिया जायगा। लेकिन अगर वह शख़्स काफ़िर या मोनाफ़िक़ होगा तो उससे पूछा जायगा कि तू इस शख़्स के बारे में क्या कहता है वह जवाब देगा मैं तो कुछ नहीं जानता लोग जो कहते थे मैं भी वही कहता था फिर उससे कहा जायगा कि तूने कुछ भी ना जाना और तुझे हिदायत ना मिली फिर उसके लिये जन्नत की तरफ़ एक दरवाज़ा खोल दिया जायगा और कहा जायगा कि अगर तू ईमान लाता तो तेरा ठिकाना यह होता लेकिन अब चूंकि तू हालते कुफ़्र में रहा इसलिय बजाये जन्नत के तेरा ठिकाना जहन्नम है फिर एक दरवाज़ा जहन्नम की तरफ़ खोल दिया जायगा और फ़रिश्ता एक गुर्ज़ इस ज़ोर से उसे मारेगा कि इंसानों और जिन्नात के सिवा हर चीज़ उसकी आवाज़ सुनती है जब हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तो किसी ने अर्ज़ की कि या रसूलअल्लाह! जब फ़रिश्ता वह गुर्ज़ लेकर खड़ा होगा तो कौन होगा कि जिस पर हैबत तारी ना हो नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो लोग ईमान लाये अल्लाह उनको साबित क़दम रखेगा क़ौल साबित की वजह से। (बैहक़ी, अहमद)

हज़रत सुफ़ियान सूरी रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि जब मुर्दे से यह सवाल होता है कि "मनरब्बोका"? तो शैतान एक मख़्सूस शक्ल में आकर अपनी तरफ इशारा करता है कि कह दे कि मैं तेरा रब हूँ। हकी तिर्मिज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि ने कहा कि शैतान के क़ब्र में आने का सबूत इससे भी मिलता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने दिगर अहादीस में फ़रमाया कि "अल्लाहुम्माअजिरह मिन शैतान" इब्ने शाहीन ने "अस्सुन्नाह" में अपनी सनद से रिवायत किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपने बच्चों को हुज्जत सिखाओ तो यह हुक्म इतना मसरूफ़ हुआ कि अंसार में से जब किसी पर मौत आती तो वह उसे मुनकिर नकीर के जवाबात बताते थे और जब बच्चा कुछ समझदार होता था तो उसको भी सिखाते थे।

(नवादिरूलउसूल)

हज़रत यज़ीद बिन तरीफ़ बिजली से रिवायत है कि वह कहते हैं कि जब मेरे भाई का इन्तक़ाल हुआ तो मैंने अपने कान को उनकी क़ब्र से लगाया तो मैंने मुनकिर नकीर के सवालात की आवाज़ सुनी और अपने भाई के जवाबात भी सुने।

हज़रत उस्मान रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक जनाज़े के हमराह एक क़ब्रिस्तान पहुंचे तो एक मुर्दा दफ़न किया जा रहा था आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपने भाई के लिये बख़्शिश की दुआ करो क्यों कि इससे अब सवाल किया जायगा। (अबूदाऊद, बेहक़ी)

हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने एक सहाबी की क़ब्र पर खड़े होकर इरशाद फ़रमाया कि "इन्नालिल्लाही व इन्नाएलैही राजेऊन" ऐ इलाही यह तेरे पास आया है इसे अच्छी तरह रखो और क़ब्र को इसके दोनों पहलूओं से हटा दीजिये और इसकी रूह के लिये आसमान के दरवाज़े खोल दीजिये और इसको अच्छी तरह क़बूल फ़रमाईए। और सवाल के वक़्त इसके बोलने की ताक़त को षबात अता फ़रमा दीजिये।

(अबू नईम)

हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अपनी ज़बानों पर इन कलमात का विर्द रखो "लाईलाहा इल्लल्लाहो मोहम्मदुर रसूलुल्लाहो रब्बो ना

अलइस्लामोदीनो ना व मोहम्मदो नबियोना" क्योंकि यह सवालात क़ब्र में किये जायेंगे। (नीलामी)

तिबरानी बशीर बिन कमाल से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र एक क़ब्र पर हुआ तो आप ने फ़रमाया "उफ़, उफ़, उफ़" मैं अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हो जायें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हमराह मेरे कोई नहीं तो आप किसको "उफ़, उफ़ कह रहे हैं? आपने फ़रमाया कि मैं इस क़ब्र वाले से कह रहा था क्योंकि जब इससे मेरे बारे में सवाल किया गया तो यह शक करने लगा। (तिबरानी)

क़ब्र में सालेह आमाल का आना :-

सालेह आमाल क़ब्र में इंसान की हिफ़ाज़त करते हैं ख़ासकर नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, सदक़ा, ख़ैरात, अमर बिलमारूफ़ व नहीअनिल मुनकिर और लोगों से अच्छा सलूक वह आमाल हैं जो मय्यत के पास अज़ाब को आने नहीं देते और क़ब्र में राहत का बाअस बनते हैं।

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि इंसान पर उसकी क़ब्र में अज़ाब आता है। जब सर की जानिब से आता है तो कुरआन दूर कर देता है और हाथों की जानिब से सदक़ा और पैरों की जानिब से उसका मसाजिद की तरफ़ चल कर आना और सब्र करना अलग कोने में होता है वह कहता है कि मैं इसलिये चुपके खड़ा हूँ कि अगर कुछ कभी देखी तो पूरी कर दूंगा। (तिबरानी)

हज़रत सोबना रदियल्लाहु अन्हु से रिवायात है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब मोमिन मर जाता है तो नमाज़ उसके सर की तरफ और रोज़ा सीना की तरफ होता है।

(अबू नईम)

हज़रत जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब मोमिन को उसकी क़ब्र में दाख़िल किया जाता है तो उसको सूरज की ऐसी रौशनी नज़र आयगी जैसी कि ग़ुरेबे आफ़ताब के वक़्त होती है तो वह मुर्दा आँखें मलता हुआ कहेगा कि मुझको छोड़ दो मैं नमाज़ अदा कर लूं। (इब्ने माजा)

यज़ीद रक़ाशी से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया कि क़ब्र में मय्यत के पास सबसे पहले उसके आमाल आते हैं फिर अल्लाह तआला उसको

बोलने की ताक़त अता फ़रमाता है तो वह कहते हैं कि ऐ क़ब्र के गड्ढे में तन्हा ठहरने वाले बन्दे आज तेरे रिश्तादार और दोस्त ख़तम हो गये अब हमारे बग़ैर तेरा कोई ख़बरगीर नहीं है। (इब्ने अबी अददुनिया)

अत्तार बिन यसार से रिवायत है कि जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है तो सबसे पहले उसका अमल आकर उसकी बायीं रान की तरफ़ आता है और कहता है कि मैं तेरा अमल हूँ मुर्दा पूछता है कि मेरे अज़ीज़ो अक़ारिब कहाँ हैं? और मेरी नेमतें कहाँ हैं? तो अमल कहता है कि यह सब दुनिया में रह गये और मेरे सिवा तेरी क़ब्र में कोई नहीं आया। अहमद बिन हवारी ने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन फ़ज़्ल ने ब्यान किया उन्होंने अबूलमलीह से रिवायत किया कि जब मुर्दा क़ब्र में दाख़िल होता है तो वह तमाम चीज़ें उसको डराने के लिये आ जाती हैं जिनसे वह दुनिया में डरता था और अल्लाह से ना डरता था। (इब्ने अबी अददुनिया)

हज़रत अबू हौरैरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब मय्यत को उसकी क़ब्र में रख दिया जाता है तो उसके आमाल सालेह उसका घेराव कर लेते हैं अब अगर गुनाह उसकी सर की तरफ से आता है तो क़राअत कुरआन उसे बचाती है और अगर पैरों की तरफ़ से आता है तो उसका क़याम बचाता है अगर हाथ की तरफ से आता है तो हाथ कहता है कि बखुदा यह हमें सदक़ा के लिये खोलता था और दुआ के लिये, तुझको कोई राह नहीं। अगर मुँह की तरफ़ से आता है तो उसका ज़िक्र करना और रोज़ा रखना आगे आता है इसी तरह नमाज़ और सब्र एक तरफ़ खड़ा रहता है कि कोई कमी रह जाए तो पूरी कर देता है ग़रज़कि इसके आमाल सालेहा इससे अज़ाब को इस तरह से दूर कर देते हैं कि जिस तरह कोई शख़्स अपने अहलो अयाल से मुसीबत दूर करता है इसके बाद उससे कहा जायगा कि खुदा तुझको बरकत दे सो जा क्योंकि तेरे साथी बहुत अच्छे हैं। (इब्ने अबीअददुनिया)

हज़रत अबादह बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब तुम रात को क़ुरआन पढ़ो तो बुलन्द आवाज़ से पढ़ो क्योंकि इससे शयातीन और सरकश जिन्न भाग जाते हैं और हवा में रहने वाले फ़रिश्ते नीज़ घर के रहने वाले सुनते हैं नीज़ जब कोई क़ुरआन नमाज़ में पढ़ता है तो लोग उसको देख कर नमाज़ पढ़ते हैं और घर वाले भी पढ़ते हैं जब यह रात गुज़र जाती है तो यह रात अगली रात को वसीयत कर देती है कि इस इबादत गुज़ार बन्दे को इसी तरह रात को जगा देना और इसके

लिये तू आसान हो जाना फिर जब मौत का वक़्त आता है तो क़ुरआन उसके सर के पास आकर ठहर जाता है जब लोग उसे ग़ुस्ल देकर फ़ारिग़ होते हैं तो क़ुरआन उसके सीने और कफ़न में दाख़िल हो जाता है और जब क़ब्र में उसके पास मुनकिर नकीर आते हैं तो कुरआन बन्दे और उसके दरम्यान हाइल हो जाता है तो वह कहते हैं तू दरम्यान से हट जा हम इससे कुछ पूछना चाहते हैं तो क़ुरआन कहता है बख़ुदा मैं इस शख़्स का पीछा इस वक़्त तक नहीं छोड़ता जब तक कि यह जन्नत में नहीं चला जाता तो अगर इसके बारे में तुमको कुछ हुक्म दिया गया है तो तुम इसे पूरा करो फिर क़ुरआन मुर्दे की तरफ देखकर कहता है कि तूने पहचाना है या नहीं पहचाना वह कहेगा कि नहीं कुरआन कहेगा कि मैं कुरआन हूँ जो तुझको रात भर बेदार रखता था और दिन में प्यासा रखता नफ़सानी ख़्वाहिशात से मना करता ख़्वाह वह आँख की हों या कान की तो अब तू मुझे सबसे बेहतर दोस्त और सच्चा भाई पायगा तो अब बशारत सुन की तुझ से मुनकिर नकीर का सवाल ना होगा फिर मुनकिर नकीर इसके पास से उठ जाते हैं और क़ुरआन बारगाह खुदावन्दी में हाज़िर होता है और इस मुर्दे के लिये बिछौना और चादर तलब करके लाता है जन्नत के क़न्दील और यास्मीन के फूल एक हज़ार मोक़र्रिन फ़रिश्ते उठा कर लाते हैं लेकिन क़ुरआन इनसे पहले क़ब्र में पहुंच जाता है और कहता है कि क्या तू मेरे बाद ख़ौफ़ ज़दा तो नहीं हुआ? मैं तो सिर्फ़ इसलिये बारगाह खुदावन्दी में पहुंचा था कि इससे बिस्तर और चादर और चिराग़ की सिफ़ारिश करूं अब यह तमाम चीज़ें लेकर हाज़िर हुआ हू फिर फ़रिश्ते आकर इसका बिस्तर करते हैं चादर क़दमों के नीचे रखते हैं और यासमीन के फूल सीने के पास वह शख़्स इनको रोज़े महशर तक सूंघता रहेगा फिर वह अपने घर वालों के पास हर रोज़ एक या दो मर्तबा आता है और उनके लिये सर बुलन्दी और भलाई की दुआ करता है अगर उसकी औलाद में से कोई क़ुरआन हिफ़्ज़ करता है तो वह इससे खुश होता है और अगर कोई बुरा हो जाता है तो वह इस पर अफ़सोस करता और रोता है और यह तर्ज़ अमल सूर फूंके जाने तक होगा।

(इब्ने अबी अददुनिया)

बज़ार ने मआज़ बिन जबल से रिवायत की है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस घर में क़ुरआन पढ़ा जाता है उस पर नूर का एक ख़ीमा होता है इस ख़ेमे के नूर को देखकर

फ़रिश्ते राहें मालूम करते हैं जैसे समुंद्र की तारीकियों मे समुंद्री मोसाफिर और चटियल मैदानों के अंधेरों में ख़ुश्की के मुसाफिर सितारों को देखकर रास्ता पाते हैं लेकिन जब क़ुरआन पढ़ने वाला मर जाता है तो वह नूर ग़ायब हो जाता है और फ़रिश्ते उसको नहीं देखते तब हर आसमान के फ़रिश्ते उसके लिये बख़्शिश की दुआ करते हैं और यह सिलसिला क़यामत तक जारी रहेगा और जब भी कोई मुसलमान क़ुरआन पढ़ लेता है और फिर किसी रात में खड़े होकर नमाज़ में इसकी तिलावत करता है तो वह रात आने वाली रात को वसीयत कर देती है कि इसको वक़्त मोकर्रह पर जगा देना और इसके लिये आसान हो जाना जब वह मर जाता है तो लोग उसके कफ़न की तैयारी में लग जात हैं लेकिन क़ुरआन अच्छी शक्ल में इसके सर के पास आकर खड़ा हो जाता है फिर जब उसे कफ़न दिया जाता है तो क़ुरआन सीने के पास आ जाता है फिर जब उसे क़ब्र में रखकर उस पर मिटटी डाल दी जाती है तो उसके पास मुनकिर नकीर आते हैं और उसको बैठाते हैं मगर क़ुरआन मुर्दे और उनके बीच में आ जाता है। वह दोनों कहते हैं कि एक तरफ हट जा लेकिन क़ुरआन कहता है कि रब्बे काबा की क़सम एसा हरगिज़ ना होगा कि यह मेरा दोस्त और ख़लील है मैं इसे बेमदद ना छोड़ूंगा, हत्ता कि वह जन्नत में दाख़िल हो फिर क़ुरआन साहिबे क़ुरआन की तरफ देखता है और कहता है कि मैं वही क़ुरआन हूँ जिसको तू बा-आवाज़ बुलन्द पढ़ता था और कभी आहिस्ता पढ़ता था और मुझसे मोहब्बत करता था तो अब मैं तुझसे मोहब्बत करता हूँ और जिससे मैं मोहब्बत करता हूँ अल्लाह तआला भी मोहब्बत करता है। मुनकिर नकीर के सवाल के बाद तुझ पर किसी क़िस्म का ना ग़म होगा ना ख़ौफ़ होगा मुनकिर नकीर सवाल करने के बाद वापिस चले जाते हैं अब क़ुरआन पढ़ने वाले से क़ुरआन कहता है मैं तेरे लिये नर्म और आरम दह बिस्तर बिछाउंगा और हसीनों जमील चादर दूंगा। और यह इसलिये है कि तू रात भर मेरे लिये जागता और मेरे लिये दिन भर थका फिर क़ुरआन पलक झपकने में आसमान की तरफ रवाना होता और ख़ुदा से यह तमाम चीज़ें मांगता है और अल्लाह तआला इसको यह सब अता फ़रमा देता है चुनांचे छठे आसमान के एक हज़ार मोक़र्रिब फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं और क़ुरआन आकर उस शख़्स से दरियाफ़्त करता है कि क्या तुझे इस अरसह कोई तकलीफ तो नहीं पहुंची फिर फ़रिश्ते कहते हैं उठ जाओ ताकि हम तुम्हारे लिये बिस्तर कर दें और इसकी क़ब्र को चार सौ साल की मोसाफत तक कुशादह कर दिया जाता

है जिसका अस्तर सब्ज़ रेशम का है और इसमें मुशक भरी हुई है और सर और पैरों के पास सन्दस और अस्तबरक़ के तकिये रख दिये जाते हैं और जन्नत के नूर के दो चिराग़ उसके सर और पाँव की तरफ जलाये जाते हैं जो क़यामत तक रौशन होंगे फिर उसे दायीं पहलू पर क़िब्ला रू फ़रिश्ते लेटा देते हैं फिर जन्नत की यासमीन की फूल इस पर चढ़ा दिये जाते हैं अब वह और क़ुरआन क़यामत तक साथ रहेंगे। क़ुरआन दिन रात उसकी ख़बर इसके घर वालों को देता है और क़ुरआन उसके साथ इस तरह रहता है जिस तरह मेहरबान वालिद अपने बच्चे से रहता है। अब अगर इसकी औलाद में से कोई क़ुरआन पढ़ लेता है तो क़ुरआन उसको खुशख़बरी देता है और अगर उसकी औलाद में से कोई बुरा होता है तो उसके लिये इस्लाह की दुआ करता है। (बज़ार)

सूरतों की तिलावत बाअसे नजात है :-

हज़रत इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सूरह मुल्क माने है यानी अज़ाब इलाही से महफ़ूज़ रखती है जब अज़ाबे क़ब्र सर की जानिब से आता है तो उसे रोक दिया जाता है और कहा जाता है कि इसके पास ना आ क्योंकि इसने सूरह मुल्क याद की है जब अज़ाब पाँव की तरफ से आता है तो कहती है ऐ अज़ाब लौट जा क्योंकि यह मुझको इन पाँव पर खड़े होकर पढ़ता था। (बैहक़ी)

हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने एक शख़्स से कहा क्या मैं तुमको एक हदीस का तोहफ़ा दूं जिससे तुम खुश हो जाओ? उसने कहा कि क्यों नहीं आपने फ़रमाया सूरह मुल्क खुद भी पढ़ो और अपने बीवी बच्चों और घर में रहने वाले बच्चों नीज़ पड़ोसियों को भी सिखाओ क्योंकि यह नजात दिलाने वाली है और रब से मुख़ास्मह करके नजात दिलायगी। (मस्नद इमाम अब्द)

ख़ालिद बिन मआदान से रिवायत है कि अलिफ़ लाम मीम तन्ज़ील क़ब्र में क़ब्र वाले की तरफ़ से झगड़ा करेगी कि ऐ अल्लाह अगर मैं तेरी किताब से हूँ तो इसके लिये मेरी शफ़ाअत क़बूल फ़रमा और अगर मैं तेरी किताब से नहीं तो मुझे अपनी किताब से मिटा दे और वह परिन्दह की तरह अपनी परों से उसे ढांप लेगी और सूरह मुल्क के बारे में भी यही रिवायत है और ख़ालिद इनको पढ़े बग़ैर ना सोते थे। (दारमी)

तिर्मिज़ी ने हज़रत जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि नबी

करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम अलिफ़ लाम मीम तन्ज़ील और सूरह मुल्क पढ़े बग़ैर ना सोते थे।

हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक शख़्स मर गया और उसे सूरह तबारक के अलावह कुछ कुरआन याद ना था अब फ़रिश्ता अज़ाब ने कहा कि चूंकि तू मौजूद है इसलिये मैं वापिस जाता हूँ लेकिन मैं ना तो तेरे लिये और ना अपने लिये और ना उस शख़्स के लिये कुछ नफ़ा और नुक़सान का मालिक हूँ अगर तू इसकी नजात चाहती है तो बारगाह खुदावंदी में जा और इसकी शफ़ाअत कर तो सूरत बारगाह यज़दी में हाज़िर होती है और अर्ज़ करती है ऐ मेरे रब! इस शख़्स ने मुझ ही को तेरी किताब में से मुन्तख़िब कर लिया था तो मुझसे सीखा और पढ़ा तो क्या तू इसको जहन्नम रसीद करना चाहता है। अगर तू इसके साथ ऐसा करने वाला है तो मुझे अपनी किताब से मिटा दे। तो खुदा फ़रमायगा कि तू शायद नाराज़ हो गया क़ुरआन कहेगा कि मुझे नाराज़ होने का हक़ है। खुदा फ़रमाएगा जा मैंने इसके हक़ में तेरी शफ़ाअत क़बूल की चुनांचे वह फ़रिश्ता को क़ब्र मे आकर यह इत्तला देता है और फ़रिश्ता बग़ैर अज़ाब दिये वापिस चला जाता है। वह सूरत आकर इस शख़्स के मुँह पर अपना मुँह रखती है और कहती है कि ऐ मुँह तुझे खुशख़बरी हो क्योंकि तू मुझे बहुत पढ़ता था और सीने को खुशख़बरी हो यह मुझे याद रखता था और खुशख़बरी उन क़दमों को कि मुझे खड़े होकर पढ़ते थे और वह इसको क़ब्र में मानूस करने के लिये रहती है जब हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया तो हर छोटे बड़े आज़ाद और ग़ुलाम सब ही ने इसे याद कर लिया और हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इस सूरत का नाम मुनज्जियह रखा। (इब्ने असाकर)

यमन के चन्द सालेह लोगों से मरवी है कि एक मुर्दा को वह दफ़न करके वापिस होने लगे तो उन्होंने क़ब्र में मारने और कूटने की आवाज़ सुनी फिर क़ब्र से एक काला कुत्ता निकला शैख़ ने कहा तू बरबाद हो जाय तू कौन है वह कहने लगा मैं मुर्दा का अमल हूँ शैख़ ने कहा क्या तेरी पिटाई हो रही थी या इस मुर्दे की उसने कहा सूरह यासीन और दूसरी सूरतें इसके पास थीं वह मेरे और इसके दरम्यान हाइल हो गई और इस वजह से मुझे भागना पड़ा। (रियाद्दुर्रियाहीन)

हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम

सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिब्रील ने मुझे ख़बर दी कि कलमा "ला इलाहा इल्लल्लाह" मुसलमान के लिये मौत के वक़्त क़ब्र में और क़ब्र से निकलने के वक़्त नजात का सबब है। (दिबाज)

हज़रत इब्न उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कलमा शरीफ़ के विर्द करने वाले लोगों पर ना मौत के वक़्त वहशत होगी ना क़ब्र में न हश्र में। (तिबरानी)

इब्ने मन्दह ने अपनी सनद से बयान किया कि अबू हम्माद जो एक मुत्तक़ी गोर कुन थे उन्होंने बताया कि जुमा के रोज़ दोपहर को मैं क़ब्रिस्तान में गया तो जिस क़ब्र से गुज़रा क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ सुनी। अबुल हसन बिनबरा ने किताब अररौजा में अपनी सनद से रिवायत किया कि इब्राहीम गोरकुन ने मुझे इत्तला दी कि मुझे क़ब्र खोदते वक़्त एक ईंट मिली जब मैंने इसे सूंघा तो उसमें मुशक की खुशबू आ रही थी मैंने क़ब्र के अन्दर देखा तो एक बूढ़ा बैठा हुआ क़ुरआन पढ़ रहा था। (शरह अस्सदूर)

इब्न जरीर ने तहज़ीबुल आसार में और अबू नईम ने इब्राहीम बिन सुमह मोहलबी से रिवायत किया वह कहते हैं कि मुझे सुबह के वक़्त क़िला के क़रीब से गुज़रने वालों ने बताया कि जब मैं साबित बनानी रहमतुल्लाहि अलैहि की क़ब्र के पास से गुज़रते हैं तो क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ आती है। (शरह अस्सदूर)

इब्न रजब ने अपनी सनद से बयान किया है कि अबुल हसन सामरी जो एक मुत्तक़ी आदमी थे और सामरह के खतीब थे उन्होंने सामरह के क़ब्रिस्तान में एक क़ब्र खोदते हुए कहा कि यहाँ से मुसलसल सूरह तबारक पढ़ने की आवाज़ सुनते थे। (शरहअस्सदूर)

इब्न मन्दाह ने अबुनफ़र निशापूरी से रिवायत किया है कि यह एक मुत्तक़ी गोरकुन थे मैंने एक क़ब्र खोदी लेकिन इसमें दूसरी क़ब्र की तरफ़ से रास्ता निकल आया तो मैंने देखा कि एक हसीन व जमील, उमदा कपड़े और बहतरीन खुशबू वाला जवान इसमें पालती मारे बैठा है और क़ुरआन पढ़ रहा है। नौजवान ने मेरी तरफ़ देखकर कहा कि क्या क़यामत बरपा हो गई? मैंने कहा कि नहीं तो उसने कहा कि जहाँ से मिटटी हटाई थी वहीं रख दो तो मैंने मिटटी वहीं रख दी। (शरह अस्सदूर)

हाफ़िज़ अबू बक्र ख़तीब ने अपनी सनद से रिवायत किया कि ईसा बिन मोहम्मद ने कहा कि मैंने एक रोज़ अबू बक्र बिन मोजाहिद को ख़्वाब में देखा कि वह पढ़ रहे हैं मैंने कहा कि आप तो मुर्दा हैं कैसे पढ़ रहे हैं? तो उन्होंने कहा कि मैं हर नमाज़ के बाद और ख़तम क़ुरआन के बाद दुआ करता था कि इलाही, तू मुझे क़ब्र में तिलावते क़ुरआन की तौफ़ीक़ अता फ़रमाना इसलिये मैं पढ़ता हूँ। (शाहअस्सदूर)

इब्न मन्दह, अबू अहमद और हाकिम ने कना में बसनद ज़ईफ़ रिवायत की तलहा बिन ऊबेदुल्लाह ने कि मेरा कुछ माल जंगल में था चुनांचे मैं वहाँ गया इत्ताफ़ाक़न रात हो गई तो मैं अब्दुल्लाह बिन उमरू बिन हज़ाम की क़ब्र के पास लेट गया तो मैंने बेनज़ीर तिलावते कलाम पाक की आवाज़ सुनी मैंने यह वाक़िया नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की बारगाह में अर्ज़ किया तो आपने फ़रमाया कि यह अब्दुल्लाह की आवाज़ थी क्या तुमको मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने उन लोगों की रूहें क़ब्ज़ फ़रमाकर याक़ूत व ज़बरजुद की क़न्दीलों में लेकर जन्नत के बीच में लटका दी हैं जबरात होती है तो इनकी रूहे वापिस कर दी जाती हैं और सुबह को इनके मुक़ाम पर वापस कर दिया जाता है। (शरह अस्सदूर)

इब्न अबी अददुनिया ने मोग़ैरह बिन हबीब से रिवायत किया एक शख़्स को ख़्वाब में किसी ने देखा उस शख़्स की क़ब्र से खुशबूऐं आती थीं इससे दरयाफ़्त किया गया कि यह खुशबूऐं कैसी हैं? उसने कहा कि यह तिलावते क़ुरआन और रोज़ों की खुशबूऐं हैं। (इब्न अबिअददुनिया)

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक मर्तबा मैंने ख़्वाब में खुद को जन्नत में देखा मैं जन्नत ही में था कि मैंने कुरआन पढ़ने की आवाज़ सुनी पूछा कि यह कौन हैं? तो मुझे बताया गया कि यह हारसाबिन नोमान हैं और अताअते इलाही बजा लाने वालों को ऐसी ही जज़ा दी जाती है। (बेहक़ी)

निसाई, हाकिम और बेहक़ी ने शुएबुलईमान में हज़रत आईशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत की है कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं सो गया तो अपने आपको जन्नत में पाया तो मैंने एक क़ारी को क़ुरआन पढ़ते हुए सुना मैंने दरयाफ़्त किया कि यह कौन है? तो मुझे बताया गया कि यह हारसा बिन नोमान हैं तो हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने तीन मर्तबा फ़रमाया कि "कज़ालिकलबर्री" और

अपनी माँ के पेट में ही फ़रमाँबरदार थे। (निसाई - बेहक़ी)

ख़िलाल ने किताबुस्सुन्नत में अपनी सनद से हज़रत ईब्न अब्बास रदियल्लाहु अन्हु का क़ौल नक़ल किया वह फ़रमाते हैं कि मोमिन को क़ब्र में एक मुस्हफ़ दिया जाता है जिसमें देखकर वह पढ़ता है।

ईमाम कमालउद्दीन बिन ज़मलकानी ने किताबुल अमल अलमक़बूल फी ज़्यादतुररसूल में फ़रमाया कि यह हदीस इस सिलसिला में है कि मय्यत क़ब्र में क़ुरआन की तिलावत करती है और इस रिवायत में बआज़ औलिया का क़ब्रों में तिलावत क़ुरआन करना और नमाज़ पढ़ना साबित है तो जब औलिया अल्लाह का यह हाल है तो अंबिया का क्या मक़ाम होगा।

हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक सहाबी ने किसी क़ब्र पर अपना ख़ीमा लगा लिया और उनको पता ना था कि यह क़ब्र है तो उन्होंने सुना कि अन्दर कोई शख़्स सूरह मुल्क पढ़ रहा है जब वह पूरी सूरह मुल्क पढ़ चुका तो इस सहाबी ने नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर वाक़िया बयान किया तो आपने फ़रमाया कि यह अज़ाब से नजात दिलाने वाली और अज़ाब को रोकने वाली है। (तिर्मिज़ी)

अबू क़ासिम सआदी ने कहा इससे मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इस अम्र पर मुहर तस्दीक़ सब्त कर दी कि मुर्दा क़ब्र में क़ुरआन पढ़ता है क्योंकि आपने इस सहाबी की तरदीद ना फ़रमाई।

इब्न मन्दह ने आसिम सकती से रिवायत किया वह फ़रमाते हैं कि हमने बलख़ में एक क़ब्र खोदी तो उसमे एक सूराख़ था तो इसमें जब देखा तो एक शैख़ जो सब्ज़ह से ढका हुआ था तिलावत क़ुरआन में मसरूफ़ था।

इब्न अबीअद्दुनिया ने यज़ीद रक़ाशी से रिवायत किया है वह फ़रमाते हैं कि जब मोमिन इन्तक़ाल कर जाता है और क़ुरआन का कुछ हिस्सा पढ़ने से रह जाता है तो अल्लाह तआला फरिशते को इस पर मोक़र्रर फ़रमा देता है कि वह क़यामत तक क़ुरआन याद करायें ताकि वह क़यामत के दिन मअ अपने अहलो अयाल के उठे।

हिकायत :-

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हु ने यह वाक़िया बयान किया कि

एक शख़्स शदीद बीमार हुआ हम लोग उसके पास बैठे हुए थे अचानक बीमार बेहिसो हरकत हो गया हमने उसे मुर्दा समझकर कपड़े से ढांक दिया और उसकी आँखों को बन्द कर दिया जब हम उसको ग़ुस्ल देने के लिये उठाने गये तो उसने हरकत की हम सबने कहा सुब्हानअल्लाह हम तो समझते थे तुम मर चुके हो यह सुनकर उस शख़्स ने कहना शुरू किया बेशक मैं मर चुका था। मरने के बाद मुझको मेरी क़ब्र में ले गये एक ख़ूबसूरत और ख़ुशबूदार आदमी ने मुझको क़ब्र में रख दिया अचानक एक काली बदबूदार औरत नमूदार हुई और उसने मेरी बुराइयां एक एक करके इस तरह गिनाना शुरू कीं कि मैं इससे शर्मसार होने लगा औरत से मेरी बहस होती रही औरत ने कहा अच्छा चल हमारा झगड़ा वहाँ तय होगा चुनांचे मैं चला और एक कुशादा घर में दाख़िल हुआ जिसमें चांदी का एक चबूतरा था इसके एक गोशह में मस्जिद थी और एक शख़्स खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था उस नमाज़ी ने नमाज़ में सूरह नम्ल पढ़ना शुरू की और पढ़ते पढ़ते किसी आयत पर अटक गया मैंने उसको लुक़्मा दे दिया जब वह नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो उसने मुझसे दरयाफ़्त किया तुझे यह सूरत याद है? मैंने कहा हाँ! यह सुनकर उसने अपने तकिया के नीचे से एक किताब निकाली और पढ़ने लगा उसी वक़्त वह काली औरत जल्दी से उसके पास आकर कहने लगी इसने यह बुराई की, इसने यह बुराई की, और फिर वह खुबसूरत और ख़ुशबूदार शख़्स भी आ गया इसने औरत की तरदीद करते हुए मेरी ख़ूबियां गिनानी शुरू कीं इस पर उस मस्जिद के एक नमाज़ी ने कहा बन्दा ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया है लेकिन अल्लाह तआला ने उसकी बुराईयों से दरगुज़र फ़रमा दिया। मज़ीद कहा अभी इस शख़्स की मौत नहीं आई है। अभी तो पीर के दिन इसको मौत आयगी अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि उस बीमार शख़्स ने कहा कि तुम लोग इस वाक्य को सामने रखकर ख़्याल रखना अगर मेरी वफ़ात पीर के दिन हुई तो मुझे उम्मीद है कि मैंने जो कुछ देखा है सच है और मुझे नजात मिलेगी और अगर मैं पीर के दिन ना मरा तो समझना कि मैंने जो कुछ देखा और कहा वह बीमारी का हिज़ियान था चुनांचे वह शख़्स पीर तक अच्छा रहा और पीर के दिन असर के बाद उसका इन्तक़ाल हो गया। (इब्न अबीअददुनिया)

हिकायत :-

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि

एक दिन रसूले अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम हमारे पास तशरीफ़ लाये और फ़रमाया कि मैंने आज की रात अजीबो ग़रीब चीज़ें देखीं मैंने अपनी उम्मत के एक शख़्स को देखा कि उसके पास मौत का फ़रिश्ता उसकी रूह क़ब्ज़ करने आया पस इस शख़्स का अपने वालदैन के साथ सलूक व एहसान करना आगे बढ़ा और मलकुलमौत को उसके पास से लौटा दिया मैंने अपनी उम्मत के एक शख़्स को देखा कि क़ब्र का अज़ाब उसके आस पास घेरे हुए था लेकिन उसका वज़ू आया और उसने उसे अज़ाब से नजात दी। मैंने अपनी उम्मत के एक ऐसे शख़्स को देखा जिसको शैयातीन ने घेर लिया था। चुनांचे अल्लाह तआला का ज़िक्र आया आगे बढ़ा और उसे शैयातीन से नजात दिलाई। मैंने अपनी उम्मत के एक शख़्स को देखा कि अज़ाब के फ़रिश्तों ने उसे घेर रखा था लेकिन नमाज़ ने उनके अज़ाब से इसको बचा लिया। मैंने अपनी उम्मत के एक शख़्स को देखा कि प्यास के मारे ज़बान निकाले हुए है और जिस हौज़ पर जाता है नाकाम लौटा दिया जाता है। चुनांचे उसका रोज़ा आया और उसने इसको सैराब कर दिया। मैंने अपनी उम्मती के एक शख़्स को देखा कि अंबियाए कराम अपने अपने हलक़े बनाए बैठे हैं और यह शख़्स जब उनके हल्क़े के क़रीब पहुंचता है तो इसको निकाल बाहर कर देते हैं चुनांचे उसका ग़ुस्ल जनाबत आया और इसने उस शख़्स का हाथ पकड़कर मेरे करीब बैठा दिया। मैंने अपनी उम्मत के एक आदमी को देखा कि उसके दायें, बायें, आगे, पीछे और ऊपर नीचे तारीकी ही तारीकी है वह शख़्स इस तारीकी की वजह से हैरान परेशान था कि उसका हज व उमरा आया और इस तारीकी से इसको नजात दिला कर नूर में दाखिल किया। मैंने अपनी उम्मत के एक आदमी को देखा कि वह मोमिनों से बात करता है लेकिन वह इससे बेरूख़ी बरत रहे हैं चुनांचे इसक सिलह रहम आया और इसने कहा कि ऐ मोमिनों इस शख़्स से बेरूख़ी ना करो इससे बातचीत करो फिर इससे बातें कीं। मैंने अपनी उम्मत के एक शख़्स को देखा कि अपने हाथ से आग की लपटों और शरारों को रोक रहा था कि मुँह ना जले चुनांचे उसका सदक़ा आया और उसने उसके मुँह और सर की हिफ़ाज़त की। मैंने अपनी उम्मत के एक शख़्स को देखा कि मलायका अज़ाब ने उसके हर उज़ू को गिरफ़्त में ले लिया लेकिन उसकी दआवत व तब्लीग ने इनसे बचाकर मलायका रहमत से मिला दिया। मैंने अपनी उम्मत के एक आदमी को देखा कि उसके आमालनामा में तराज़ू के बायीं पलड़े को झुका दिया चुनांचे उसका ख़ौफ़

खुदावन्दी आया और उसने इस तराजू के पलड़े को झुका दिया। मैंने अपनी उम्मत के एक शख़्स को देखा कि उसकी तराजू आमाल से हल्की फुल्की रह गई तो इस के पास वह बच्चे आ गये जो बचपन में मर गये थे उन्होंने आकर उसकी तराजू को वज़नी कर दिया। मैंने अपनी उम्मत के एक शख़्स को देखा कि जहन्नम के किनारे खड़ा है इसका अल्लाह से डरना आया और उसने जहन्नम के किनारे से दूर कर दिया। मैंने अपनी उम्मत के एक आदमी को देखा कि वह आग में गिर पड़ा इसका वह आंसू आया जो अल्लाह की डर से उसकी आँखों से बहा था उस आंसू ने इसको आग से निकाला। मैंने अपनी उम्मत के एक शख़्स को देखा कि पुलसरात पर खड़ा है और थर थर कांप रहा है चुनांचे अल्लाह के साथ जो उसको हुस्न ज़न था उस हुस्नज़न ने बढ़कर उसकी थरथरी दूर की और पुल से गुज़ार दिया। मैंने अपनी उम्मत के एक शख़्स को देखा कि पुलसरात पर कभी चूतड़ों के बल चलता है और कभी घुटनों के बल चुनांचे मुझ पर इसका दरूद भेजना आया और उसका हाथ पकड़कर खड़ा कर दिया फिर वह पुल सरात पर सीधा चला गया। मैंने अपनी उम्मत के एक शख़्स को देखा कि जन्नत के दरवाज़ो की तरफ जब वह पहुंचा तो इस पर दरवाज़े बन्द कर दिये गये फिर इसका कलमा शहादत आया और उसने दरवाज़ों को खोलकर इसको जन्नत में दाख़िल कर दिया। मैंने कई आदमियों को देखा कि उनके होंठ कतरे जा रहे थे मैंने पूछा यह कौन लोग हैं? जवाब मिला यह चुग़ल ख़ोर लोग हैं मैं ने कई आदमियों को देखा कि अपनी ज़बानों के सहारे लटके हुए हैं मैंने पूछा यह कौन लोग हैं? जवाब मिला यह मुसलमान मर्दों और औरतों पर तोहमत लगाने वाले हैं। (तिबरानी, नवादिरूलउसूल, तरग़ीब)

ईमान बाअसे नजात बना :-

क़ब्रिस्तान बसरह के क़रीब हज़रत मालिक बिन दीनार रदियल्लाहु अन्हु ने देखा कि एक जनाज़ा को महज़ चार शख़्स लिये जा रहे थे उनको पांचवां सहारा देने वाला कोई नहीं है। हज़रत मालिक बिन दीनार जा पहुंचे और पूछा भई क्या बात है सिर्फ़ आप ही लोग हैं पांचवां कोई नहीं? **जवाब** - यह शख़्स नेहायत बदकार और गुनहगार था।

हज़रत मालिक बिन दीनार रदियल्लाहु अन्हु ने मिलकर इन चारों के साथ उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ी और अपने हाथों से उसे क़ब्र मे उतारा और तदफ़ीन के बाद क़रीब ही एक दरख़्त के साये में जा लेटे। गुनूदगी

छाई और इसकी क़ब्र का सारा माजरा मुलाहज़ा फ़रमाया। दो फ़रिश्ते क़ब्र शक्क़ करके अन्दर दाख़िल हुए एक ने दूसरे से कहा इसे अहले जहन्नम में लिखो इसका कोई उज़ू बदन गुनाहों से बरी नहीं दूसरे ने कहा ज़रा इसकी आँखों पर ग़ौर करो देखो इसकी आँखे अमले हराम और बदनज़री से लब्रेज़ हैं, और कान? कान मुनकिरात और हराम सुनने के अरतकाब से भरे हुए हैं। ज़रा ज़बान पर भी तवोज्जह दो ज़बान भी हराम ख़ोरी की तलवीष से पुर है और इसके हाथों का क्या हाल है बदकारी की ज़ुल्मत हाथों में भी पाई जाती है आखरी हिस्सा बदन पाँव को भी देखो? इसके तो पाँव भी नापाक रूख़ पर जाने के ऐब से वज़नी हैं। अब पूछने वाला फ़रिश्ता खुद मुर्दे के क़रीब आकर उसके दिल पर ग़ौर करने लगा और उसने कहा मगर इसका दिल तो ईमान से भरा हुआ है इसको मरहूम और नेक लिखना चाहिये क्योंकि अल्लाह तआला का फज़्लों करम इसकी मआसियातों और ग़लतियों को महव फ़रमा देगा।

इस मज़मून से मोतआलिक़ यह दो शेर कहे गये हैं :-

तर्जुमा - (जब लोगों ने बन्दे को मेरी अताअत से दूर देखा तो हुक्म लगा दिया कि मैं अपनी रहमत से उसे नहीं बख़्शूंगा मेरा हिल्म बहुत अज़ीम है और मख़्लूक़ पर हिल्म का दरवाज़ा तंग नहीं है अम्रोमशीयत की हद बन्दी कौन कर सकता है)

अल्लामा याफई यमनी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं

इस शख़्स को यह सब अल्लाह तआला की साबिक़ा इनायत से हासिल हुआ इससे धोखा खाना मुनासिब नहीं। क्योंकि हर शख़्स को यह मुक़ाम हासिल नहीं गुनहगार इस खतरा से महफूज़ बिल्कुल नहीं हैं बल्कि अताअत गुज़ारों को पता नहीं कि अल्लाह तआला की मशियत से क्या दरोपेश हो हम रबतआला से दारैन की आफ़ियत व मग़फ़िरत और मुसलमानों के लिये हुस्ने ख़ातिमा और दीन की सलामती की दुआ करते हैं मौला करीम क़बूल फ़रमाये। आमीन

मुर्दे को क़ब्र का दबाना :-

मुर्दा जब आलमे क़ब्र में दाख़िल हो जाता है तो क़ब्र दोनों एतराफ़ से उसे दबाती है यानी तंग हो जाती है इसे ज़गता क़ब्र कहा जाता है हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के इरशादात के मुताबिक़ क़ब्र के दबाव या भींचने से मय्यत के दोनों कंधे सीना और पस्लियां अपने असली मुक़ाम

से क़द्रे हट जाते हैं अंबिया अलैहिस्सलाम और अल्लाह जिन्हें चाहे ज़गता क़ब्र से महफ़ूज़ रहते हैं क़ब्र का दबाना काफ़िर के लिये तो लाज़िम है नेक मुसलमानों के लिये सिर्फ क़ब्र में दाख़िल होने के वक़्त पेश आता है इसके बाद इसकी क़ब्र को कुशादा कर दिया जाता है क़ब्र का दबाना मोमिन पर इस तरह होता है जैसे कि एक बच्चा अपनी माँ से अगर सर दर्द की शिकायत करे तो माँ उसके सर को हाथ से पकड़कर नर्मी से दबाने लगे इसी तरह क़ब्र भी अक्सर मोमिनीन को दबाती है मगर इसके दबाने में वह शिद्दत नहीं होती जिस शिद्दत के साथ क़ब्र ग़ैर मुस्लिमों को दबाती है और उनके जिस्म को बेहद अज़ियत पहुंचती है।

ज़ग़तह क़ब्र आलमे बरज़ख़ में पेश आता है क़ब्र का दबाव रूह और जिस्म दोनों पर पड़ता है अहले नज़र का क़ौल है कि ज़गतह क़ब्र सवाल व जवाब के बाद पेश आता है इसके बाद नज़ात याफ़्ता मोमिन की क़ब्र को कुशादह कर दिया जाता है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने हज़रत सआद ईब्न मआज़ अंसारी रदियल्लाहु अन्हु के मोताअलिक़ इरशाद फ़रमाया कि यह वह हस्ती है जिनके वफ़ात से अर्श हिल गया आसमान के दरवाज़े खुल गये और सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके जनाज़ह में शामिल हुए अलबत्ता उसे क़ब्र में एक मर्तबा दबाया गया और बाद अज़आं वह अज़ाब जाता रहा। (निसाई)

उमर बिन अबी शैबह ने किताब अलमदीना में हज़रत अनस रज़िअल्लाहो अन्हो से रिवायत किया कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया की क़ब्र के दबाने से किसी ने नजात न पाई मगर फातिमा बिनते असद रदियल्लाहु अन्हु ने, तो अर्ज़ किया गया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम! और ना आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के बेटे क़ासिम रदियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है और न इब्राहीम रदियल्लाहु अन्हु ने।

हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत ज़ैनब बिन्त रसूलअल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का इन्तक़ाल हो गया तो हम उनके जनाज़ा में आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के हमराह गये आप बहुत ही ग़मग़ीन थे तो आप थोड़ी देर क़ब्र पर बैठ कर आसमान की जानिब देखने लगे फिर क़ब्र से उतर आये और ग़म और ज़्यादा हो गया फिर थोड़ी देर बाद ग़म ख़तम हो गया और तबस्सुम फ़रमाने लगे।

दरयाफ़्त करने पर फ़रमाया कि मैं क़ब्र के दबाने को याद कर रहा था और ज़ैनब रदियल्लाहु अन्हु की कमज़ोरी को। यह बात मुझ प दुशवार गुज़री तो पहले बारगाह ख़ुदा बन्दी में दुआ की कि क़ब्र के दबाने में कमी कर दी जाय तो दुआ क़बूल हुई लेकिन फिर भी क़ब्र ने ज़ैनब रदियल्लाहु अन्हु को इतना दबा दिया कि उसके दबाने की आवाज़ को जिन्न व इन्स के अलावा हर चीज़ ने सुना। (तिबरानी)

हज़रत तमीमी का इरशाद है कि क़ब्र के दबाने की असल वजह यह है कि लोग इसी से पैदा हुए और एक अरसा दराज़ तक ग़ायब होने के बाद इससे फिर मिले हैं तो वह उनको उसी तरह दबायगी जैसे माँ अपने मुददत से छुटे हुए बच्चा को दबाती है। तो जो अताअते इलाही बजा लाता है उसको बतौर मुहब्बत दबाती है और जो नाफ़रमान होता है उसे बतौर नाराज़गी दबाती है। (इब्नअबी अददुनिया)

हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अगर कोई ज़ग़तह क़ब्र से महफ़ूज़ रह सकता था तो वह सआद बिन मआज़ रदियल्लाहु अन्हु थे लेकिन क़ब्र ने उनको भी दबाय और फिर छोड़ दिया।

नेहाद बिन सरी ने ज़हद में इब्न अबी मल्किया से रिवायत किया कि क़ब्र के दबाने से कोई ना बचा हत्ता कि सआद बिन मआज़ भी कि जिसका एक रूमाल भी दुनिया व माफ़िहा से बेहतर है। सियूती ने हज़रत सआद बिन मआज़ रज़िअल्लाहो अन्हो का वाक़िया लिखकर कहा कि अंबिया अलैहिस्सलाम को क़ब्र दबाया नहीं करती।

अबू अयूब से रिवायत है कि एक बच्चा दफ़न किया गया तो आपने फ़रमाया कि अगर क़ब्र के दबाने से कोई बच सकता है तो यह बच्चा बच जाता। (तिबरानी)

अली बिन मोईद ने किताबुत्ताअतुलआसियान में एक शख़्स से रिवायत किया। उन्होंने कहा कि मैं आईशा रज़िअल्लाहो अन्हो के पास था तो एक बच्चा का जनाज़ा गुज़रा आप रोने लगी मैंने कहा आप क्यों रोती हैं? फ़रमाया कि इस बच्चे पर क़ब्र के दबाने से शफ़क़त करते हुए।

सुब्की ने बहरूल कलाम में फ़रमाया कि अताअत गुज़ार मोमिन के लिय अज़ाबे क़ब्र ना होगा लेकिन क़ब्र का दबाना होगा चुनांचे वह इसकी हौलनाकी को पायेगा क्योंकि इसने अल्लाह की नेमतों का शुक्र अदा ना किया।

अबुल क़ासिम सआदी ने किताबुर्रूह में कहा कि क़ब्र के दबाने से ना अच्छे महफ़ूज़ रहेंगे ना बुरे लेकिन फ़र्क़ यह है कि काफ़िर पर यह हालत हमेशा रहेगी और मुसलमान को इब्तदा में क़ब्र दबायेगी और फिर कुशादह हो जायगी और क़ब्र के दबाने से मुराद यह है कि इसके दोनों किनारे आपस में मिल जायेंगे।

इब्न असाकर और इब्न अबी अददुनिया ने अब्दुल मजीद बिन अब्दुल मजीद बिन अब्दुल अज़ीज़ से रिवायत किया कि अब्दुल अज़ीज़ ने कहा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु के गुलाम नाफे की वफ़ात का वक़्त जब करीब हुआ तो वह रोने लगे तो उनसे इसका सबब पूछा गया तो वह कहने लगे कि मैं सआद और क़ब्र के दबाने को याद करके रोता हूँ।

ooo

राहत-ए-क़ब्र

नेक और आबिद मोमिनीन जब मुनकिर नकीर के सवाल के जवाबात दे चुकेंगे तो उनके लिये हुक्म होगा कि उनकी क़ब्र को जन्नत की तरह कर दो और ताहद्दे नज़र वसी कर दो एक रिवायत है कि आसमानों से आवाज़ देने वाला आवाज़ देगा कि मेरे बन्दे ने सच कहा तो इसके लिये जन्नत का बिछौना बिछा दो और उसे जन्नती लिबास पहना दो। एक और रिवायत है कि रब तआला की तरफ से फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि इसके लिये जन्नत का दरवाज़ा खोल दो लिहाज़ा दरवाज़ा खोल दिया जायगा। और उस मोमिन के पास जन्नत की ख़ुशबूदार राहत आमेज़ हवा आयेगी फिर उसकी क़ब्र का सत्तर मुरब्बा ज़राअ कुशादा कर दिया जायगा ज़रा तक़रीबन डेढ़ फिट के बराबर होता है कि इसे फ़रिश्ते कहेंगे कि दुल्हन की तरह सो जा जिसे कोई बेदार करने वाला नहीं होता सिवाय उसके जो इसका अहल होता है इसके मोतआलिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की मोकम्मल हदीस का मतलब यह है।

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया जब मय्यत को क़ब्र में रख दिया जाता है तो मुर्दा अपनी क़ब्र में बैठता है उस वक़्त उसपर ना तो ख़ौफ़ मोसल्लत होता है ना घबराहट फिर इस से दरयाफ़्त किया जाता है कि तू किन में से था वह जवाब देता है मैं मतबऐ इस्लाम था फिर सरकार की जानिब इशारा करके दरयाफ़्त करते हैं यह कौन हैं? तो वह जवाब देता है कि यह ज़ात तो मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की है जो हमारे पास दलायल और बराहीन लेकर आये और हमने आपकी तस्दीक़ की फिर मुर्दे से सवाल होता है कि तूने अल्लाह को देखा वह जवाब देता है किसी शख़्स के लायक़ यह बात नहीं कि वह अल्लाह को देखे। फिर उसकी तरफ़ दोज़ख़ की एक खिड़की खोल दी जाती है जिससे यह मालूम होता है कि इसका बआज़ बआज़ को तोड़ रहा है उस वक़्त इससे कहा जाता है देख ले अल्लाह तआला ने तुझे

इससे बचा लिया फिर उसके लिये जन्नत की जानिब की खिड़की खोल दी जाती हैं तो मुर्दा उसकी बहारों और तरोताज़गी को देखता है तो इससे कहा जाता है कि इस यक़ीन व ईमान की बिना पर यह तेरा ठिकाना है जिस पर तेरी ज़िन्दगी गुज़री और तुझे मौत आई और इसी यक़ीन पर इन्शाअल्लाह (रोज़ क़यामत) उठाया जायगा। लेकिन हर बुरे आदमी को क़ब्र में जब उठाया जाता है तो क़ब्र में डरा और घबराया हुआ बैठता है जब उससे सवाल होता है कि तू किस दीन पर था तो वह कहता है मुझे मालूम नहीं और जब इससे सरकार सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के बारे में सवाल होता है तो कहता है कि जो कुछ इनके बारे में लोगों से सुनता था वही मैं भी कहता था फिर उसके लिये जन्नत की खिड़कियां खोली जाती हैं और वह जन्नत की बहारों को देखता है तो इससे कहा जाता है कि देख ले तुझे किन नेमतों से फेर दिया गया फिर उसके लिये जहन्नम की खिड़कियां खोली जाती हैं तो वह देखता है कि बआज़ को बआज़ ख़त्म कर रहा है। इसके बाद इससे कहा जाता है यह तेरा ठिकाना है और यह इस शक की बिना पर है जिस पर तूने ज़िन्दगी गुज़ारी और तुझे मौत आई और इस पर इन्शाअल्लाह क़यामत के दिन उठाया जायेगा।

(इब्ने माजा)

क़ब्र मोमिन के लिये राहत का मुक़ाम है क्योंकि मोमिन की क़ब्र को जन्नत के बाग़ीचों में से एक बाग़ीचा की मानिन्द बना दिया जाता है और मोमिन आलमे बरज़ख़ में क़यामत तक जन्नत के नज़ारों से लुत्फ़ अन्दोज़ होता रहता है गरज़ कि मौत के आने से मोमिनों को दुनिया के दुखों से नजात मिल जाती है और क़ब्र में उसे मोकम्मल राहत नसीब हो जाती है फिर क़यामत के रोज़ हमेशा के लिये जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िल कर दिया जायगा।

हज़रत मसरूक़ का क़ौल है कि मोमिन के लिये क़ब्र से ज़्यादा बेहतर जगह और कोई नही क्योंकि क़ब्र में वह दुनिया के तमाम ग़मों से महफ़ूज़ हो जाता है और अल्लाह के अज़ाब से भी नजात पा जाता है।

जन्नत की खुश ख़बरी :-

हज़रत जाफ़र बयान करते हैं कि मैंने साबित से सुना उन्होंने हाम्ममीमअस्सजद तिलावत की यहाँ तक कि वह इस आयत पर पहुंचे। “इन्नलज़ी ना क़ालू रब्बुनल्लाहो सुम्मस तक़ामू ततनज्ज़लू अलैहि मुल मलायक तू अल्लाह तख़ाफू वला तहज़नू” (बेशक जिन लोगों ने कहा कि

अल्लाह हमारा रब है फिर वह इस पर जम गये हम उनके पास फ़रिश्ते भेजते हैं कि अब तुम ना ख़ौफ़ करो ना कोई ग़म) फिर वह (यहाँ) ठहर गये और फ़रमाया कि हमें यह हदीस पहुंची है कि मोमिन बन्दा जब इसकी क़ब्र से उठाया जाता है तो इस वक़्त वह दोनों फ़रिश्ते इसके पास आते हैं जो दुनिया में इसके साथ रहे थे वह कहते हैं कि अब तो ना कोई ख़ौफ़ कर और ना ग़म तेरे लिये इस जन्नत की ख़ुशख़बरी है जिसका तुझसे वादा किया गया था अल्लाह तआला उसे ख़ौफ़ से अमान अता फ़रमायगा और उसकी आँख ठन्डी करेगा जबकि क़यामत के दिन की मोसीबत लोगों को ढांक लेगी। (मदहोश कर देगी) मोमिन आँख की ठन्डक (अमन) में होंगे। इसलिये कि अल्लाह ने उन्हें अपना रास्ता दिखाया (वह इस पर चलते रहे) और इसलिये कि दुनिया में उन्होंने अल्लाह की रज़ामन्दी के काम किय।

क़ब्र का कुशादह होना :-

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मोमिन अपनी क़ब्र में सत्तर हाथ के सब्ज़हज़ार में फिरता रहता है और चौदहवीं के चांद की तरह उनकी क़बूर रौशन रहती है।

हज़रत अली बिन मोईद ने हज़रत मआज़ से रिवायत किया उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत आईशा रदिअल्लाहु अन्हा से पूछा कि आप बताईये मय्यत के साथ क्या होता है? तो आप ने फ़रमाय अगर वह मोमिन है तो उसकी क़ब्र चालीस हाथ खोल दी जाती है।

हज़रत आईशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि जब नजाशी का इन्तिक़ाल हुआ तो हम उसकी क़ब्र पर मुसलसल नूर देखते थे।

(अबू दाऊद)

एक क़ब्र का मंज़र :-

हज़रत अब्दुर रहमान बिन अहमद जाफ़र ने अपनी सनद से बयान किया मैं कुफ़ा में एक नौजवान की नमाज़ जनाज़ा में शरीक हुआ अब जो मैं उसकी क़ब्र दुरूस्त करने को दाख़िल हुआ तो ईंटे लगाते हुए एक ईंट गिर गई तो मुझे अन्दर काबा और तवाफ़ का मंज़र नज़र आया।

(शरह अस्सदूर)

हिकायत :-

हज़रत अबू ग़ालिब से रिवायत है कि शाम में एक शख़्स की मौत का वक़्त आ गया तो उसने अपने चचा से कहा कि अगर मुझको अल्लाह मेरी माँ की तरफ़ लौटा दे तो बताइये वह मेरे साथ क्या सुलूक करेगी? वह कहने लगे कि बखुदा वह तुम को जन्नत में दाख़िल कर देगी। तो उस शख़्स ने कहा कि अल्लाह मुझ पर वालिदह से भी ज़्यादा मेहरबान है। फिर उस नौजवान का इन बातों के बाद वसाल हो गया तो मैं उसके चचा के साथ क़ब्र में दाख़िल हुआ तो अचानक एक ईंट गिर पड़ी तो उसका चचा कूद कर आगे बढ़ा फिर रूक गया मैंने कहा क्या है? तो उसने जवाब दिया इसकी क़ब्र नूर से मुनव्वर है और जहाँ तक मेरी नज़र की रसाई हुई वहाँ तक कुशादह है। (इब्ने अबीअददुनिया)

क़ब्रिस्तान का गोशा गोशा मोमिन के लिये बनाओ सिंगार करता है:-

हज़रत इब्न उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रहमते आलम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब किसी मोमिन की वफ़ात होती है तो कब्रिस्तान का गोशा गोशा उसके लिये बनाओ सिंगार करता है और हर गोशा यही आरज़ू करता है कि यह मेरे पास दफ़न हों लेकिन जब किसी काफ़िर की मौत होती है तो क़ब्रिस्तान में तारीकी पैदा हो जाती है और क़ब्रिस्तान का गोशा गोशा अल्लाह तअला से पनाह मांगकर फ़रयाद करता है कि यह बदबख़्त मेरे पास दफ़न न किया जाय।

(हकीम तिर्मिज़ी, इब्न असाकर, इब्न अदी, इब्ने मन्दह)

क़ब्र से ख़ूश्बू का आना :-

हज़रत अबू नईम ने मुग़ीरह बिन हबीब से रिवायत किया कि अब्दुल्लाह बिना ग़ालिब दानी एक जंग में शहीद हो गये जब उनको दफ़न किया गया तो उनकी क़ब्र से मुश्क की महक आई।

एक मर्तबा उनके किसी भाई ने उनको ख़्वाब में देखा तो दरयाफ़्त किया कि तुम्हारे साथ क्या बरताव हुआ? कहा कि बहुत अच्छा फिर पूछा क्या ठिकाना मिला? कहा जन्नत फिर पूछा किस सबब से? कहा कि हुस्ने यक़ीन और तहज्जुद की नमाज़ और प्यासा रहना, फिर पूछा कि ख़ुशबू तुम्हारी क़ब्र में कैसे आती है? कहा यह तिलावत और रोज़ा की

वजह से है। (शरा अस्सदूर)

शहादत का ईनाम :-

हज़रत इब्न उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक अराबी हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के सामने शहीद हो गये तो आप उसके सराहने आलमे मोसर्रत में बैठे और मुस्कुराहट फ़रमाई और उससे मुँह मोड़ लिया तो आपसे इस सिलसिले में सवाल किया गया। आपने फ़रमाया कि खुश होना तो इसलिये था कि मैंने देखा कि अल्लाह तआला ने इसका मर्तबा किस क़दर बुलन्द फ़रमाया और मेरा मुँह फैरना इसलिये हुआ कि उसकी बीवी हव्वा उसके पास है।

बीवी का कफ़न :-

हज़रत राशिद बिन सआद से रिवायत है कि एक शख़्स की बीवी फ़ौत हो गई तो उसने ख़्वाब में बहुत सी औरतें देखीं लेकिन उसकी बीवी उसमें न थी उसने इस औरत के न आने की वजह पूछी तो वह कहने लगी कि तुमने उसके कफ़न मे कोताही की इसलिये वह आने में शर्म महसूस करती है वह शख़्स बारगाह रिसालत मआब मे हाज़िर हुआ और वाक़िया अर्ज़ किया तो आपने फ़रमाया किसी सक़ह आदमी का ख़्याल रखना इत्तफ़ाक़न एक अंसारी की मौत का वक़्त आ गया इसने अंसारी से कहा कि मैं अपनी बीवी का कफ़न देना चाहता हूँ अंसारी ने कहा कि अगर मुर्दा मुर्दे को पहचान सकता है तो मैं पहुंचा दूंगा। चुनांचे वह शख़्स दो ज़ाफ़रानी रंग के कपड़े लाए और अंसारी के कफ़न में रख दिया अब जो रात को ख्वाब में देखा तो वह औरत वह कपड़े पहने खड़ी है। यह हदीस अगरचे मुरसल है लेकिन इसकी अस्नाद में कुछ हर्ज नहीं।

(शरह अस्सदूर)

हिकायत :-

एक मर्तबा ईमाम अहमद की क़ब्र के पास एक क़ब्र खोदी तो मुर्दे के सीने पर फूल रखे हुए थे और वह हिल रहे थे उन्होंने अपनी तारीख़ में रिवायत किया कि बसरह में एक टीला गिर गया उसमें हौज़ की तरह एक जगह थी इसमें सात आदमी मदफून थे उनमें से हर एक का कफ़न और बदन दुरूस्त था और मुश्क की खुशबू महक रही थी उनमें से एक नौजवान था जिस के सर पर बाल थे और उसके होंठ तर थे गोया कि

उसने अभी कुछ पिया है। उसकी आँखों में सुर्मा लगा हुआ था उसकी कोख में तलवार का एक निशान था तो बाज़ लोगों ने उसका बाल लेना चाहा तो वह बाल ज़िन्दा इंसान के बाल की तरह मज़बूत था।

(शरह अस्सदूर)

क़ब्र में अच्छी हालत का होना :-

हज़रत मोहम्मद बिन मोख़ालिद से रिवायत है कि मेरी वाल्दा का इन्तक़ाल हो गया तो मैं उनको क़ब्र में उतारने के लिये उतरा तो मैंने देखा कि पास वाली क़ब्र से कुछ हिस्सा खुल गया है तो मुझे एक शख़्स नज़र आया जो नया कफ़न पहने हुए था और उसके सीना पर चम्बेली के फूलों का एक गुल्दस्ता रखा था मैंने उसे उठाया तो वह बिलकुल तरो ताज़ा थे मेरे साथ दूसरे हज़रात ने भी सूंघा फिर हमने उसको वहीं रख दिया और इस सूराख़ को बन्द कर दिया। (शरहअस्सदूर)

क़ब्र में नेक लोगों के मुक़ामात :-

मक़बूलाने बारगाहे हक़ में से बाज़ ने हुज़ूर समदियत में दुआ की कि मौला मौत के बाद की जगह मुझे दिखा दे चुनांचे एक शब उन्होंने ख़्वाब मे मनाज़िर मोलाहज़ा किये।

क़यामत क़ायम है .... क़ब्रे शक़ हैं .... इन क़ब्रों में कोई फ़र्श सुन्दस पर कोई हरीर पर, कोई फर्श दिबा पर, कोई शानदार तख़्त पर, कोई फूलों की सेज पर आराम कर रहा है। किसी का यह हाल है कि रो रहा है .... और कोई ख़ुशी से हंस रहा है। साहिब ख़्वाब बुज़ुर्ग ने अर्ज़ किया मौला! अगर तू चाहता तो सबको एक सां अज़ाज़ व एकराम से नवाज़ता .... उसी वक़्त अहले क़बूर में से एक ने चीख कर कहा ऐ फ़्लाँ यह जो तू देख रहा है आमाल के दरजात हैं . .... अच्छे अख़्लाक़ वाले और नेक हज़रात फर्श सुन्दस पर हैं हरीर व दीबा पर जिनको देख रहे हो वह शहीदाने मिल्लत हैं फूलों की सेज पर आराम फरमा रोज़हदार हज़रात हैं और तुम जिन्हें हंसते हुए देख रहे हो यह सच्ची तौबह वाले हैं और यह जो रो रहे हैं यह गुनहगार हैं और बुलन्द दरजात में वह लोग जो ख़ुदा ही के लिये बाहम मोहब्बत रखने वाले हैं।

हज़रत अल्लाहमा याफ़अी अलैहिर्रहमान ने इस वाक़िया की तौज़ीह में तवील और इल्मी तक़रीर फ़रमाई है इसी में है कि तिर्मिज़ी की हदीस में

रब तआला का इरशाद है।

खुदा के वास्ते मोहब्बत करने वालों के लिये नूर के मिम्बर रखे जायेंगे जिस पर अंबिया और शोहदा रशक करेंगे और मूता में इरशाद रब्बुल आलमीन है।

जो लोग मेरे लिये मोहब्बत करते हैं मेरे लिये मिल बैठते हैं मेरे लिये एक दूसरे की ज़्यारत करते हैं और मेरे लिये खर्च करते हैं इन पर मेरी मोहब्बत वाजिब है।

इन दोनों अहादीस से वाज़ि हुआ कि असहाबे मरातिब से मुराद तख़्त नशीन हज़रात है यह अज़ीम दर्जा है और इसी के साथ साथ खुश ऐशी और रब तअला का कुर्ब और जमाले रब्बानी की रूयत भी है (जो यक़ीनन तमाम नेमतों से बड़ी नेमत है) अल्लाह तआला उनकी नेमतें फ़ज़ूंतर करे आमीन! और यह सवाल कि यहाँ मुतहाबीन का तख़्त पर होना और हदीस में मिम्बर नूर पर होना मज़कूर है तो इसका जवाब यह है कि मिम्बर क़यामत में होंगे और तख़्त क़ब्र में इन्शाअल्लाहुलअज़ीज़।

(रौज़तुररियाहीन)

हिकायत :-

हज़रत मंसूर बिन अम्मार अलैह रहमा ने एक जवाँसाल को नमाज़ पढ़ते हुए देखा वह ख़ौफ़ से लरज़ रहा था और उसकी नमाज़ का तरीक़ा अहले खुशू जैसा था। हज़रत मंसूर ने सोचा यकीनन यह कोई वली अल्लाह है जब वह नमाज़ ख़त्म कर चुका तो उन्होंने सलाम किया और कहाँ "तुम्हें मालूम है कि जहन्नम में एक वादी "लज़ा" है जो खाल खैंच लेगी वह उस शख़्स को पकड़ लेगी जिसने रू-कशी की होगी, बे रूख़ी से पेश आया होगा और माल जमा करके उठा रखा होगा।"

यह बाते सुनकर नौजवान ग़श खाकर गिर पड़ा फिर कुछ देर बाद उसे होश आया और उसने कहा कुछ और भी सुनाओ। मंसूर बिन अम्मार ने यह आयात तिलावत कीं।

तर्जुमा :-

ऐ ईमान वालों खुद को और अपने अहलो अयाल को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं इस पर सख़्त मिज़ाज क़वी फरिश्ते मोतयीअन हैं वह अल्लाह का कोई हुक्म नहीं टालते जो हुक्म

होता है बजा लाते हैं। (अत्तहरीम, 6)

यह आयात सुनकर वह शख़्स गिर पड़ा और इन्तक़ाल कर गया मैंने देखा कि उसके सीने पर क़लमे कुदरत से तहरीर है। तर्जुमा - तो वह पसन्दीदा ऐश में होगा, आलीशान जन्नत में जिसके (फलों के) गुच्छे झुके हुए हैं। (अल्हाक़्क़ह 21)

इन्तक़ाल की तीसरी शब मंसूर बिन अम्मार ने उस नौजवान को ख़्वाब में देखा कि वह एक मुरस्सा तख़्त पर बैठा है और सर पर ताज चमक रहा है उन्होंने पूछा कि अल्लाह तआला ने तेरे साथ क्या मामला किया? जवाब दिया रब्बे करीम ने मुझे बख़्श दिया और अहले बद्र का सवाब अता किया बल्कि और ज़्यादा। इसलिये कि हज़रात अहले बद्र तो शमशीर कुफ़्फ़ार से शहीद हुए थे और मैं कलामे रब्बानी से शहीद हुआ। रहमतुल्लाह तआला अलैह। (रौज़तुररियाहीन)

क़ब्र में तख़्त और नहर का जारी होना :-

परहेज़गार और साहिब नज़र हज़रात में से एक ने बयान किया कि मैंने एक क़ब्र खोदी तो देखा कि बग़ल में क़ब्र के अन्दर एक शख़्स तख़्त पर बैठा तिलावत कुरआन कर रहा है और जिस तख़्त पर वह बैठा है उसके नीचे एक नहर जारी है इस मंज़र को देख कर मैं बेहोश हो गया। मुझे कई रोज़ बाद होश आया तो मैंने लोगों को सारा माजरा सुनाया एक शख़्स ने कहा मुझे इस क़ब्र तक ले चलो मगर जब मैं इसके बाद शब में सोया तो साहिब क़ब्र ने ख़्वाब में आकर डाँटा कि ख़बरदार जो किसी को मेरी क़ब्र का पता बताया। मैंने अपने इरादे से तौबा की और किसी को इस क़ब्र के बारे में नहीं बताया। (रोज़तुर रियाहीन)

अहले क़बूर का आने वाले से हाल दरयाफ़्त करना :-

शैख़ अबू मोहम्मद अब्दुल्लाह इब्ने असअद याफ़्यी फ़रमाते हैं। मैंने ख़्वाब में एक खुली क़ब्र देखी जो अन्दर से निहायत कुशादह थी और इसमें सिर्फ तख़्त के चारों पाये नज़र आ रहे थे जिस पर कोई मौजूद था मैंने कहा अहले दुनिया कैसे अजीब हैं मुर्दों के लिये क़ब्र में तख़्त बिछाते हैं और अपने आराम व आशायश को मौत के बाद नहीं छोड़ते मेरी यह बात सुनकर सरीरआराये तख़्त ने ऊपर आने को कहा मैं ज़ीना जैसी एक चीज़ के ज़रिये ऊपर गया तो क्या देखता हूँ कि तख़्त पर मेरी वालिदा आराम फ़रमाँ हैं उन्होंने बड़ी ही मेहर व मोहब्बत और शफ़क़्क़त से मुझे

सलाम किया। मेरा एक भाई ज़िन्दा था उसके हालात पूछे और जो भाई वालिदा की वक़्त ज़िन्दा थे मगर इस ख़्वाब से पहले वफ़ात पा चुके थे माँ ने उनके बारे में नहीं पूछा फिर मुझे रुख़्सत किया।

शैख़ फ़रमाते हैं इससे पता चलता है कि मरने वालों का हाल मुर्दों को मालूम होता है और जो लोग दुनिया से मर के वहाँ जाते हैं मुर्दे यहाँ वालों के अहवाल दरयाफ़्त करते हैं अपनी माँ के इस ख़्वाब का असर मेरे दिल पर साल्हा साल तक रहा। (रौज़ुररियाहीन)

फ़क़ीह मोहीउद्दीन तिबरी से आरिफ़े वक़्त शैख़ इस्माईल बिन मोहम्मद हज़रमी ने एक बार दरयाफ़्त किया। क्या तुम्हारा कलामे मूता (मुर्दों का बात करना) पर ईमान है? उन्होंने जवाब दिया, जी, बेशक, फ़रमाया यह क़ब्र वाला मुझसे कहता है कि मैं जन्नत के अदना लोगों में से हूँ।

हिकायत :-

शैख़ अली रूदबारी रदियल्लाहु अन्हु की ख़ानकाह में दुरवेशों की एक जमायत आकर क़याम पज़ीर हुई इनमें से एक दुरवेश बीमार हो गया इसके साथी तीमारदारी कर कर के थक गये और उसकी अलालत लम्बी होती गई। दुरवेश के साथियों ने एक दिन शैख़ से उसके तूले मर्ज़ की शिकायत की शैख़ ने उसकी ख़िदमत अपने जिम्माली अगरचि नफ़्स बीच में हायल होना चाहता था मगर आपने उसकी मोखालफ़त की और उसकी तीमारदारी के लिये क़सम खाली। दुरवेश कुछ दिनों बाद इन्तक़ाल कर गया। ग़ुस्ल व कफ़न और नमाज़ जनाज़ा के बाद शैख़ ने क़ब्र में उतारकर जब उसके कफ़न का सर बन्द खोला तो दुरवेश ने दोनों आँखें खोल दीं और कहाँ

"बखुदा मैं अपनी वजाहत से रोज़े क़यामत आपकी मदद करूंगा जैसे अपनी नफ़्स की मोख़ालफ़त में आपने मेरी मदद की" (रौज़ुररियाहीन)

ईमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि की वफ़ात का वाक़्या :-

ईमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि की जब वफ़ात हुई और आपकी नमाज़ जनाज़ा अदा कर दी गई और आप को क़ब्र में रख दिया गया तो आपको क़ब्र में उतारते ही क़ब्र की मिटटी कस्तूरी की तरह महकने लगी लोग एक मुद्दत तक आपकी क़ब्र पर आते रहे और वह मिट्टी लेकर उसकी खुशबू पर तआजुब करते रहे। एक शख़्स ने बताया कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम को देखा कि आप के साथ सहाबा कराम

रदियल्लाहु अन्हु की जमाअत भी है आप यहाँ (क़ब्र की जगह) ही खड़े हैं मैंने आपकी ख़िदमत में सलाम पेश किया आपने मुझे सलाम का जवाब दिया मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आपके यहाँ तशरीफ़ फ़रमा होने की क्या वजह है? तो आपने फ़रमाया कि मोहम्मद बिन इस्माईल रहमतुल्लाहि अलैहि (बुखारी) का इन्तज़ार कर रहा हूँ वह शख़्स बयान करते हैं कि चन्द दिनों के बाद ही मुझे ख़बर मिल गई कि इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि का इन्तक़ाल हो गया है। बाद में पता चला कि आपकी वफ़ात का वक़्त वही है जिस वक़्त मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़्वाब में ज़्यारत की थी। (मिरक़ात जि. 1)

क़ब्र का सरसब्ज़ व शादाब होना :-

हज़रत उमर बिन ज़र से रिवायत है कि जब मुसलमान को क़ब्र में दाख़िल किया जाता है तो वह उसको पुकार कर कहती है कि फ़रमाबरदार है या नाफ़रमान है अगर वह नेक होता है तो क़ब्र के गोशे से एक पुकारने वाला पुकार कर कहता है कि ऐ क़ब्र! तू इस पर सरसब्ज़ व शादाब हो जा और इसके लिये रहमत बन जा क्योंकि यह अल्लाह का सबसे अच्छा बन्दा था और अब यह बुज़ुर्गी का हक़दार है।

(इब्न अबीअददुनिया)

मोमिन का क़ब्र में खुश होना :-

एक तवील हदीस के साथ हज़रत जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से यह भी मरवी है कि मोमिन को जब बताया जाता है कि अल्लाह तेरे लिये बजाये जहन्नम के जन्नत लिख दी है तो वह खुशी से कहता है कि मुझे इजाज़त दो ताकि मैं अपने घर वालों को बता कर आ जाऊँ लेकिन फ़रिश्ते इसको यहीं ठहरने का हुक्म देते हैं और काफ़िर को बताया जाता है कि अल्लाह तआला ने तेरे लिये बजाय जन्नत के जहन्नम कर दिया है।

(अहमद बे हक़ी)

मोमिन और मुनाफ़िक़ का फ़र्क़ :-

हज़रत जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स जिस हालत पर दुनिया से रुख़्सत हुआ है इसी पर उठेगा यानी मुसलमान ईमान पर और मोनाफ़िक़ अपने नफ़ाक़ पर उठाया जायगा। (तिबरानी)

हज़रत हुज़ैफा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि हमने हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के साथ एक जनाज़ा में शिरकत की जब आप एक क़ब्र पर पहुंचे तो उसके एक तरफ बैठ गये और इसको देखने लगे और फ़रमाने लगे कि इसमें मोमिन को इस तरह दबाया जाता है कि उसकी पस्लियाँ उखड़ जाती हैं। और काफ़िर की क़ब्र को आग से भर दिया जाता है। (अहमद बेहक़ी)

मोमिन का क़ब्र में सोना :-

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मौत के वक़्त जब इंसान की रूह निकलती है तो फ़रिश्ते कहते हैं कि पाक रूह पाक जिस्म की तरफ से आई फिर जब उसको घर से क़ब्र की तरफ़ ले जाते है तो वह जल्दी जाने को पसन्द करता है जब उसे क़ब्र में रख दिया जाता है तो आने वाला आता है और उसका सर पकड़ना चाहता है लेकिन उसका सजदा करना दरम्यान में आ जाता है और पेट पकड़ने के लिये आता है तो रोज़ा बीच में आ जाता है हाथ पकड़ने के लिये आता है तो सदक़ा बीच में आ जाता है पाँव पकड़ने के लिये आता है तो उसका क्याम बीच में में आ जाता है फिर उसके बाद मोमिन को कोई ख़तरा लाहक़ नहीं होता।

फ़िर जब उसे अपना मक़ाम और वह चीज़ें नज़र आती हैं जो उसके लिये तैयार की गई हैं तो कहता है या इलाही तू मेरी मंज़िल पर जल्दी पहुंचा दे। तो उससे कहा जाता है कि तेरे कुछ भाई और बहनें हैं जो अभी तक तेरे साथ शामिल नहीं हुए इसलिये तू ठंडी आँख सो जा और जब काफ़िर की रूह निकलती है तो फ़रिश्ते कहते हैं यह ख़बीस रूह ख़बीस जिस्म से निकलकर आती है फिर जब इसे घर से निकाला जाता है तो जिस क़द्र भी क़ब्र तक पहुंचने में ताख़ीर होती है पसन्द करता है और चिल्ला कर कहता है कि मुझको कहाँ ले चले हो? फिर जब क़ब्र में वह देखता है जो उसके लिये तैयार किया गया है तो कहता है इलाही! तू मुझे फिर दुनिया में भेज ताकि मैं अच्छे अमल कर सकूं तो उससे कहा जाता है कि जितना दुनिया को आबाद करना था तू आबाद कर चुका फिर उसकी क़ब्र इस पर इस क़द्र तंग कर दी जाती है कि उसकी पस्लियां टूट जाती हैं इसका आलम उस शख़्स का सा हो जाता है कि जिसको सांप डस ले कि वह सोते हुए भी घबराता है और ज़हरीले कीड़े मकोड़े उसकी तरफ़ दौड़ लगाते हैं। (इब्ने अबीअददुनिया)

"अज़ाबे क़ब्र"

अज़ाबे क़ब्र बरहक़ है जिसकी वजह मुर्दे के बुरे आमाल होते हैं जो वह दुनिया में करता है। अज़ाबे क़ब्र दर हक़ीक़त एक तरह की सज़ा है जो अल्लाह तआला ने बुराई करने वालों के लिये मोक़र्रर कर रखी है और यह सज़ा मौत के बाद बुरे लोगों के लिये फ़ौरन शुरू हो जाती है।

हज़रत शैख़ मोहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं कि अज़ाब का लफ़्ज़ अज़्ब से मशतक़ है जिस का मतलब रोकना और मना करना है कि अज़ाब इंसान को शरआ के अम्रो नही की मुख़ालफ़त से रोकता है। या अज़ाब बमानी ख़सो ख़ाशाक से मशतक़ है जो पानी में गिरता है और जैसा कि पानी में ख़सो ख़ाशाक गिरने से पानी मैला और गदला हो जाता है इसी तरह अज़ाब इंसान के आराम को तल्ख़ और बदमज़ा कर देता है बाज़ कहते हैं कि अज़ाब अज़्ब बमानी मीठे पानी से मशतक़ है कि अज़ाब में मुब्तलाशुदा इंसान के दुश्मन और बदख़्वाह को उसकी यह हालत मीठे पानी की तरह शीरीं और अच्छी महसूस होती है इसी मुनास्बत से इसका नाम अज़ाब रखा गया। (अशअतुललमआत)

अज़ाब के बारे में हुक्म इलाही :-

अज़ाब का आग़ाज़ क़ब्र की ज़िन्दगी में दाख़िल होने के फ़ौरन बाद शुरू हो जाता है। इसके मुतआल्लिक़ अल्लाह तआला ने फ़रमाया है। तर्जुमा - अपनी की हुई ख़ताओं के बाअस वह ग़र्क़ कर दिये गये। फ़िर फ़ौरन ही आग में दाख़िल कर दिये गये और उन्होंने अल्लाह के सिवा किसी को मददगार ना पाया। (नूह : 25)

तूफ़ाने नूह के वक़्त जब उनकी नाफ़रमान क़ौम सज़ा के तौर पर ग़र्क़ हो गई यानी जब सारे लोग मौत की आग़ोश में चले गये तो अल्लाह तआला ने उन्हें फ़ौरन आग के अज़ाब में मुब्तला कर दिया क्योंकि मौत के बाद उनमें क़ब्र की मंज़िल का आग़ाज़ हो गया तो इसी मंज़िल में अल्लाह तआला ने उस क़ौम को क़ब्र के अज़ाब में मुब्तला कर दिया।

एक और मुक़ाम पर इरशाद बारी तआला है।

(ऐ मुख़ातिब) काश कि तुम काफ़िरों को उस वक़्त देखते जब फ़रिश्ते उनकी जानें निकालते हैं उनके चेहरों और पीठों पर मारते हैं और कहते हैं कि आग की अज़ाब का मज़ा चखो यह उनके अमलों की सज़ा है जो उनके हाथों ने आगे भेजे हैं और बेशक अल्लाह अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं हैं। (अनफ़ाल 50 - 51)

इस आयत से भी अज़ाबे क़ब्र का सबूत मिलता है कि बुरे लोगों को अज़ाबे क़ब्र मौत के बाद ही शुरू हो जाता है और यह अज़ाब उन गुनाहों की सज़ा के तौर पर दिया जाता है जो इंसान ने मरने से पहले किये थे।

एक और मुक़ाम पर इरशाद हुआ है कि - तर्जुमा और अलबत्ता इस बड़े अज़ाब से पहले छोटे अज़ाब में मुब्तला करेंगे शायद कि वह हमारी तरफ़ रूजू कर लें। (सजदा - 21)

इस आयत के मुताबिक़ छोटे अज़ाब से मुराद क़ब्र का अज़ाब है जिसके लिये आयत में अज़ाब अदना के अलफ़ाज़ इस्तेमाल हुए हैं यह अज़ाब चूंकि जहन्नम के अज़ाब से पहले होगा इसलिये अहले इल्म ने इससे मुराद अज़ाब क़ब्र लिया है और एक मुक़ाम पर इरशाद हुआ है कि तर्जुमा -

पस अल्लाह ने उसे उनके बुरे अज़ायम से बचा लिया जिसका उन्होंने हीला किया था और फ़िरऔनियों को बुरे अज़ाब ने आकर घेर लिया। जहन्नम की आग जिसमें उन्हें सुबह व शाम रखा जाता है और क़यामत क़ायम होने पर आले फ़िरऔन को शदीद अज़ाब में मुब्तला कर दिया जायगा। (मोमिन - 45 ता 46)

इन आयात से मालूम होता है कि फ़िरऔनियों को मौत के बाद बुरे अज़ाब में मुब्तला कर दिया गया। और यह अज़ाब इस तरह है कि सुबह व शाम जहन्नम की आग की तपिश से उनके जिस्मों को गरम किया जाता है जो रोज़े क़यामत जारी रहेगा। इसके बाद उन्हें बड़े अज़ाब में मुब्तला कर दिया जायगा क़यामत से पहले के अज़ाब से मुराद अज़ाबे क़ब्र है।

बेशक ज़ालिमों के लिये इससे पहले भी एक अज़ाब है मगर उनमें अक्सर लोगों को इसका इल्म नहीं। (तूर - 47)

इस आयत में यह जो बताया गया है कि ज़ालिमों के लिये इस बड़े

दिन के अज़ाब के अलावा भी एक अज़ाब है इससे मुराद भी अज़ाबे क़ब्र है।

एक और मुक़ाम पर अल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि :-

अज़ाब इसी तरह का होता है लेकिन आख़िरत का अज़ाब सबसे बड़ा है काश कि उन्हें यह बात मालूम होती। (क़लम - 33)

अज़ाब इसी तरह का होता है, से भी अज़ाबे क़ब्र मुराद है फिर फ़रमाया गया है कि आख़िरत का अज़ाब बड़ा है यानी इस बड़े अज़ाब से पहले जो अज़ाब दिया जायगा वह क़ब्र का ही अज़ाब है। एक और मुक़ाम पर इरशाद रब्बानी है कि :-

पस अल्लाह ने उसे दुनिया और आख़िरत के अज़ाब में पकड़ा। (नाज़ियात - 25)

क़ुरआन मजीद की इनआयात से मालूम हुआ कि मौत के बाद बुरे लोगों को क़ब्र का अज़ाब लाज़िम होगा। लिहाज़ा अज़ाबे क़ब्र को तस्लीम करना भी ज़रूरी है। लिहाज़ा अज़ाबे क़ब्र मौत के बाद शुरू होता है जबकि मय्यत अपने मुक़ाम क़ब्र पर पहुंच जाती है यह अज़ाब उन गुनाहों की सज़ा के तौर पर होता है जो इंसान मरने से पहले करता है। काफ़िर को अज़ाबे क़ब्र दायमी होता है जबकि गुनहगार मुसलमान का अज़ाबे क़ब्र आरज़ी होगा। कुछ अरसा बाद वह ख़त्म भी हो सकता है या इसमें कमी भी हो सकती है अल्लाह बेहतर जानता है।

अज़ाबे क़ब्र की नौईअत :-

इसके बारे में शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी रहम. ने लिखा है कि अज़ाबे क़ब्र और अमूर बरज़ख़ की तस्दीक़ में ज़्यादा सही, ज़्यादा हम महफ़ूज़ और ज़्यादा क़वी और मज़बूत बात यह है कि इस हक़ीक़त पर ईमान लाया जाये कि फ़रिश्ते सांप, बिच्छू, उनका मुर्दे को काटना जैसा कि अहादीस में आया है कि सब अल्लाह के हुक्म से वाक़ेअ् और हक़ीक़तन मौजूद है महज़ मिसाल व ख़्याल में उनका वजूद नहीं है और हमें जो क़ब्र में कोई चीज़ नज़र नहीं आती और हम इसमें कुछ नहीं पाते तो इससे कोई नुक़सान और ख़लल बाक़ि नहीं होता आलमें मल्कूत की आशिया को सर की आँखों से नहीं देखा जा सकता इसके लिये दूसरी निगाह की ज़रूरत है वह इससे देखी जा सकती है और अगर सर की आँख से दिखाना चाहें तो इस आँख से भी देखा जा सकता है। तुझे

मालूम नहीं कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम पैग़म्बर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के पास आते थे बैठते थे बातें करते थे और अल्लाह तआला के पैग़ामात आपको पहुंचाते थे उस वक़्त सहाबा किराम रदियल्लाहु अन्हु आपकी मजलिस में मौजूद होते थे और उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता था मगर वह सब बातों पर ईमान रखते थे और अगर अज़ाबे क़ब्र के सबूत में किसी शख़्स को शक व तरद्दुद हो तो उसे उसके मोशहदा की तलब के बजाय अपने ईमान की फ़िक्र करना ज़्यादा बेहतर है जब दिल में नूरे ईमान आ गया और इस नूर से सीना कुशादा हो गया तो फिर कोई मुश्किल बाक़ी नहीं रहती अल्लाह तआला अक़्ल के अंधापन और फ़लसफ़े की तारीकी से अपनी हिफ़ाज़त में रखे और अल्लाह ही हिदायत देने वाला है।

उल्मा का इसमें इख़्तेलाफ़ है कि मुर्दे को क़ब्र में ज़िन्दा करके अज़ाब दिया जाता है या रूह को इसके सामने या मुक़ाबिल कर देते हैं या किसी और तरीक़ा से जो अल्लाह तआला चाहता है। अज़ाब की कोई भी नौईयत हो ठीक है हमारे लिये इसकी हक़ीक़त का पता चलाने का कोई रास्ता और ज़रिया नहीं मगर हक़ यह है कि मुर्दे को ज़िन्दा करके अज़ाब दिया जाता है। जैसाकि ज़ाहिर अहादीस इस पर दलालत करती हैं। उलमा ने यह भी कहा है कि मुर्दे के सारे जिस्म में ज़िन्दगी डाल दी जाती है जिस तरह दुनिया में थी या जिस्म के हिस्सों में से किसी एक हिस्से के साथ रूह को मोताल्लिक़ कर दिया जाता है उल्माए शफ़िया में से एक हकीम व दाना ने कहा है अगर यह क़ौल सही बेहतर और मुनासिब हो तो फिर यह जुज़्व दिल ही हो सकता है जो ज़िन्दगी का सर चशमा और इल्म व इद्राक का महल व मरकज़ है और अज़ाबे क़ब्र के बारे में अगर सिर्फ़ इसी क़दर यक़ीन हो कि अल्लाह तआला मुर्दे में एक ऐसी हालत पैदा कर देता है जिसके ज़रिये वह रंज व राहत का अहसास करता है तो सेहते एतक़ाद के लिये इतना भी काफ़ी है। (अशअतुल लमआत)

अज़ाब के बारे में रसूले अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का एक और ख़्वाब :-

हज़रत समरह बिन जिन्दब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम कभी कभार अपने सहाबा रदियल्लाहु अन्हु से दरयाफ़्त फरमाते क्या तुममें से किसी ने आज ख़्वाब देखा है तो एक रोज़

आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आज रात मेरे पास दो शख़्स आये और उन्होंने मुझसे कहा कि हमारे साथ चलो। मैं उनके साथ चला वह मुझको एक मुक़द्दस मुक़ाम में ले आये और हमने देखा कि एक शख़्स लेटा हुआ है और उसके सिरहाने एक शख़्स पत्थर उठाये हुए है और पै दर पै पत्थरों से उसके सर को कुचल रहा है। सर हर मर्तबा कुचलने के बाद ठीक हो जाता है मैंने इन फ़रिश्तों से कहा सुब्हान अल्लाह! यह कौन हैं? वह कहने लगे कि आगे चलिये चुनांचे हम एक ऐसे शख़्स के पास पहुंचे जो गुद्दी के बल सो रहा था और एक शख़्स लोहे का चिमटा लिये हुए इस पर खड़ा था और वह उसकी बांछें एक तरफ़ से पकड़कर उसकी गुद्दी की तरफ़ खेंचता था और उसके नथुने और आँखें भी गुद्दी की तरफ़ और फिर दूसरी जानिब से भी ऐसा ही करता था अभी एक जानिब से अपना काम मुकम्मल कर पाता था कि दूसरी जानिब ठीक हो जाती फिर वह इसी काम में लग जाता मैंने इनसे पूछा यह कौन हैं? वह कहने लगे आगे चलिये हम आगे चलकर एक तंवर पर बैठे जिसमें से शोर व ग़ोग़ा की आवाज़ें आ रही थीं हमने अन्दर झांककर देखा तो इसमें मर्द और औरतें नंगे थे नीचे से उनकी तरफ़ शोले लपकते थे जब शोले उनकी तरफ़ बढ़ते थे तो वह शोर व गुल करते थे मैंने पूछा कि यह कौन हैं कहा कि आगे चलिये हम आगे चलकर एक नहर पर पहुंचे जो सुर्ख़ ख़ून की थी नहर में एक आदमी तैर रहा था और किनारे पर एक आदमी बहुत से पत्थर लिये हुए खड़ा है यह तैरने वाला शख़्स उस किनारे वाले शख़्स के सामने आकर मुँह फ़ाड़ता है तो यह उसके मुँह में एक पत्थर डाल देता है फिर वह कुछ देर तैर कर वापिस आता था और मुँह खोलता था और यह फिर उसके मुँह में पत्थर रख देता था और यह सिलसिला बराबर जारी था मैंने इससे पूछा यह कौन हैं वह कहने लगे कि आगे चलिये फिर हम आगे चलकर एक बदशक्ल आदमी के पास पहुंचे उसके पास आग थी वह इसके गिर्द चक्कर लगा रहा था मैंने इससे पूछा यह कौन है? वह कहने लगे कि आगे चलिये फिर हम एक सरसब्ज़ बाग़ में पहुंचे जिसमें फ़सले बहार का हर फूल था और बाग़ में एक शख़्स इस क़दर लम्बा था कि उसका सर आसमान से लगता था और उसके पास कुछ बच्चे भी थे जिनको मैंने कभी ना देखा था वह कहने लगा आगे चलिये तो हम एक बहुत वसी बाग़ में पहुंच गये जिससे बड़ा बाग़ मैंने आज तक कभी ना देखा था और ना ही कभी इससे ख़ूबसूरत बाग़ नज़र से गुज़रा था उन्होंने मुझसे कहा इसमें चलिये। हम उसके अन्दर दाख़िल

होकर एक ऐसे शहर में पहुंचे जो सोने और चांदी की ईंटों से बनाया गया था। हमने शहर के दरवाज़े पर पहुंच कर उसको खुलवाया जब अन्दर दाख़िल हुए तो वहाँ के लोग कुछ अजीब ही थे उनका कुछ जिस्म तो ख़ूबसूरत था और कुछ बुरा था। इन दो फ़रिश्तों ने उनसे कहा कि जाओ और इस नहर में दाख़िल हो जाओ सामने एक नहर थी जिसका पानी दूध की मानिंद सफ़ेद था वह इसमें दाख़िल हो गये जब वापिस आये तो उनकी बदसूरती ख़ूबसूरती में बदल चुकी थी। वह दोनों फ़रिश्ते कहने लगे कि यह जनाते अदन है और यह आपका मुक़ाम है अब जो मैंने नज़र उठा कर देखा तो एक सफ़ेद महल बादल की तरह था मैंने उनसे कहा कि बारकअल्लाह लकोमाँ अब मुझको छोड़ दो ताकि मैं अपने महल में चला जाऊं तो वह कहने लगे कि आप दाख़िल तो होंगे लेकिन अभी नहीं। मैंने उनसे कहा कि वह तमाम चीज़ें जो रात को देखी थीं उनको तफ़सील से बयान करो। उन्होंने कहा पहला शख़्स जो आपने देखा था वह था जिसने क़ुरआन पढ़कर भुला दिया था और फ़र्ज़ नमाज़ों के वक़्त सो जाया करता था उसके साथ यह बरताओ क़यामत तक होगा और दूसरा शख़्स झूठा था उसके साथ यह बरताओ क़यामत तक होता रहेगा और नंगे मर्द और औरतें ज़ानी और ज़ानीयां थीं और नहर में तैरने वाला सूदख़्वार था और वह आग के पास घूमने वाला शख़्स मालिक है जो जहन्नम पर मोक़र्रर है और बाग़ में खड़ा होने वाला दराज़ क़द शख़्स हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं और उनके पास खड़े होने वाले बच्चे वह हैं जो बचपन में वफ़ात पा गये। सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम क्या इनमें मुशरिकीन के बच्चे भी शामिल हैं? आपने फ़रमाया हाँ! और वह लोग जो आधे ख़ूबसूरत और आधे बदसूरत थे वह अच्छे, बुरे दोनों काम करने वाले थे। अल्लाह तआला ने इनसे दर गुज़र फ़रमाया और मैं जिब्रील अलैहिस्सलाम हूँ और मेरे साथी हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम हैं।

उलमा ने फ़रमाया कि यह ख़्वाब अज़ाबे बरज़ख़ में नस्स है क्योंकि अंबिया अलैहिस्सलाम का ख़्वाब वहीए इलाही हुआ करता है।

अज़ाबे क़ब्र के बारे में क़वी दलील :-

एक मजूसी अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उसके पास तीन मुर्दा सरों की खोपड़ियां थीं उसने कहा कि ऐ उमर रदियल्लाहु अन्हु तुम्हारे साहब (पैग़म्बर सल्लल्लाहू

अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी दूसरे दीन पर मरेगा वह आग में जलाया जायेगा इस मजूसी ने यह आयत पढ़ी। तर्जुमा - सुबह और शाम यह लोग आग के सामने लाये जाते हैं।

हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया बेशक हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का फ़रमान सही है यह सुन कर उस मजूसी ने वह तीनों सर निकाले और कहा कि यह सर मेरे बाप का है यह सर मेरी माँ का है और यह सर मेरी बहन का है यह तीनों मजूसी दीन पर मरे हैं मैं अपना हाथ इन खोपड़ियों पर रखता हूँ तो मुझे गर्मी महसूस नहीं होती। (यानी तुम्हारे पैग़म्बर के क़ौल के मोताबिक इन खोपड़ियों को गर्म होना चाहिये क्योंकि यह आग पर पेश की जाती हैं) यह सुनकर हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अपने ख़ादिम को भेजकर हज़रत अली करमल्लाहू को बुलाया। जब हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाये तो हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु ने मजूसी से कहा कि अच्छा अब तू अपने एतराज़ को दुहरा दे उसने एतराज़ दुहराया। एतराज़ सुनकर हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हु ने एक लोहा और पत्थर मंगवाया जब हाज़िर किया गया तो आपने मजूसी से कहा कि तू इस लोहे और पत्थर पर हाथ रखकर बता कि गर्म है या सर्द मजूसी ने हाथ रखकर कहा यह तो सर्द है। हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हु ने फिर फ़रमाया कि तू लोहे को पत्थर पर मार जब मजूसी ने लोहे को पत्थर पर मारा तो उसमें से चिंगारी निकल पड़ी इस पर हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हु ने मजूसी को मुख़ातिब करके फ़रमाया कि जिस तरह अल्लाह तआला ने ठंडे पत्थर और लोहे के दरम्यान आग पैदा कर दी है इसी तरह वह उस चीज़ पर भी क़ादिर है जिन खोपड़ियों में तुझे गर्मी महसूस नहीं होती उनके अन्दर गर्मी पैदा कर दी हो और तुझे महसूस और मालूम न हो रही हो यह खोपड़ियां जिनको तू सर्द महसूस कर रहा है हालांकि वह अल्लाह तआला की आग में जलती रहती हैं यह बात सुनकर मजूसी ला जवाब हो गया।

अज़ाबे क़ब्र बरहक़ है :-

बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत आईशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अज़ाबे क़ब्र बरहक़ है।

इब्न अबी शैबह और शैख़ैन ने हज़रत आईशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

कि क़ब्र वालों को ऐसा अज़ाब दिया जाता है जिसको चौपाये सुनते हैं।

इब्न असाकर ने हज़रत वाथला बिन असक़आ रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर फिरक़ा क़ददरिया या मर्जिया में से किसी मुर्दे की क़ब्र तीन रोज़ के बाद खोदी जाय तो उसका मुँह क़िबला की तरफ़ से पलटा हुआ होगा।

इब्न अबी शैबह और मुसलिम ने हज़रत ज़ैद बिन साबित से रिवायत किया कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम नज्जार के बाग में अपने खच्चर पर सवार थे और हम आप के साथ थे कि इतने में वह खच्चर शोख़ी करने लगा अब जो देखा तो छः या पाँच या चार क़ब्रें उसके क़रीब थीं सय्यदे आलम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने पूछा कि इन क़ब्र वालों को कौन पहचानता है? एक शख़्स बोला कि मैं पहचानता हूँ। आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ये कब और किस हाल में मरे? उसने कहा कि हालते शिर्क में मरे तो आपने फ़रमाया कि इन लोगों को क़ब्र में अज़ाब हो रहा है अगर तुम्हारे मर जाने का ख़तरा ना होता तो मैं दुआ करता कि वह अज़ाब तुमको सुना दिया जाता।

इब्न अबीअददुनिया ने अबू जरीस से और उन्होंने अपनी माँ से रिवायत किया कि जब अबू जाफ़र ने कूफ़ा की ख़न्दक़ खोदी तो लोगों ने अपने मुर्दों को मुन्तक़िल करना शुरू किया तो एक नौजवान की क़ब्र में यह हालत थी कि वह अपने हाथ को खुद चबा रहा था।

(इब्ने अबी अददुनिया)

इब्न अबीअददुनिया ने फ़ज़ल बिन यूनुस से रिवायत किया वह कहते हैं कि हमें मालूम हुआ है कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने मुस्लमा बिन अब्दुलमलिक से कहा कि ऐ मुस्लमा तेरे बाप को किसने दफ़न किया? तो उसने कहा मेरे फ़लां गुलाम ने फिर उन्होंने दरयाफ़्त किया कि वलीद को किसने दफ़न किया? उसने कहा मेरे फ़लां गुलाम ने तो आपने कहा अब मैं तुमको वह बात बताता हूँ जो इस दफ़न करने वाले ने मुझे बताई। उसने मुझे बताया कि जब इसने तेरे बाप और वलीद को क़ब्र में रखा और उनकी गिरह खोलनी चाही तो देखा कि उनके मुँह गुद्दियों की तरफ फिर गये थे।

जुमा के दिन अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ होना :-

याफ़ी ने कहा कि मय्यत जुमा के दिन अज़ाब से महफ़ूज़ रहती है क्योंकि यह दिन बहुत ही अज़्मत वाला है। लेकिन यह बात काफ़िरों के लिये नहीं है। बल्कि गुनहगार मुसलमानों के लिये है। लेकिन नसफ़ी ने इसे आम रखा और कहा कि जुमा के दिन और रात में नीज़ पूरे रमज़ान के महीना में काफ़िर से भी अज़ाब ख़तम हो जाता है और गुनाहगार मुसलमान से जुमा के दिन और रात में अज़ाब उठ जाता है और फिर क़यामत तक दोबारा नहीं होता और जुमा के दिन या रात में इन्त क़ालकर जाये तो उसको कम अज़ाब होता है और फिर हमेशा के लिये ख़त्म हो जाता है।

हिकायत :-

एक दफ़ा का वाक़िया है कि एक शख़्स किसी दोस्त के भाई की ताज़ियत को गया तो देखा कि वह बहुत परेशान है दरयाफ़्त करने पर बताया कि जब मैं उसे दफ़न करके फ़ारिग़ हुआ तो मैंने क़ब्र से कराहने की आवाज़ सुनी। मैंने जल्दी से क़ब्र को खोला तो मुझे किसी ने आवाज़ दी बन्दा खुदा क़ब्र ना खोद चुनांचे फिर मैंने मिटटी उसी तरह डाल दी। अभी थोड़ी दूर ही जाने पाया था कि फिर वही आवाज़ आई। मैंने कहा बखुदा अब ज़रूर खोदूंगा अब जो मैंने क़ब्र खोदकर देखी तो उसकी गर्दन में आग का हार पड़ा था और तमाम क़ब्र आग से रौशन थी तो मैंने चाहा कि यह हार उसकी गर्दन से हटा दूं। तो मैंने उस पर अपना हाथ मारा तो मेरी उंगलियां जलकर ख़ाक स्तर हो गई। उसने हमें अपना हाथ दिखाया तो उसकी चार उंगलियां ग़ायब थीं तो मैंने औज़ाई से यह तमाम माजरा कहा और एतराज़ किया कि यहूदी, बसरानी, और मजूसी मरते हैं तो उनका यह हाल नहीं देखा जाता और गुनहगार मुसलमन का यह हाल है तो आपने फ़रमाया कि उनके जहन्नमी होने में तो कोई शक नहीं लेकिन अहले तौहीद में यह हालत दिखाई जाती है ताकि वह इबरत हासिल करें। (अयुनुल हिकायात)

हिकायत :-

अबू इसहाक़ इब्राहीम का कहना है कि हमारे पास एक अंधा कफ़न चोर था लोगों से भीक मांगता था और कहता था कि जो मुझे कुछ देगा मैं उसे एक अजीब बात सुनाउंगा और जो ज़ायद देगा उसे मैं अजीब

चीज़ दिखाउंगा। रावी कहते हैं कि किसी ने उसे कुछ दिया तो मैं पास खड़ा हो गया। उसने अपनी आँखें दिखाई मैंने देखा तो वह गुद्दी तक धंसी हुई थी इसके मुँह से गुद्दी के पीछे का मंज़र नज़र आता था फिर उसने बताया कि मैं अपने शहर का कफ़न चोर था और लोग मुझसे डरते थे मैं किसी की परवाह न करता था इत्तफ़ाक़न क़ाज़िये शहर बीमार पड़ गया और उसके बचने की कोई उमीद ना रही तो उसने सौ दीनार मेरे पास भेजे और कहला भेजा कि मैं अपनी परदा दारी तुझसे इन सौ दीनार के एवज़ खरीदना चाहता हूँ मैंने वह ले लिये फिर इत्तफ़ाक़न वह सेहतयाब हो गया और फिर बीमार होकर इन्तक़ाल कर गया मैंने कहा वह अतीआ तो पहले मर्ज़ का था इसलिये मैंने इसकी क़ब्र खोदी तो क़ब्र में अज़ाब के आसार थे और क़ाज़ी परागन्दा बाल सुर्ख़ आँखों से बैठा हुआ था अचानक मैंने अपने घुटने में दर्द महसूस किया और किसी ने मेरी आँखों में उंगलियां डालकर मुझे अंधा कर दिया और कहा कि ऐ अल्लाह के दुश्मन! तू अल्लाह के भेदों पर क्यों मत्तला होता है।

(शरह अस्सदूर)

हिकायत :-

हाफ़िज़ अबू मुहम्मद खिलाल ने किताब करामातुल औलिया में अपनी सनद से रिवायत की कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन हाशिम ने कहा कि मैं एक मय्यत को नहलाने गया जब मैंने उसके जिस्म से कपड़ा खोला तो उसकी गर्दन में सांप लिपटे हुए थे मैंने इनसे कहा कि आपको इस पर मोसल्लत किया गया है और ग़ुस्ल देना हमारे यहाँ मसनून है तो अगर आप इजाज़त दें तो हम इसको ग़ुस्ल दे दें और फिर आप अपनी जगह वापिस आ जायें तो वह सांप हट कर एक कोने में चले गये और जब हम ग़ुस्ल से फ़ारिग़ हुए तो वह अपनी जगह वापिस आये यह शख़्स बे दीनी में मशहूर था।

कीलों के अज़ाब की हिकायत :-

एक दफ़ा का वाक़िया है एक शख़्स बग़दाद के लोहारी गांव में आया और छोटी छोटी कीलें फरोख़्त कीं लोहार ने इनको पिघलाने की बेहद कोशिश की लेकिन नाकाम रहा बिलआख़िर उसने बेचने वाले को तलाश किया और पूछा कि यह कीलें तू कहाँ से लाया है पहले तो उसने बताने में पस व पेश की और फिर बाद में उसने बताया कि एक क़ब्र खुली हुई

देखी इसमें एक मुर्दे की हडिडयों के साथ कीलें लगी हुई थी मैंने निकालने की कोशिश की लेकिन ना निकलीं बिलआख़िर मैंने पत्थर से हडिडयों को तोड़कर यह कीलें जमा कर लीं। (किताबुर्रूह)

इब्न अबी अददुनिया ने अब्दुल मोमिन बिन अब्दुल्लाह बिन ईसा से रिवायात किया कि एक कफ़न चोर ने तोबा कर ली तो उससे दरयाफ़्त किया गया कि तूने अपने उस जमाने में जो अजीबतर चीज़ देखी हो वह बयान कर। वह कहने लगा कि मैंने एक शख़्स की क़ब्र खोदी तो उसके तमाम जिस्म में कीलें लगी हुई थीं और एक बड़ी कील सर में पैवस्त थी और दूसरी दोनों टांगों में। दूसरे कफ़न चोर से पूछा गया तो वह कहने लगा कि मैंने एक खोपड़ी देखी। जिसमें सीसा पिघलाकर भरा गया था।

लोहे के हथौड़े से अज़ाब का वाक़िया :-

हारिस बिन मिन्हाल कहते हैं कि एक बार मैं ईदगाह में गया वहाँ मेहराब में सो गया वहाँ एक क़ब्र थी। मैंने आवाज़ सुनी कि एक लोहे के हथौड़े से इस मय्यत को मार रहे हैं इसके गले में एक ज़ंजीर है और इसका चेहरा स्याह हो गया है और आँखें नीली पड़ गई हैं वह कहता है हाय मुझ पर क्या बला नाज़िल हो गई है। अगर दुनिया वाले मुझको देखें तो कोई इनमें से गुनाह का इरादा ना करे। वल्लाह मुझसे ख़ताओं की बाज़पुर्स हुई और उसने मुझे हलाक कर डाला कोई है जो मेरे घर वालों को ख़बर दे। हारिस कहते हैं कि मैं नींद से जाग उठा और मैं हैबत व ख़ौफ़ में था मैंने इसके घर वालों की तलाश की। तीन लड़कियां पाईं मैंने उन्हें इसके हाल की ख़बर दी और उसके दोस्तों से उसका माजरा बयान किया वह सब उसकी क़ब्र पर आये और रोये और अल्लाह से उसकी मग़फ़िरत की दुआ की। बाद चन्द रोज़ कि मैं फिर उसी क़ब्र के पास गया और वहीं उससे मुत्तसिल सो गया और उसे बड़ी अच्छी हालत में देखा उसके सर पर एक ताज था और उसके पाँव में सोने की नाअलैन थीं। उसने मुझसे कहा जज़ाक अल्लाह अन्नी ख़ैरा। तूने मेरी बेटियों और दोस्तों को ख़बर की और उन्होंने मेरी मग़फ़िरत की दुआ की। (सच्ची हिकायात)

कुफ़्र का अज़ाबे क़ब्र :-

इब्न अबी शैबह ने अकरमा से अल्लाह तआला के क़ौल "कमायईसल कुफ़्फ़ारो मिन असहाबिल क़ुबूर" की तफ़सीर यह बयान की कुफ़्फ़ार जब

क़ब्र में रूसवाकुन अज़ाब का मुशाहदा करेंगे तो रहमते इलाही से महरूम हो जायेंगे।

अहमद ने हज़रत आईशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि काफ़िर पर दो सांप मोकर्रर होंगे एक सर की जानिब से दूसरा पांव की जानिब से। वह उसको क़यामत तक काटते रहेंगे। (अहमद)

इब्न मन्दाह ने हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मोमिन की क़ब्र में बाग़ होता है और उसकी क़ब्र को सत्तर गज़ कुशादा कर दिया जाता है और इसमें चौदहवीं के चांद की तरह रौशनी की जाती है फिर आपने फ़रमाया कि तुमको यह आयत "फईन्ना लहू मयीशतन ज़नका" मालूम है कि किसके बारे में नाज़िल हुई। तो सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया "अल्लाहो रसूलहू आलमो" तो आपने फ़रमाया कि यह काफ़िर के अज़ाबेक़ब्र में निनानवे अज़दहे मोसल्लत कर दिये जाते हैं जो क़यामत तक इस पर फुंकारते रहेंगे और उसे हर वक़्त डसते रहेंगे।

इब्न मन्दह ने हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि मैं बद्र के क़रीब से गुज़र रहा था कि अचानक एक शख़्स गडढ़े से निकला जो गर्दन में ज़ंजीर रखता था उसने मुझे आवाज़ देते हुए कहा है ऐ अब्दुल्लाह! मुझे पानी पिलाइये अब मुझे मालूम नहीं कि उसने मेरा नाम लेकर पुकारा या अरब के तरीक़े पर पुकारा इसके पीछे एक आदमी कोड़ा लिये हुए ज़ाहिर हुआ। वह मुझसे कहने लगा कि ऐ अब्दुल्लाह! तुम इसको पानी ना पिलाओ क्योंकि यह हालते कुफ़्र में है फिर उसको कोड़े से मारा हत्ता कि वह अपने गडढ़े की तरफ़ वापिस लौट गया तो मैं हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और वाक़िया अर्ज़ किया तो आपने फ़रमाया कि क्या तुमने उसको देखा? मैंने कहा हाँ! तो आपने फ़रमाया वह अल्लाह तआला का दुश्मन अबू जहल था और यह इसका अज़ाब है क़यामत तक। (तिबरानी)

हशशाम बिन अमार ने किताबुल बआस में अपनी सनद से रिवायत किया है कि एक शख़्स जिसका आधा सर और आधी दाढ़ी सफ़ेद थी। हज़रत उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु ने आने की वजह दरयाफ़्त की। उसने बताया कि मैं बनी फ़्लाँ के क़ब्रिस्तान से गुज़रा तो मैंने देखा कि एक

शख़्स आग का कोड़ा लिये हुए दूसरे को पकड़ रहा है और जब वह इसको पकड़ लेता है तो कोड़ा उसे मारता है जब वह मारता था तो सर से लेकर पाँव तक आग में वह इंसान डूब जाता था वह शख़्स दौड़कर मेरी पनाह में आया और कहा कि ऐ अल्लाह के बन्दे! मेरी फरयाद रसी करो तो पकड़ने वाले ने कहा कि ऐ बन्दे खुदा इसकी मदद ना करना क्योंकि यह बहुत ही बुरा काफ़िर है। तो हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि इसीलिये तो तुम्हारे नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने अकेला सफ़र करने की ममानियत फ़रमाई है।

हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम हज़रत अबूतल्हा रदियल्लाहु अन्हु के खजूर के बाग़ में चल रहे थे और हज़रत बिलाल रदियल्लाहु अन्हु उनके पीछे थे। आपने फ़रमाया ऐ बिलाल रदियल्लाहु अन्हु! क्या तुम वह सुन रहे हो जो मैं सुन रहा हूँ? इस क़ब्र वाले को अज़ाब दिया जा रहा है। पस इसके बारे में दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि वह यहूदी था। (अहमद)

मोनाफ़क़्त बाअसे अज़ाब है :-

शबे मेराज नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम को ऐसे लोगों से गुज़र हुआ जिनकी आँखों, कानों और नाक से आग के शोले निकल रहे हैं। इनमें से हर शख़्स पर दो फ़रिश्ते अज़ाब देने के लिये मोकर्रर हैं उनके हाथों में आग के गुर्ज़ हैं जिनसे वह उनको सज़ा दे रहे हैं। गुर्ज़ से सज़ा कितनी अज़ीम होगी इसका अन्दाज़ा तो इससे लगाया जा सकता है कि इस गुर्ज़ का मामूली सा हिस्सा अबू क़बीस पहाड़ पर पड़े तो वह भी रेज़ा रेज़ा हो जाये। नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने जब इस क़ौम के मोतअलिक़ सवाल किया कि यह कौन लोग हैं? तो जिब्रील अमीन ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह यह दग़ा बाज़ और मुनाफ़िक़ लोग हैं।

(मआरिजूल नुबूव्वत जि. 3)

हज़रत अमार बिन यासिर रदियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। तर्जुमा जिस शख़्स के दुनिया में दो चेहरे हुए क़यामत के दिन उसकी आग की दो ज़बानें होंगी।

यानी दुनिया में जब दग़ाबाज़ी करता रहा तो क़यामत के दिन उसे आग की दो ज़बाने अता की जायेंगी। इस तरह वह हर वक़्त अज़ाब में मुब्तला रहेगा किसी वक़्त तख़्फ़ीफ़ नहीं होगी क्योंकि जो अज़ाब हमावक़्त

मुँह में रहे उससे तख़्फ़ीफ़ कैसे मुमकिन है।

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़यामत के दिन बदतरीन लोग वह होंगे जो दो चेहरों वाले हैं। इधर आये और बात की, उधर गये और बात की। एक रिवायत में इस तरह है "इधर आये और मुँह से, उधर गये और मुँह से, उधर गये और मुँह से (बुख़ारी व मुस्लिम)

नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़यामत के दिन तमाम मख़्लूक़ से अल्लाह तआला को ना पसन्द वह लोग होंगे जो झूटे, मोतकब्बिर और अपने मोमिन भाईयों के लिये सख़्त खोट और बुग़ज़ रखने वाले होंगे और जब उनसे मिलेंगे तो बड़ी आजज़ी का इज़हार करें। जब उनको अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की तरफ़ बुलायें तो देर करें और जब उनको शैतान और उसके हुक्म की तरफ बुलायें तो जल्दी करें।

क़त्ल का अज़ाब :-

नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का मेराज की रात ऐसी क़ौम पर गुज़र हुआ जिनको फरिशते आग की छुरियों से ज़बह कर रहे थे। उनके गले से स्याह खून जारी होता है फिर उनको जिन्दह कर दिया जाता है फिर ज़बह कर दिये जाते हैं यह सिलसिला इसी तरह जारी रहता है नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने पूछा यह कौन लोग हैं तो जिब्रील अमीन ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! यह वह लोग हैं जो नाहक़ मुसलमानों को क़त्ल करते थे।

(रियाज़ुल अज़हार सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम 371)

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया और जो किसी मोमिन को जान बूझकर इरादतन क़त्ल करे पस उसकी सज़ा दोज़ख़ है इसमें बहुत रहेगा इस पर अल्लाह का ग़ज़ब है और उसने लानत की और उसके लिये बड़ा अज़ाब तैयार किया। (4:93)

अबू नईम ने अपनी सनद से ज़ैद बिन असलम से रिवायत किया कि एक शख़्स कशती में जा रहा था कि कशती टूट गई तो वह एक तख़्ता से चिमट गया तख़्ता ने उसको एक ऐसे मुक़ाम पर जा फेंका जो जज़ीरा था। उसने देखा कि पानी एक वादी की तरफ जा रहा है यह भी पानी की सिमत पर चला आया। आख़िर में उसने देखा कि एक शख़्स को

ज़ंजीरों से जकड़ कर पानी में लटकाया हुआ है लेकिन उसका मुँह बावजूद कोशिश कि पानी तक नहीं पहुंचाता। वह मुझसे दरख़ास्त करने लगा कि मुझे पानी पिलाइये। मैंने कहा तेरी हालत यह क्यों है? उसने जवाब दिया कि मैं आदम अलैहिस्साम का लड़का हूँ सबसे पहले मैंने अपने भाई का क़त्ल किया अब जो कोई भी क़त्ल करता है तो मुझे ज़रूर सज़ा मिलती है।

इब्न अबी अददुनिया ने किताब मनआश बादल मौत में अपनी सनद से अब्दुल्लाह नामी एक शख़्स से रिवायत किया कि वह और उसकी क़ौम के चन्द और अफ़राद समुंद्री सफ़र पर रवाना हुए। इत्तफाक़न चन्द रोज़ तक समुंद्री रास्ता उन पर तारीक रहा चन्द दिन बाद रौशनी हुई तो एक बस्ती आ गई। अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैं पानी की तलाश में रवाना हुआ तो बस्ती के दरवाज़े बन्द थे मैंने बहुत आवाज़े दीं कोई जवाब ना आया। इसी असना में दो शहसवार ज़ाहिर हुए उनमें से हर एक के नीचे एक सफ़ेद चादर थी वह कहने लगे ऐ अब्दुल्लाह! इस गली में दाख़िल हो जाओ तो तुम एक मोमिन के पास पहुंच जाओगे हौज़ में से पानी ले लेना और वहाँ के मंज़र को देखकर ख़ौफ़ ज़दा ना होना तो मैंने उनसे इन बन्द दरवाज़ों के बारे में सवाल किया जिनमें हवायें चल रही थीं तो उन्होंने कहा कि यह मुर्दों की रूहें हैं। मैं हौज़ पर पहुंचा तो मैंने देखा कि एक शख़्स मुँह के बल पानी पर लटका हुआ है और अपने हाथ से पानी लेना चाहता है लेकिन नाकाम हो जाता है। मुझे देखकर कहने लगा ऐ अब्दुल्लाह मुझे पानी पिलाओ। मैंने बर्तन पकड़कर पानी में डुबो दिया ताकि इसे पानी पिला दूं मगर किसी ने मेरे हाथ को पकड़ लिया मैंने इससे पूछा कि ऐ बन्दे खुदा! तूने देख लिया कि मैंने अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश की थी कि तुझको पानी पिलाऊं लेकिन मेरा हाथ पकड़ा गया तू मुझे अपनी दास्तान सुना वह कहने लगे कि मैं आदम अलैहिस्सलाम का बेटा हूँ जिसने दुनिया में सबसे पहले खूरेज़ी की।

इब्न असाकर ने यज़ीद बिन ज़्याद और अमारह बिन उमैर से रिवायत किया कि जब उबैदुल्लाह बिन ज़्याद और उसके साथी क़त्ल हो गये और उनके सर लाये गये तो एक बहुत बड़ा सांप आया। लोग डरकर एक तरफ़ हो गये। वह उबैदुल्लाह बिन ज़्याद के नथनों मे दाख़िल हुआ और मुँह से निकला इस तरह कई मर्तबा किया फिर पता ना चला कि किधर से आया और किधर गया।

इब्न असाकर ने मोहम्मद बिन सईद से रिवायत किया कि मुसलिम बिन अक़बह मरी मदीना आया और लोगों को यज़ीद की बय्यत की दावत दी और कहा कि तुम सब अल्लाह की अताअत, और ना फ़रमानी में गुलाम महज़ हो तो लोगों ने उसकी दावत की तरफ रूजुअ किया। एक शख़्स जो क़ुरैशी था और उसकी माँ उम्मे वल्द थी उसने कहा सिर्फ अल्लाह की अताअत में। लेकिन मुस्लिम बिन अक़बह ने उसकी बात ना मानी और उसे क़त्ल कर दिया तो उसकी माँ ने क़सम खाली कि अगर मुस्लिम ज़िन्दा या मुर्दा मिल गया तो वह उसे जला देगी। जब मुस्लिम मदीना से निकला तो उसकी बीमारी ज़ोर कर आई और वह मर गया तो क़ुरैशी ज़ादह की माँ अपने गुलामों को साथ लेकर उसकी क़ब्र की तरफ़ गई और खोदने का हुक्म दिया। अब अन्दर जो देखा तो एक अज़दहा उसकी गर्दन में लिपटा हुआ है और उसकी नाक को चूस रहा है यह हाल देख कर लोग हट गये।

तमाम बिन राज़ी ने किताबुर्रहबान में ज़िक्र किया और इब्न असाकर ने भी रिवायत किया कि अस्माह बिन ओबाद ने कहा कि मैं किसी जंगल में घूम रहा था कि मैंने एक गिरजा देखा। गिरजा में एक मेहराब के अन्दर एक राहिब था। मैंने इससे कहा कि तुमने जिस मक़ाम पर सबसे अजीब चीज़ देखी वह मुझसे बयान करो। वह कहने लगा सुनिये मैं एक रोज़ यहाँ था कि मैंने एक परिन्दा जो सफ़ेद रंग का था और शतुरमुर्ग़ के बराबर था देखा उसने इस पत्थर पर बैठ कर क़ैय कर दी उसमें से एक सर नमूदार हुआ वह ज्यों ज्यों क़ैय करता रहा इंसानी अज़ा नमूदार होते रहे और बिजली की सी सुरअत के साथ एक दूसरे से जुड़ते रहे यहाँ तक कि वह मुकम्मल आदमी बन गया अब जब उसने उठने का इरादा किया तो परिन्दा ने उसके चोंच लगाई और उसको टुकड़े टुकड़े कर दिया और फिर निगल गया और कई रोज़ तक वह इस अमल में मसरूफ़ रहा और मेरा यक़ीन खुदा की क़ुदरत पर बढ़ गया कि अल्लाह तआला मारकर जीलाने पर क़ादिर है।

एक दिन मैं इस परिन्दा की तरफ़ मुतवज्जा हुआ और उससे पूछा कि ऐ परिन्दा! मैं तुझे इस ज़ात की क़सम देकर कहता हूँ जिसने तुझको पैदा किया अब जब वह इंसान मुकम्मल हो जाय तो उसको बाक़ी रहने देना ताकि मैं उससे उसके अमल के बारे में दरयाफ़्त कर सकूं? तो फ़रिश्ते ने बज़बान फ़सीह अरबी में मुझको जवाब दिया कि मेरे रब के लिये ही

बादशाहत है और बक़ा है। हरचीज़ फ़ानी है और वही बाक़ी है। मैं इसका एक फ़रिश्ता हूँ मैं इस पर मोसल्लत किया गया हूँ ताकि इसके गुनाह की सज़ा देता रहूँ। मैं उस शख़्स की तरफ़ मोतवज्जह हुआ और दरयाफ़्त किया कि ऐ अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करने वाले इंसान! तेरा क़िस्सा क्या है और तू कौन है? उसने जवाब दिया कि मैं अब्दुर्रहमान बिन मलजम हूँ हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हु का क़ातिल। मेरे मरने के बाद जब मेरी रूह बारगाह इलाही में हाज़िर हुई उसने मेरा नामाए आमाल मुझको दिया जिसमें मेरी पैदाइश से लेकर क़त्ले अली रदियल्लाहु अन्हु तक हर नेकी और बदी लिखी हुई थी फिर अल्लाह ने इस फ़रिश्ता को मेरे अज़ाब देने का क़यामत तक हुक्म दिया। यह कहकर चुप हो गया और परिन्दे ने उस पर ठोंगे मारीं और उसको निगल गया और चला गया।

सदक़ा बिना ख़ालिद ने दमिश्क़ के बाज़ मशायख़ से रिवायत की है कि मशायख़ का कहना है कि एक मर्तबा हम हज को जा रहे थे कि रास्ते में हमारा एक साथी वफ़ात पा गया हमने किसी से फ़ावड़ा मांगा क़ब्र खोदी और उसको इसमें दफ़न कर दिया और फ़ावड़ा भी क़ब्र ही में रह गया तो हमने क़ब्र खोदी ताकि फावड़ा निकाल लें अब जो अन्दर देखा तो उस शख़्स के हाथ पैर फावड़े के हलक़ा में दाख़िल हैं हमने क़ब्र फ़ौरन बन्द कर दी और फ़ावड़े वाले को कुछ पैसे देकर जान छुड़ाई। फिर जब हम वापिस आये तो उसकी बीवी से उसके आमाल के बारे में सवाल किया तो उसने बताया कि एक मर्तबा इसके हमराह एक मालदार शख़्स ने सफ़र किया। रास्ते में इसने उसको मार डाला अब यह हज और जेहाद सब कुछ इसी के माल से करता रहा है। (शरहअस्सदूर)

नमाज़ में सुस्ती के बाअस अज़ाबे क़ब्र :-

नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम को मेराज की रात कई गुनाहगारों को दिये जाने वाले अज़ाबात का मुशाहदा कराया गया उनमें से एक यह था कि आपका एक क़ौम पर गुज़र हुआ देखा कि उनके सर पत्थरों से फोड़े जा रहे हैं। जब उनके सर कुचल दिये जाते हैं तो उनकी पहली हालत की तरफ़ लाया जाता है जब सही हो जाते हैं फिर उनके सर कुचल दिये जाते हैं यह सिलसिला लगातार जारी है। किसी वक़्त बन्द नहीं होता। सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने जिब्रील अमीन से पूछा कि यह कौन लोग हैं? तो आपने अर्ज़ की कि यह वह लोग हैं जो नमाज़ में सुस्ती

करते थे नमाज़ सही अदा नहीं करते थे और नमाज़ अपने वक़्त पर अदा नहीं करते थे अल्लाह तआला का इरशाद गिरामी है "फ़वैलुल्लील मोसल्लीनल लज़ीना हुम अन्सलातिहीम साहून" तो इन नमाज़ियों के लिये ख़राबी है जो अपनी नमाज़ों से भूले बैठे हैं। (दुर्रे-मंसूर जि. 4)

इससे मुराद वह लोग हैं जो नमाज़ों की बिल्कुल परवा नहीं करते यहाँ तक कि नमाज़ें इनसे ज़ाया हो जाती है और वह अदा ही नहीं कर पाते या वह सुस्ती करते रहते हैं नमाज़ का वक़्त निकलने वाला होता है तो आते हैं इस तरह नमाज़ अदा नहीं करते जिस तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अदा की और ना ही सहाबा कराम रज़ि, तआबईन, सल्फ़सालिहीन की नमाज़ों की तरह अदा करते हैं बल्कि रूकूअ और सुजूद इस तरह अदा करते हैं जिस तरह मुर्गी या कोई परिन्दा जल्दी जल्दी चोंचें ज़मीन पर मारकर दाना उठाता है ख़ुशू और ख़ुज़ू से नमाज़ अदा नहीं करते या सुस्ती करते करते मुकम्मल तौर पर वक़्त निकाल देते हैं। इस तरह बग़ैर किसी उज़्र के जान बूझ कर नमाज़ें कज़ा कर देते हैं।

इब्न अबी अददुनिया ने उमरू बिन दीनार से रिवायत किया कि मदीना में एक शख़्स की बहन मर गई और वह उसको दफ़न कर आया। जब घर पहुंचा तो घरवालों से कहा कि मेरे पास एक थैली थी जो मैं क़ब्र में भूल गया हूँ अब जो क़ब्र खोदी तो क़ब्र आग से भड़क रही थी इसने क़ब्र को इसी तरह बन्द कर दिया और अपनी माँ के पास आकर बहन के बारे में सवाल किया तो उसने बताया कि नमाज़ वक़्त पर न पढ़ती थी बल्कि मेरा गुमान है कि बिला वज़ू पढ़ती थी और रात को लोगों के दरवाज़ों पर खड़े होकर उनकी बातें सुनती थी।

इब्न अबी शैबह, हनाद और अबी अद दुनिया ने हज़रत उमर बिन शरज़ील से रिवायत किया कि एक शख़्स मरा जिसको लोग मुत्तक़ी समझते थे। जब वह अपनी क़ब्र में आया तो फ़रिश्तों ने कहा कि हम तुझको अल्लाह के अज़ाब के सौ कोड़े मारेंगे। उसने कहा क्यों मारोगे मैं तो तक़्वा इख़्तेयार किये हुए था तो उन्होंने कहा कि अच्छा चलो पचास ही मार देंगे। फिर वह बराबर बहस करता रहा हत्ता कि वह फ़रिश्ते एक कोड़े पर आ गये और एक कोड़ा मारा जिससे तमाम क़ब्र भड़क उठी और वह शख़्स जलकर खाक स्तर हो गया फिर उसको ज़िन्दा किया गया तो उसने दरयाफ़्त किया कि अब यह तो बताओ कि तुमने कोड़ा क्यों मारा? तो उन्होंने जवाब दिया कि एक रोज़ तूने बे वज़ू नमाज़ पढ़ ली थी और

एक रोज़ एक मज़लूम तेरे पास फ़रयाद लेकर आया मगर तूने फ़रयादरसी ना की। अबू शैख़ किताबुत्तोबीख़ में इब्न मसउद से इसी तरह रिवायत किया है।

रोज़ा ना रखने का अज़ाब :-

इब्न जूज़ी ने अब्दुल्ला बिन मुहम्मद मदीनी से रिवायत किया उन्होंने ने अपने एक दोस्त में रिवायत किया कि मैं एक मर्तबा अपनी ज़मीन पर गया तो एक क़ब्रिस्तान के पास मग़रिब का वक़्त हो गया। मैंने वहाँ नमाज़े मग़रिब अदा की थोड़ी देर बाद एक तरफ़ से रोने की आवाज़ आई मैं उस क़ब्र के पास गया जिससे आवाज़ आती थी। कोई कह रहा था कि हाय! ः ना नमाज़ पढ़ता था न रोज़ा रखता था। मैं अपने साथी के क़रीब हुआ उसने भी यही आवाज़ सुनी फिर मैं अपनी ज़मीन पर वापिस आ गया और दूसरे रोज़ फिर उसी जगह नमाज़ पढ़ी जहाँ पहले रोज़ पढ़ी थी और मग़रिब की नमाज़ का मुन्तज़िर था और वक़्त मोक़र्रा पर क़ब्र से वही आवाज़ आई। अब जब मैं घर वापिस लौटा तो दो माह तक बीमारी में मुब्तला रहाँ

हज़रत अबू ओसामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने कहा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने एक रोज़ नमाज़ फ़जर के बाद फ़रमाया कि मैंने आज एक ख़्वाब देखा है और वह सच है तुम इसे ख़ूब अच्छी तरह समझ लो। आज रात को एक आने वाला मेरे पास आया और मेरा हाथ पकड़कर एक लम्बे चौड़े पहाड़ के पास ले आया और मुझसे कहा कि इस पर चढ़िये मैंने कहा मेरे बस की बात नहीं उसने कहा आप चढ़िये तो मैं आसान कर दूंगा। फिर मैं इस पर चढ़ने लगा यहाँ तक कि मैं पहाड़ के दरम्यानी हिस्सा पर पहुंच गया तो मैंने कुछ ऐसे मर्द और औरते देखीं जिनके मुह चरे हुए थे। दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि यह वह लोग हैं कि जो कहा करते थे उसको करते न थे फिर मैंने कुछ ऐसे लोग देखे जिनकी आँखें और कान कीलों से ठुके हुए थे दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि यह वह लोग हैं जो वह देखते हैं जो तुम नहीं देखते और वह सुनते हैं जो तुम नहीं सुनते फिर मैंने कुछ ऐसी औरतें देखीं जिनके सरीन लटके हुए और सर झुके हुए थे उनके पिस्तानों को साँप डंस रहे थे। मालूम करने पर पता चला कि यह वह औरतें हैं जो अपने बच्चों को दूध नहीं पिलाती थीं फिर मैंने कुछ ऐसे मर्द औरऔरतें मुलाहज़ा कीं जिनकी सुरीनें लटकी हुई थी और सर झुके हुए थे और

थोड़ा सा पानी चाट रहे थे। दरयाफ़्त करने से मालूम हुआ कि वह लोग हैं जो रोज़ा वक़्त से पहले अफतार कर लेते हैं। फिर मैंने कुछ लोग देखे जो बहुत ही बदसूरत, बदलिबास और बेहद बदबूदार थे। दरयाफ़्त किया तो पता चला कि यह ज़ानी मर्द ज़ानिया औरतें हैं फिर मैंने कुछ मुर्दे देखे जो बहुत फूले हुए और बदबूदार थे। दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि यह वह लोग हैं जो हालते कुफ़्र पर मरे फिर मैंने देखा के कुछ लोग दरख़्तों के साये तले हैं दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ के यह मुसलमानों के मुर्दे हैं। फिर हम आगे चले तो देखा कि कुछ लड़के और लड़कियां दो नहरों के दरम्यान खेलने में मसरूफ़ हैं मैंने दरयाफ़्त किया कि यह कौन लोग हैं? मालूम हुआ कि यह मोमिनीन की औलाद है। फिर हमने हसीन चेहरे उम्दा कपड़े और बेहतर हसीन खुशबू वाले इंसान देखे। मैंने पूछा यह लोग कौन हैं? पता चला कि यह सिद्दीक़ीन और शोहदा और सालेहीन की जमाअत है। (इब्ने ख़ज़ीमा, इब्न हब्बान, तिबरानी)

ज़कात ना देने वालों को अज़ाबे क़ब्र :-

मेराज की रात नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का ऐसी क़ौम पर गुज़र हुआ जिनकी शर्मगाहों के आगे और पीछे चिथड़े लिपटे हुए थे। और वह मवेशियों की तरह चर रहे थे आपने पूछा यह कौन लोग हैं? हज़रत जिब्रिल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! ये वह लोग हैं जो अपने माल की ज़कात अदा नहीं करते थे और फ़क़ीरों और मिस्कीनों पर रहम नहीं करते थे। अल्लाह तआला का इरशाद गिरामी है और वह लोग जो सोना और चांदी जोड़ कर रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते उन्हें खुशख़बरी सुना दो दर्दनाक अज़ाब की। (तौबा : 34)

जिस दिन वह माल तपाया जायगा जहन्नम की आग में फिर उससे उनकी पेशानियां और करवटें और पीढें दागेंगे। यह है वह जो तुमने अपने लिये जोड़ कर रखा था अब इसको जोड़ने का मज़ा चखो। (तौबा : 35)

अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब ज़्वाजिर में बयान फ़रमाते हैं कि तआबयीन की एक जमाअत वक़्त के बुज़ुर्ग हज़रत अबू सनान रहमतुल्लाहि अलैहि से मुलाक़ात के लिये उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुई। आपने फ़रमाया कि मेरे हमसाया का भाई फ़ौत हो गया है और मैं उसके पास ताज़ियत के लिये जा रहा हूँ। आप अपने ताबिईन की जमाअत के साथ अपने हमसाया के घर तशरीफ़ लाये। देखा

कि वह शख़्स बहुत ही रो रहा है। आप उसे तसल्ली देते हैं लेकिन वह रोये जा रहा है। आपने उसे कहा कि देखो मौत व हयात अल्लाह तआला के क़ब्ज़े क़ुदरत में है तुम सब्र करो। उसने कहा कि मुझे तो अपने भाई का सुबह व शाम का अज़ाब रुला रहा है। इसने वाक़िया बताते हुए कहा कि जब मेरे भाई को क़ब्र में दफ़न कर दिया गया और मिट्टी डालकर क़ब्र तैयार कर दी गई तो लोग वापिस चले गये और मैं उसकी क़ब्र के पास बैठ गया। अचानक क़ब्र से आवाज़ आई। अफ़सोस हाय अफ़सोस! लोग मुझे अकेला छोड़कर चले गये और मैं अज़ाब की मुसीबत उठा रहा हूँ। हालांकि मैं नमाज़ पढ़ता था और रोज़े रखता था जब मैंने यह आवाज़ सुनी तो मैं रोने लगा। मैंने बेखुदी के आलम में क़ब्र की मिट्टी हटाना शुरू की ताकि मैं देखूं कि मेरे भाई का क़ब्र में क्या हाल है जब मैंने मिट्टी हटाई तो देखा कि मेरे भाई के गले में आग का तौक़ है जो उसे जला रहा है। मैंने अपनी पुरजोश मोहब्बत के पेश नज़र इसके गले से तौक़ हटाने के लिये हाथ बढ़ाया तो मेरा हाथ जलने लगा। मैंने जल्दी से हाथ खेंच लिया और क़ब्र पर मिट्टी डालकर वापिस आ गया। वह बुज़ुर्ग पूछने लगे तेरे भाई के अमल क्या थे इसने कहा कि वह नमाज़ पढ़ता था रोज़े रखता था लेकिन ज़कात अदा नही करता था वह बुज़ुर्ग कहने लगे कि ठीक है तेरे भाई को यही अज़ाब होना चाहिये था। क्योंकि अल्लाह तआला का इरशाद है "और जो बुख़्ल करते हैं इस चीज़ से जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उन्हें अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वह उनके लिये बुरा है। अनक़रीब वह जिसमें बुख़्ल किया था क़यामत के दिन उनके लिये गले का तौक़ होगा। (आले ईमरान : 180)

ज़ना और बदकारी का अज़ाब :-

मेराज की रता नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुआ जिनके सामने एक हंडिया में पका हुआ गोश्त रखा हुआ है और दूसरी हंडिया में कच्चा गोश्त को खा रहे हैं और पका हुआ गोश्त नहीं खाते। आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने पूछा यह कौन लोग हैं? जिब्रील अमीन ने कहा या रसूलुल्लाह! यह वह लोग हैं जो अपनी पाकीज़ा और हलाल बीवियों को छोड़ कर दूसरी हराम औरतों के साथ रातें गुज़ारते थे और बुराई के मुरतकिब होते थे। इसी तरह यह औरतें वह हैं जो अपने ख़ाविंद को छोड़कर दूसरे मर्दों के साथ रंग रेलियां मनाती थीं और बदकारी की मुरतकिब होती थीं इन मर्दों और औरतों के मुतआलिक

ही अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है। तर्जुमा "और तुम ज़ना के करीब ना जाओ क्योंकि यह बहुत बेहयायी का काम और बुरा रास्ता है। (तफ़सिर इब्न कसीर जि. 3)

इब्न अदी और बेहक़ी ने हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेराज की रात मैंने कुछ ऐसे देखे जिनके सर पत्थरों से कुचले जा रहे थे मैंने पूछा यह कौन लोग हैं? वह कहने लगे कि यह वह लोग हैं जिनके सर नमाज़ पढ़ने से बोझल होते थे फिर मैंने ऐसे लोग देखे जिनके आगे पीछे शर्मगाह पर कुछ चिथड़े लिपटे हुए वह जकूम और कांटेदार दरख़्त इस तरह चर रहे थे जैसे ऊंट या गाय, बैल, चरते हैं। मैंने पूछा कि यह कौन लोग हैं? उन्होंने कहा कि ये वह लोग हैं जो अपने सदक़ात अदा नहीं करते हैं। फिर ऐसे लोगों के पास आया जिनके पास एक हाँडी में कुछ पका हुआ गोश्त था और दूसरी हाँडी में कच्चा गोश्त था तो उन्होंने पका हुआ गोश्त छोड़ दिया और कच्चा खाने लगे। मैंने पूछा यह कौन लोग हैं? तो वह कहने लगे कि यह उन मर्दों और औरतों की मिसाल है जो पाक बीवीयों और शौहरों के होते हुए ग़ैरों के पास रात गुज़ारते थे। फिर एक शख़्स को देखा जो लकड़ियों का गट्ठा उठा रहा था लेकिन वह उससे उठ नहीं सकता था। मैंने पूछा यह कौन लोग हैं तो उन्होंने कहा यह शख़्स वह है जिसके पास लोगों की अमानतें हों और वह उनके अदा करने की ताक़त नहीं रखता फिर भी मज़ीद अमानतें लिये जाता है। फिर ऐसे लोग देखे जिनकी ज़बानें लोहे की कैंचियों से काटी जा रही थी। मैंने पूछा यह कौन लोग हैं? वह कहने लगे कि यह फितना फैलाने वाले उल्मा हैं। (बेहक़ी)

अबू दाऊद ने हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेराज की रात में ऐसे लोगों के क़रीब से गुज़रा जो लोहे के नाख़ून रखते थे वह अपने मुँह और सीने नोच रहे थे। मैंने दरयाफ़्त किया यह कौन लोग हैं? जिब्रील ने कहा यह वह लोग हैं जो लोगों की इज़्ज़त व आबरू लूट लेते थे।

तारीख़ इब्न असाकर में उनकी सनद से उमरू बिन अस्लम दमिश्क़ी से रिवायत है कि हमारे यहाँ सरहद के पास एक शख़्स मर गया और उसको वहीं दफ़न कर दिया गया। फिर तीसरे दिन जब खोदा गया तो मालूम हुआ कि क़ब्र की ईंटें इसी तरह लगी हुई हैं और वह शख़्स क़ब्र

में नहीं है तो उसके बारे में वकीय बिन जराह से मालूम करने पर पता चला कि जो क़ौमे लूत का सा काम करता है उसको उसकी क़ब्र से मुन्तक़िल करके लूतीयों के पास पहुंचा दिया जाता है ताकि इसका हशर उन्हीं के साथ हो।

क़ब्र में शराब की सज़ा :-

बाज़ लोगों को क़ब्र में शराबनोशी की बिना पर अज़ाब में मुब्तला कर दिया जायेगा। एक हदीस पाक में है कि शराबी अपनी क़ब्र से मुर्दार की बदबू के साथ उठेगा। सुराही उसकी गर्दन में लटकी होगी। और जाम उसके हाथ में होगा और उसके जिस्म में सांप और बिच्छू भरे होंगे। उसे आतिशे दोज़ख़ की जूतीयां पहनाई जायेंगी जिससे उसका दिमाग़ खौलता होगा और उसकी क़ब्र जहन्नम का एक गढ़ा है जो फ़िरऔन व हामान के क़रीब है। (कुर्रअतुल अैयून)

हज़रत इब्न मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जब कोई शराबी मरे तो दफ़न करो। फिर उसकी क़ब्र खोलकर देखो। अगर उसका मुँह क़िब्ला से फिरा हुआ न पाओ तो मुझे क़त्ल कर देना क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जब कोई चार मर्तबा शराब पी लेता है तो हक़ सुब्हानहूतआला उससे नाराज़ हो जाता है और सिज्जीन में उसका नाम लिख देता है तो उससे न रोज़ा क़बूल किया जाता है न नमाज़ न सदक़ा मगर यह कि वह तौबा कर ले। अब अगर तौबा कर ली तो बेहतर है वरना उसका ठिकाना जहन्नम है और यह कितना बुरा ठिकाना है। (कुर्रअतुल अैयून)

हज़रत मसरूक़ ने फ़रमाया है कि जो शख़्स चोरी, शराब नोशी और ज़ना में मुब्तला होकर मरता है तो उस पर दो सांप मोक़र्रर कर दिये जाते हैं जो उसका गोश्त नोच नोच कर खाते रहते हैं। (इब्न अबी अददुनिया)

नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने मेराज की रात ऐसी क़ौम को देखा जिनके चेहरे काले और आँखें नीली थीं उनका नीचे वाला होंठ पाँव पर लटक रहा था और ऊपर वाला होंठ सर के ऊपर जा रहा था। दोज़ख़ की आग का सख़्त गर्म किया हुआ ज़र्द पानी आग के प्यालों में पिलाया जा रहा था। यहाँ तक कि पीप और ख़ून उनके मुंह से टपक रहा था और वह गधे की तरह हिंग रहे थे। आपने पूछा यह कौन लोग हैं? हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि यह वह लोग हैं जो

ज़िन्दगी में शराब पीते थे।

(अख़्बारूल क़ुरआन सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम 262)

हिकायत :-

अवाम बिन हौशब का कहना है कि एक मर्तबा मैं एक क़बीला में आया उस क़बीला के एक तरफ़ एक मक़बरा था। असर के बाद उस मक़बरे की एक क़ब्र फटती थी और उससे एक शख़्स ज़ाहिर होता था। जिसका सर गधे की मानिन्द होता था और जिस्म इंसान की तरह। वह गधे की मानिन्द तीन दफ़ा आवाज़ निकालकर फिर क़ब्र में ग़ायब हो जाता था। मैंने उसके बारे में लोगों से पूछा तो लोगों ने बताया कि यह शराब का आदी था जब यह शराब पीता था, तो उसकी माँ कहती कि ऐ मेरे बच्चे! अल्लाह से डर तो वह जवाब देता कि तू गधे की तरह हींगती रहती है। तो वह असर के बाद मर गया तो हर रोज़ असर के बाद क़ब्र से निकलता है और तीन मर्तबा हींगता है और फिर क़ब्र में गायब हो जाता है। (तरग़ीब)

सूद खाने का अज़ाब :-

शबे मेराज नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का ऐसी क़ौम पर गुज़र हुआ जिनके पेट सूज सूज कर बड़े बड़े मकानों की तरह हो रहे हैं और उनके चेहरे ज़र्द रंग के हैं। उनकी गर्दनों में लोहे के तौक़ और हाथों में ज़ंजीरें और पाँव में बेड़ियां पहनाई हुई हैं। जब वह उठना चाहते हैं तो पेट के सूजने, फूलने की वजह से उठ नहीं सकते बल्कि गिर जाते हैं। ऊपर नीचे अज़ाब में मुब्तला हैं। आपने पूछा यह कौन लोग हैं? हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम। यह सूद खाने वाले लोग है।

अल्लाह तआला का इरशाद गिरामी है "वह जो सूद खाते हैं क़यामत के दिन खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वह जिसे आसेब ने छूकर मख़्बूत यानी बदहवास बना दिया हो" (बक़रा - 275) -

(दुर्रे मनसूर जि.4 सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम 172)

तम्बीह :-

क़यामत के बाद आने वाले वाक़ियात नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम को पहले ही शब मेराज को मुशाहदा करा दिये गये। यह आलमे

मिसाल के वाक़ियात हैं। दूसरी बड़ी वजह यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम और अल्लाह तआला के वहाँ माज़ी, हाल और मुस्तक़बिल का कोई फ़र्क़ नहीं बल्कि माज़ी और मुस्तक़बिल के वाक़ियात भी हाल ही की तरह आपके सामने अयां हैं।

हज़रत अबू सईद ख़िदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने हदीस इसरार में इरशाद फ़रमाया कि फिर मैं ऐसे मुक़ाम से गुज़रा जहाँ कुछ ख़्वान रखे थे जिनमें बेहतरीन गोश्त था लेकिन इसके क़रीब कोई ना जाता था और सामने ही दूसरे ख़्वानों में कुछ बौसीदा गोश्त रखा हुआ था जिसको बहुत से लोग खा रहे थे। मैंने जिब्रील अलैहिस्सलाम से पूछा कि यह कौन लोग हैं? तो उन्होंने कहा यह वह लोग हैं जो हलाल छोड़कर हराम की तरफ आते हैं। फिर मैं आगे बढ़ा तो मैंने कुछ ऐसे लोग देखे जिनके पेट घड़े की मानिंद बड़े थे। जब उनमें से कोई खड़ा होता तो फौरन गिर पड़ता और कहता कि ऐ मेरे रब! क़यामत क़ायम न कर। यह लोग क़ौम फ़िरऔन की गुज़र गाह पर पड़े हुए हैं जब कोई क़ौम गुज़रती है तो उनको रौंद डालती हैं। मैंने पूछा कि ऐ जिब्रील! यह कौन लोग हैं? वह कहने लगे कि यह आपकी उम्मत के सूद ख़ोर हैं। फ़िर मैं आगे बढ़ा तो देखा कि कुछ लोग ऊंटों के से होंठ वाले हैं वह अपने मुँह खोलकर आग खा रहे हैं फिर वह आग उनके नीचे से निकल रही है। मैंने दरयाफ़्त किया यह कौन लोग हैं? कहा कि यह यतीमों का माल खाने वाले हैं फिर कुछ आगे चलकर देखा कि कुछ औरतें हैं जिनकी पिस्तान लटके हुए हैं मैंने पूछा कि यह कौन लोग हैं? वह कहने लगे यह ज़ानियां औरते हैं फिर मैं आगे चला तो देखा कि कुछ लोग ऐसे हैं जिनके पहलूओं पर से गोश्त काटा जा रहा है और कहा जा रहा है कि ये इसी तरह खा जिस तरह तू अपने भाई का गोश्त खाता था। मैंने कहा यह कौन लोग हैं? तो उन्होंने कहा कि यह लोग ग़ीबत और ऐबजोई करने वाले हैं। (बैहक़ी)

झूठ बोलने की बिना पर अज़ाबे क़ब्रः

नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि एक शख़्स मेरी तरफ़ चला आ रहा है। उसने आकर मुझसे कहा खड़े हो जायें और मेरे साथ चलें। मैं उठकर उसके साथ चल पड़ा। मैं ऐसे दो शख़्सों के पास पहुंचा कि एक उनमें से खड़ा है और दूसरा बैठा है जो खड़ा है उसके हाथ में आगे से मुड़ी हुई एक लोहे की सलाख़ है वह बैठे

हुए शख़्स की एक बाछ में डालकर उसको अपनी तरफ खेंचता है यहाँ तक कि वह कंधे तक आ जाता है फिर खेंचता है इसी तरह फिर वह सलाख़ उसकी दूसरी बाछ में डाल कर खेंचता है। जो शख़्स मुझे उठा कर ले गया था मैंने उसे कहा यह कौन शख़्स है उसने कहा कि यह शख़्स झूठ बोलने वाला है इसको क़यामत तक क़ब्र में यही अज़ाब दिया जाता रहेगा। हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि तीन चीज़ें जिसमें पाई जायें वह मुनाफ़िक़ है अगरचे वह रोजे भी रखता है नमाज़ों भी पढ़ता है और यह भी गुमान रखता है कि मैं मुसलमान हूँ (वह तीन चीज़ें यह हैं) जब बात करे तो झूठी करे जब वादा करे तो ख़िलाफ़ करे और जब उसके पास अमानत रखी जाय तो ख़्यानत करे।

नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के इस इरशाद गिरामी का मतलब यह है कि तीन गुनाह मुनाफ़क़त की अलामत हैं अगरचे बज़ाहिर वह मुसलमान रोज़ादार और नमाज़ी हो और काम उसके मुनाफ़िक़ों वाले हों।

हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ताजिर फ़ासिक़ व फ़ाजिर भी होते हैं। अर्ज़ किया गया या रसूलुल्लाह! क्या अल्लाह तआला ने ख़रीद व फ़रोख़्त (तिजारत) को हलाल नहीं किया? आपने फ़रमाया कि हाँ (अल्लाह तआला ने हलाल फ़रमाया है) लेकिन यह (झूठी) क़समें उठा, उठा कर गुनहगार होते हैं और जब बात करते हैं तो झूठ बोलते हैं।

ग़ीबत के बाअस अज़ाबे क़ब्र :-

हज़रत जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हम नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के साथ एक सफ़र में थे आप दो क़ब्रों पर तशरीफ़ लाये इन क़ब्र वालों को अज़ाब दिया जा रहा था आपने फ़रमाया इन दोनों को अज़ाब दिया जा रहा है और इनको किसी बड़ी चीज़ की वजह से अज़ाब नहीं दिया जा रहा है (यानी लोग इनको कोई बड़े जुर्म नहीं समझते हालांकि दर हक़ीक़त यह अज़ीम जुर्म हैं इसी वजह से इनको अज़ाब दिया जा रहा है।) लेकिन इनमें एक लोगों की ग़ीबत करता था और दूसरा पेशाब से नहीं बचता था। आपने खजूर की एक या दो सब्ज़ पत्तो वाली टहनियां तलब कीं उनके टुकड़े किये और फ़रमाया कि हर टुकड़े को क़ब्रों पर लगा दिया जाय जब तक यह सब्ज़ रहेंगे ख़ुश्क नहीं होंगे इनको अज़ाब से राहत हासिल होगी। (मिशकात)

मेराज की रात नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का ऐसी क़ौम पर गुज़र हुआ जिनको मुर्दा जानवरों के गोश्त के टुकड़े खिलाये जा रहे थे आपने पूछा यह कौन लोग हैं? हज़रत जिब्रील अमीन ने अर्ज़ किया यह वह लोग हैं जो दूसरे भाईयों का गिला करते थे यानी ग़ीबत करते थे। और चुग़ल ख़ोरी भी करते थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया "और ऐब ना ढूंढो और एक दूसरे की ग़ीबत ना करो। क्या तुम में से कोई पसन्द करेगा कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाये तो यह तुम्हें गवारा ना होगा।
(अख़्बारूल क़ुरआन सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम 262)

इसी तरह मेराज की रात ग़ीबत करने वालों को एक और अज़ाब में मुब्तला भी दिखाया गया। हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेराज की रात मेरा गुज़र एक क़ौम पर हुआ जिनके चेहरों को नाख़ूनों से नोचा जा रहा था। मैंने कहा ऐ जिब्रील! यह कौन लोग हैं? उन्होंने कहा यह वह लोग हैं जो दूसरे लोगों की ग़ीबत करते थे और उनकी इज़्ज़तें पामाल करते थे।
(अहियाउल उलूम जि. 3)

ग़ुस्ल जनाबत न करने का अज़ाब :-

हाफिज़ इब्न रजब और हसीम बिन अदी ने अपनी सनद से अब्दुल्ला बहिल्ली से रिवायत किया कि हमारा एक हमसाया फ़ौत हो गया तो हम उसके कफ़न व दफ़न में शरीक हुए। जब क़ब्र खोदी गई तो उसमें बिल्ले की तरह की कोई चीज़ थी हमने उसको मारा तो वह न हटी। क़ब्र खोदने वाले ने एक ढेला उसके सर पर मारा तब भी न हटी, चुनांचे दूसरी क़ब्र खोदी गई तो उसमें भी वही बिल्ला मौजूद था उसके साथ भी वही किया गया जो पहले के साथ किया गया लेकिन वह अपनी जगह से न हिला तो लोगों ने मशवरा दिया कि अब इसको इसी में दफ़न कर दो जब उसको दफ़न कर दिया गया तो क़ब्र में बहुत ही ज़ोरदार आवाज़ सुनी गई तो हम उसकी बीवी के पास गये और उसके अमल के बारे में दरयाफ़्त किया कि यह कैसे अमल करता था उसने बताया कि वह अकसर व बेशतर ग़ुस्ल जनाबत नहीं करता था।

माँ बाप की नाफ़रमानी का अज़ाब :-

नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का शबे मेराज एक क़ौम पर गुज़र हुआ जो आग के जंगल में क़ैद थे आग में एक मर्तबा जल जाते

फिर उनको दुरूस्त कर दिया जाता फिर उनको जला दिया जाता इस तरह यह सिलसिला जारी था। नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने पूछा यह कौन लोग हैं? तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह : यह वह लोग हैं जो मां बाप के नाफ़रमान थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है "और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि इसके सिवा किसी की एबादत न करो और मॉं बाप के साथ अच्छा सलूक करो अगर तेरे सामने एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जायें तो उनसे उफ़ ना कहना और उन्हें न झिड़कना और उनसे ताज़ीम की बात कहना और उनके लिये आजज़ी का बाज़ू नरम दिली से बिछा और अर्ज़ कर ऐ मेरे रब! तू इन दोनों पर रहम कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे बचपन में पाला है"

(17-23 ता 24)

नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का इरशाद गिरामी है कि बेशक जन्नत की ख़ूश्बू पाँच सौ साल के रास्ते से आ जाती है लेकिन माँ बाप का नाफ़रमान और क़ितआ रहमी करने वाला इस ख़ूश्बू से महरूम रहेगा। (अहिया उल उलूम जि. 2)

हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जिस शख़्स ने माँ बाप को सुबह सुबह नाराज़ किया उस शख़्स के लिये सुबह सुबह ही दोज़ख़ के दो दरवाज़े खोल दिये जायेंगे। जिस शख़्स ने शाम को नाराज़ किया। शाम को ही उसके लिये दोज़ख़ के दरवाज़े खोल दिये जायेंगे। (अहिया उल उलूम जि. 2)

हज़रत मुग़ैरह रदियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "बेशक अल्लाह तआला ने तुम पर वालदैन की नाफ़रमानी करना हराम कर दिया है।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने अपने वालदैन की नाफ़रमानी की बिला शुबह उसने अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की नाफ़रमानी की और फ़रमाया वालदैन के नाफ़रमान को जब उसकी क़ब्र में दफ़न किया जाता है तो क़ब्र उसे दबाती है यहाँ तक कि उसकी पस्लियां एक दूसरे में पेवस्त हो जाती हैं। और क़यामत के दिन जहन्नम में लोगों में सबसे ज़्यादा अज़ाब तीन शख़्सों पर होगा। (1) वालदैन का नाफ़रमान (2) ज़ानी (3) मुशरिक बिल्लाह।

हिकायत :-

एक बुज़ुर्ग फरमाते हैं कि एक रात में क़ब्रिस्तान गया मैंने एक क़ब्र देखी इससे धुआं निकल रहा था फिर मैं उस तरफ़ गौर से देखा तो वह क़ब्र शक़ हुई और उससे स्याह फाम अज़ाब का फ़रिश्ता नमूदार हुआ और उसके हाथ में आग का गुर्ज़ था जो एक गधे के सर पर इससे मारता था और वह गधा, गधे की आवाज़ में चिखता था उसके बाद वह गधा आग की ज़ंजीरों के साथ बाहर आ गया फिर अज़ाब के फ़रिश्ते ने उसे क़ब्र में दाख़िल कर दिया और खुद भी उसके पीछे क़ब्र में चला गया और क़ब्र का शिगाफ़ बन्द हो गया मैं यह देख कर तआज्जुब में हुआ और फिक्र में पड़ गया फ़िर मुझे एक औरत मिली। मैंने इसके बारे में इससे पूछा उसने बताया कि यह शख़्स ज़ानी और शराबी था इसकी माँ इससे झगड़ती थी और उसने माँ से कहा जैसे चीख़े जा जैसे गधा चीखता है। जब यह मर गया तो अल्लाह ने (माँ की गुस्ताख़ी पर) उसे क़ब्र में गधे की सूरत कर दिया और हर रात अज़ाब का फ़रिश्ता उसे उसकी क़ब्र से निकालता है और गुर्ज़ मार कर कहता है ऐ गधे : चीख़ मार और उसे ज़ंजीर के साथ घसीट कर निकालता है और उसे क़ब्र में ले जाता है उसके बाद क़ब्र उस पर मिल जाती है।

नाफ़रमान बीवियों की क़ब्र में सज़ा :-

नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने मेराज की रात औरतों के एक ग्रोह को देखा कि उनके मुँह काले और आँखें नीली हैं। उन्होंने आग के कपड़े पहने हुए हैं। फ़रिश्ते उन्हें आग के गुर्ज़ मार रहे हैं और वह गधों और कुत्तों की तरह चिल्लाती हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने पूछा यह औरतें कौन हैं जो अज़ाब में मुब्तला हैं। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने जबवा दिया। या रसूलुल्लाह! यह वह औरतें हैं जो अपने ख़ाविन्द की नाफ़रमानी करती थीं। अल्लाह तआला का इरशाद गिरामी है "अररिजालु क़व्वामूना अलन्निसय" (मर्द औरतों पर हाकिम हैं) (तफसीर इब्ने जरीर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम 15)

इस आयत करीमा का शाने नुज़ूल यह है कि हज़रत सआद बिन रबिअ अंसार के नक़ीब थे एक दफ़ा उनकी ज़ौजा हबीबा बिन्त ज़ैद बिन ज़हीर ने उनकी कुछ नाफ़रमानी की जिसकी वजह से उन्होंने गुस्सा में आकर उन्हें एक तमाचा मारा वह औरत नाराज़ होकर अपने वालिद के

घर चली गई उसके वालिद ज़ैद बिन ज़हीर अपनी बेटी हबीबा को लेकर नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और शिकायत की कि मैंने अपनी प्यारी बेटी का निकाह सआद रदियल्लाहु अन्हु से किया था लेकिन उसने मेरी बेटी को थप्पड़ मारा है इसका क़सास दिलवाया जाय। नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इजाज़त फ़रमा दी कि हबीबा भी सआद को थप्पड़ मार ले ताकि बराबरी हो जाये। यह अभी चले ही थे कि आयत करीमा नाज़िल हुई हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने उन्हें वापिस बुलाकर यह आयत सुनाई और फ़रमाया कि ज़ौजह अपने ख़ाविन्द से थप्पड़ वगैरह का बदला नही ले सकती। नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हमने तो कुछ और चाहा था लेकिन अल्लाह ने कुछ और चाहा है लिहाज़ा अल्लाह तआला की चाहत हमारी चाहत से अफ़ज़ल है। (तफ़सीर ख़ाज़िन, कबीर बैज़ावी वगैरह)

क़ित्तआरहमी का अज़ाब :-

सालिहीन ब्यान करते हैं कि एक सालिह ने ब्यान किया कि एक मर्द सालिह अजम का रहने वाला मेरा दोस्त था और मक्का मोकर्रमा में रहा करता था और तवील रात तक ख़ाना काबा का तवाफ़ किया करता और बैठ कर तिलावत क़ुरआन करीम करता था इस हाल में कई वर्ष गुज़र गये तो मैंने कुछ सोना उसे अमानत में दिया और यमन की तरफ़ सफ़र को चला गया जब वापिस आया तो मालूम हुआ कि वह फ़ौत हो गया है मैंने उसकी औलाद से अमानत के बारे में पूछा उन्होंने मुझसे कहा ख़ुदा की क़सम तुम जो कहते हो हमें कुछ भी मालूम नहीं और ना हमें इसका कुछ इल्म है तो मैं ग़मज़दा होकर बैठ गया हज़रत मालिक इब्न दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि मुझसे मिले। उन्होंने मुझसे पूछा क्या बात है ऐ भाई। क्यों फ़िक्र मन्द हो? मैंने उन्हें सारा हाल ब्यान किया। उन्होंने फ़रमाया जब आधी रात हो जाय और वह रात जुमा की हो और मुत्ताफ़ में कोई शख़्स बाक़ी ना रहे तो रूक्न और मक़ाम के दरम्यान खड़े होकर बुलन्द आवाज़ से पुकारना ऐ फलां! अब अगर अल्लाह के नज़दीक वह शख़्स सालिह और मक़बूल है तो उसकी यह तुमसे बात करेगी इसलिये कि तमाम मुसलमानों की रूहें रूक्न और मक़ाम के दरम्यान इस रात को जमा होती हैं। वह बुज़ुर्ग ब्यान करते हैं कि जब जुमा की रात आई तो आधी रात के बाद मैं रूक्न व मक़ाम के दर्मियान खड़ा हुआ और ज़ोर से पुकारा ऐ फलां! तो मुझे किसी ने जवाब ना दिया। फिर जब सुबह हुई

तो मैं हज़रत मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि से यह ब्यान किया। उन्होंने सुनकर कहा "इन्नालिल्लाहि व इन्नाएलेहिराजेउन" वह अज़मी अहले नार से होगा। अब तुम सर ज़मीन यमन जाओ वहाँ एक कुआँ है जिसका नाम "बरहूत" है उसमें मोअज़्ज़बीन की रूहें जमा की जाती है और वह कुआँ जहन्नम के मुँह पर है। तो तुम उस कुएँ के गोशे पर खड़े होकर आधी रात के वक़्त पुकारना ऐ फ़लां! तो वह तुम से बात करेगा। वह ब्यान करते हैं कि फिर मैं उस कुएँ की तरफ़ गया जब आधी रात हुई तो मैं कुएँ के पास गया अचानक मैंने देखा कि दो शख़्सों को लाया गया है और उन दोनों को कुएँ में उतारा गया है और वह रोते हुए एक दूसरे से पूछते हैं तू कौन है, एक कहता है फ़लां ज़ालिम की रूह हूँ मैं बादशाह का पहरा दिया करता था और हराम खाता था और मलकुल मौत ने मुझे इस कुएँ में फेंक दिया जिसमें मुझे अज़ाब दिया जाता है और दूसरे ने कहा मैं अब्दुल मलिक बिन मरवान की रूह हूँ मैंने इन दोनों चीख़ने और चिल्लाने की आवाज़ें सुनीं और शिद्दते ख़ौफ़ से मरे जिस्म के तमाम रोंगटे खड़े हो गये वह बयान करते हैं फिर मैंने उस कुएँ में नज़र डाली और ज़ोर से पुकारा है फ़लाँ! तो उसने मुझे ज़र्ब व अकूबत के नीचे से जवाब दिया। लब्बैक (मैं मौजूद हूँ) मैंने कहा ऐ भाई मेरी वह अमानत कहाँ है जो मैंने तुम्हारे सुपुर्द की थी? उसने कहा वह अमानत फ़्लाँ फलां जगह फ़्लाँ चौखट के नीचे मदफ़ून है मैंने पूछा ऐ भाई किस गुनाह में इस बदबख़्तों के मक़ाम में लाये गये हो? उसने कहा अपनी बहन के सबब से क्यों कि मेरी एक बहन थी वह मोहताज थी और मुझसे दूर सर ज़मीन अज़म में रहती थी मैं उससे बेनयाज़ होकर अल्लाह इज़्ज़ोजल की एबादत और मक्का मोकर्रमा की हाज़री में मुन्हमिक हो गया और इतने अरसा तक न मैंने उसके खाने पीने की फ़िक्र की और न उसकी कुछ पूछ गछ की। फिर जब मैं मर गया तो इस कितआ रहमी पर मेरे रब ने मुझ पर अताब फ़रमाया और उसने मुझसे पूछा "तू कैसे इसे भूल गया वह बरहना रही, तू कपड़े पहनता रहा, वह भूकी रही, तू पेट भर कर खाता रहा वह प्यासी रही और तू सैराब रहाँ क़सम है मुझे अपने इज़्ज़ोजलाल की मैं क़ातिअ रहम पर रहम नहीं करूंगा। ले जाओ इसे और बरहूत के कुएँ में डाल दो।" तो मलकुल मौत मुझे यहाँ ले आये ऐ भाई तुम मेरी बहन के पास जाओ और मुझे माफ करने की उससे दरख़ास्त करो और इस अज़ाब से छुटकारे की तदबीर करो मुम्किन है कि अल्लाह इज़्ज़ोजल मुझ पर रहम फ़रमाये। इसलिये कि अल्लाह तआला

की जनाब में कितआ रहमी और इस पर ज़ुल्म करने के सिवा मेरा कोई गुनाह नहीं है।

वह बुज़ुर्ग बयान करते हैं इसके बाद मैं उस जगह पहुंचा जहाँ उसने अमानत को दफ्न बताया था और मैंने खोदा और थैली मौजूद पाई जिसमें मेरी अमानत थी और वह वैसी ही बंधी हुई थी जैसे मैंने उसे बांध कर दी थी मैं उसे लेकर अजम की शहरों की तरफ़ रवाना हुआ और उसकी बहन की बाबत दरयाफ़्त किया और वह मुझे मिली मैंने उसे अव्वल ता आख़िर सब माजरा ब्यान किया वह सुनकर रोने लगी और मैंने उसके भाई के छुटकारे में उससे कहा तो वह अल्लाह की जनाब में कलफ़ और हाजत की शिकायत करने लगी इस पर मैंने कुछ दुनियावी माल उसे दे दिया और मैं उसके पास से चला आया। लिहाज़ा हर मोमिन को ज़रूरी है कि वह सिलह रहमी करे।

पेशाब की छींटों से ना बचने पर अज़ाबे क़ब्र :-

हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम दो क़ब्रों के पास से गुज़रे तो आपने फ़रमाया इन दोनों को अज़ाब हो रहा है और किसी बड़े मामले में नहीं उनमें से एक तो पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा चुग़ल ख़ोरी करता था। फिर आपने एक तर शाख़ ली और उसके दो टुकड़े किये और हर क़ब्र पर एक एक लगा दी सहाबा कराम रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम यह क्यों किया? तो आपने फ़रमाया कि शायद जब तक यह खुश्क ना हों अल्लाह उनके अज़ाब में कमी फ़रमाये।

(इब्ने अबी शैबह)

हज़रत इब्न उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायात है कि मैं एक सफ़र में जबकि ज़माना जहालत था क़ब्रिस्तान से गुज़रा तो देखा कि एक आदमी क़ब्र से ज़ाहिर हुआ जो आग के शोलों से खेल रहा था और गले में आग की ज़न्जीर थी। मेरे पास पानी का एक बर्तन था जब उसने मुझे देखा तो कहने लगा ऐ अब्दुल्लाह! मुझे पानी पिलायो इतने में उसी के पीछे एक और आदमी क़ब्र से ज़ाहिर हुआ और कहने लगा ऐ अब्दुल्लाह तुम इसको पानी न पिलाना क्यों कि यह काफ़िर है फिर उसने उसको कोड़े मारे और खेंच कर उसे क़ब्र में धकेल दिया। फिर मैंने रात ऐसी बुढ़िया के पास गुज़ारी जिसके घर के करीब एक क़ब्र थी तो मैंने क़ब्र से आवाज़ सुनी। "बोल व माबोल, शन व माशन" मैंने बुढ़िया से पूछा यह क्या है?

उसने कहा कि यह मेरा शौहर है जब पेशाब करता था तो उसकी छींटों से नहीं बचता था मैं उससे कहती थी ऊंट जब पेशाब करता है तो तू छींटों से नहीं बचता है लेकिन वह न सुनता था तो अब जबसे मरा है कह रहा है "बोल व माबोल" मैंने कहा कि अशन व मशन क्या है? उसने जवाब दिया कि इसके पास एक प्यासा शख़्स आया तो उसने कहा कि मुझे पानी पिलाओ। उसने कहा वह मशकीज़ा ले लो जब उसने मशकीज़ा उठाया तो वह ख़ाली था। वह शख़्स उसको ख़ाली देखकर बेहोश हो गया और फिर मर गया तो यह उस दिन ही से पुकार रहा है मशकीज़ा, मशकीज़ा फिर जब मैं नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने तन्हा सफ़र करने से मना फ़रमा दिया।

(इब्ने अबी अददुनिया)

तकब्बुर पर अज़ाबे क़ब्र :-

इब्ने अबी अददुनिया ने मुर्शिद बिन हूशब से रिवायत किया कि मैं युसुफ़ बिन उमरू के पास बैठा था और उनके पहलू में एक शख़्स बैठा था जिसके चेहरे का थोड़ा सा हिस्सा लोहे का बना हुआ था तो यूसुफ़ ने उससे कहा मुर्शिद को बताओ जो कुछ भी तुमने देखा है इसने कहा मैंने एक शख़्स की रात को क़ब्र खोदी जबकि लोग उसको दफ़ना कर चले गये थे तो दो परिन्दे जिनकी शकल ऊंट की सी थी सफ़ेद रंग में आये। एक तो सर की जानिब गिर पड़ा दूसरा पैर की जानिब। फिर उसको खोद कर एक तो क़ब्र में दाख़िल हो गया और दूसरा किनारे पर खड़ा रहाँ मैं क़ब्र के क़रीब आ गया ताकि माजरा देखूं मैंने सुना कि वह परिन्द साहिबे क़ब्र से कह रहा है कि ऐ इंसान! क्या तू वही नहीं जो क़ीमती बनावट के कपड़े पहनकर तकब्बुर से चलकर अपने ससुराल जाता था उसने कहा मैं इसको बर्दाश्त करने से क़ासिर हूँ। तो उसने एक ऐसी ज़र्ब लगाई कि क़ब्र का पानी और तेल तक निकल आया और इसी तरह तीन बार मारा। फिर उसने सर उठा कर मेरी तरफ़ देखा और कहा कि देखो वह कहाँ बैठा हुआ है खुदा उसे ज़लील करे। फिर उसने मेरे मुँह पर एक तरफ़ चोट मारी तो मैं रात भर बेहोश पड़ा रहाँ अब जब सुबह उठा तो यह हशर था जो आप देख रहे हैं।

ख़्यानत करने वाले को अज़ाबे क़ब्र :-

नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का मेराज की रात ऐसे लोगों

पर गुज़र हुआ जिन्होंने अपनी पीठों पर बहुत सा बोझ उठा रखा था यहाँ तक कि वह लोग बोझ की वजह से हिलने जुलने की ताक़त नहीं रखते मगर फिर भी वह लोग कह रहे थे कि हाँ और बोझ हमारी पीठ पर रख दो। इस तरह उनके कहने पर और बोझ रख दिया जाता नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने पूछा यह कौन लोग हैं? हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! यह वह लोग हैं जा अमानत में ख़्यानत करते थे पहले भी उनके ज़िम्मा लोगों के हुक़ूक़ होते लेकिन फिर भी यह अपने ज़िम्मा और लोगों के हुक़ूक़ ले लेते यानी किसी का हक़ भी अदा नहीं करते थे।

(मआरूजनबुव्वत सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम 134 जि. 3)

अहमद व निसाई, इब्न ख़ज़ीमा और बेहक़ी ने अबू राफ़्ये से रिवायत किया उन्होंने कहा कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के हमराह बक़िय में से गुज़रा तो आपने फ़रमाया "उफ़! उफ़" तूने गुमान किया कि शायद आप मेरा इरादा फ़रमाते हैं मैंने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह! क्या मुझ में कोई ख़ता तो नहीं हुई? आपने फ़रमाया कि नहीं बल्कि इस क़ब्र वाले शख़्स को मैंने बनू फ़्लाँ के पास ज़कात वसूल करने के लिये भेजा तो उसने एक जर्रह बतौर ख़्यानत बचाली। अब वह ज़र्रह आग की हो गई है और उसको पहना दी गई है।

मिलावट करने का अज़ाब :-

इब्न अबी अददुनिया और बेहक़ी ने शुऐबुल ईमान अब्दुल हमीद बिन महमूद से रिवायत किया कि मैं इब्न अब्बास रदियल्लाहु अन्हु के पास बैठा था तो उनके पास कुछ लोग आये और उन्होंने बताया कि हम हज को गये हमारे साथ हमारा एक साथी भी था जब हम ज़ातुस्सफाह के मक़ाम पर पहुंचे तो वह फ़ौत हो गया और हमने उसके क़फ़नाने दफ़नाने का इन्तज़ाम किया जब क़ब्र खोदी तो वह सांपों से भरपूर थी तो हमने वह क़ब्र छोड़कर दूसरी क़ब्र खोदी तो वह भी इसी तरह भरी हुई थी। तो हम अब आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए तो इब्न अब्बास रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि यह सब कुछ इस कीना की वजह से है जो वह दिल में रखता था। और बेहक़ी के अलफ़ाज़ यह हैं कि इसके आमाल की सज़ा है जाओ तुम इसे इन दोनों में से एक में दफ़न कर दो। क्योंकि ख़ुदा की क़सम अगर तुम इसके लिये तमाम ज़मीन भी खोद डालो तो वह उन्हीं क़ब्रों में मुन्तक़िल कर देगा। तो हमने उसको वहीं जाकर दफ़न कर

दिया। वापिस आकर हमने उसकी औरत से उसके आमाल के बारे में सवाल किया तो उसने बताया कि यह खाना बेचता था और उसमें से अपने घर वालों के लिये निकाल लेता था और कमी को पूरा करने के लिये उसमे उतनी ही मिलावट कर देता था।

ज़ख़ीरा अन्दोज़ी का अज़ाब :-

अल्लामा इब्ने क़ीम ने अपनी सनद से अबू अब्दुल्लाह हराफ़ी से रिवायत किया कि वह असर के बाद अपने घर से बतान की तरफ निकले। मग़रिब से कुछ क़ब्रिस्तान की तरफ़ गये तो एक क़ब्र लोहार की भटटी की मानिन्द सुर्ख़ थी और मुर्दा उसके दरम्यान था मैंने साहिबे क़ब्र के बारे में लोगों से पूछा तो मालूम हुआ कि वह ज़ख़ीरा अन्दोज़ था जो आज ही फ़ौत हुआ है।

सुन्नत पर अमल ना करने का अज़ाब :-

शैख़ अबू इस्हाक़ फ़ज़ारी अलैह रहमा की ख़िदमत में एक आदमी आया करता था जो अपना निस्फ़ चेहरा हर दम छिपाकर रखता शैख़ ने उससे उसकी वजह पूछी तो उसने राज़दारी का अहद लेने के बाद बताया कि मैं एक कफ़न चोर था एक मर्तबा एक औरत की क़ब्र पर कफ़न चुराने गया। रात का वक़्त था। क़ब्र की ईटें निकालने के बाद मैंने पहले उसकी चादर खेंच ली फिर कफ़न खेंचने लगा। उधर से मुर्दा औरत खेंचने लगी मैंने कहा तू मुझसे ताक़तवर नहीं बिल आख़िर मैंने दोनों घुटनों से ज़मीन पर ज़ोर देकर ज़ोर से खेंचने लगा। इतने में क़ब्र से औरत ने मेरे गाल पर एक ज़न्नाटेदार थप्पड़ मारा जिससे मेरे रूख़्सार पर उसकी पांचों उंगलियों के निशान बन गये शैख़ ने कपड़ा उठाकर देखा तो वाक़ई उंगलियों के निशान ज़ाहिर थे।

शैख़ अबू इसहाक़ ने कहा ऐ बन्दे! फिर क्या हुआ? उसने कहा कि इसके बाद मैंने उसका कफ़न वापिस किया क़ब्र की ईटें दुरूस्त कीं और मिटटी बराबर कर दी और दिल में यह पुख़्ता अहद किया कि जब तक ज़िन्दा रहूँगा कभी फिर यह ग़लत काम न करूंगा।

शैख़ अबू इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते है कि इस वाक़िया को मैंने मिन्नोअन्न शैख़ औज़ायी रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़िदमत में लिख कर भेजा तो उन्होने तहरीर फ़रमाया। "ज़रा इससे पूछो कि तुम अहले तौहीद मुर्दों के कफ़न चुराने जाते थे तो उन सबका रूख़ क़िबला ही की

जानिब होता था? इसने जवाबन कहा कि बहुतेरों के मुँह क़िबले से मुन्हरीफ़ होते थे। शैख़ अबू इस्हाक़ ने शैख़ औज़ायी रहमतुल्लाहि अलैहि को जब इसका यह जवाब लिखा तो शैख़ ने जवाब में तीन बार यह लिखा "इन्नालिल्लाही व ईन्ना इलैहिराजेउन" याद रखो जिसका मुँह क़िबला से फिर गया यह वह होगा जिसे ग़ैर सुन्नत पर मौत आई।

इमाम याफ़यी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि इससे मुराद दीन हक़ की मुख़ालिफ़त है। होता यह है कि कबायर का इर्तिकाब इंसानों को कुफ़्र तक पहुंचा देता है इसी को क़ुरआन ने फ़रमाया है। "बुराई करने वालों का यह अंजाम इसलिये हुआ कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनका मज़ाक़ उड़ाया।" (रौज़ुररियाहीन)

तौहीन सहाबा रदियल्लाहु अन्हु पर अज़ाबे क़ब्र :-

इब्ने अबी अद-दुनिया में मरफ़ूअन हसन से रिवायत किया कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो मेरे सहाबा रदिअल्लाहु अन्हु में से किसी को गाली देता हो तो अल्लाह उस पर एक जानवर को मुसल्लत कर देगा जो उसके गोश्त को खायेगा और वह क़यामत तक इन्हीं मुसीबतों में गिरफ़्तार रहेगा।

इब्ने अबी अद-दुनिया ने अबू इस्हाक़ से रिवायत किया है, वह कहते हैं कि मैंने एक मय्यत को ग़ुस्ल दिया, अब जो मैंने कपड़ा हटाकर देखा तो उसकी गर्दन में एक साँप लिपटा हुआ है तो लोगों ने बताया कि यह सहाबा किराम रदिअल्लाहु अन्हुम को गालियाँ देता था।

नाजायज़ ज़ेबो-ज़ीनत पर अज़ाब :-

ख़तीब और इब्न असाकर ने अबू मूसा अशअरी से रिवायत किया कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मैंने कुछ ऐसे अशख़ास देखे जिनकी ज़बानें आग की कैंचियों से काटी जा रही थीं मैंने पूछा यह कौन है? तो बताया गया कि यह वह लोग हैं जो ऐसी चीज़ों से ज़ीनत हासिल करते थे जो उनके लिये जायज़ ना थीं नीज़ मैंने एक गढ़ा देखा जिसमें शोर ग़ोग़ा बरपा था मैंने पूछा यह क्या है? तो मुझे बताया गया कि यह वह औरतें हैं जो नाजायज़ आशिया से ज़ीनत हासिल करती थीं और कुछ लोग ऐसे देखे जो आबे हयात में ग़ुस्ल कर रहे थे यह वह लोग थे जो दुनिया में अच्छे और बुरे दोनों अमल करते थे।

मेहमान नवाज़ी ना करने का अज़ाब :-

इब्न अबी शैबह ने क़बूर में हवीरस इब्न रबाब से बिलकुल इसी तरह वाक़िया बयान किया इसमें इतने अलफ़ाज़ मज़ीद हैं कि जब मैं इस अजीब व ग़रीब वाक़िया को देख चुका तो सुबह को हज़रत उमर फ़ारूक़ रदियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और वाक़िया सुनाया तो आपने फ़रमाया कि बखुदा मैं तुझे झूठा नहीं कहता तूने मुझे सच्चा वाक़िया सुनाया। फिर हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु ने चन्द बुज़ुर्गों को बुलाया जो ज़माना जाहिलीयत पा चुके थे। जब वह आये तो आपने हवीरस से कहा कि पूरा वाक़िया इन बुज़ुर्गों को सुनाओ चुनांचे उन्होंने सुनाया तो उन्होंने सुनकर कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन! क़ब्र वाले आदमी को हमने पहचान लिया ये बनू ग़फ़्फ़ार का एक शख़्स है जो ज़माना जाहिलीयत में मर चुका था यह शख़्स मेहमानों का कोई हक़ अपने ऊपर ना रखता था।

(अहले क़बूर के लिये फ़ायदा देने वाले आमाल)

इस्लाम में कुछ नेक आमाल ऐसे हैं जिन्हें ज़िन्दा लोग अहले क़बूर की ख़ातिर सर अंजाम दें तो क़ब्रों में अहले क़बूर को उनका फ़ायदा पहुंच जाता है और उनकी सख़्तियां माफ़ हो जाती हैं और अगर अल्लाह चाहे तो अज़ाबे क़ब्र में तख़फ़ीफ़ कर दी जाती है बशरते की नेक आमाल अल्लाह तआला को राज़ी करने के लिये किये जायें। और इस नियत के साथ दुआ की जाय कि नेक आमाल का सवाब फ़ौत होने वाले को पहुंचे तो अल्लाह तआला इन आमाल को क़बूल फ़रमाकर उनका सवाब मय्यत को पहुंचा देता है। इस सवाब की बिना पर क़ब्र में अगर मय्यत को अज़ाब हो रहा हो तो उसमें तख़फ़ीफ़ कर दी जाती है या उससे अज़ाब को बिल्कुल ख़तम कर दिया जाता है और मय्यत को राहत हो जाती है। अगर मय्यत पहले ही राहत में हो तो सवाब पहुंचने की बिना पर उसके दर्जात में बुलन्दी कर दी जाती है। गरज़ के इसाल सवाब का फ़ायदा हर सूरत में अहले क़बूर को पहुंचता है।

सात आमाल का सवाब :-

एक हदीस के मुताबिक़ मुसलमान की मौत के बाद जिन चीज़ों का सवाब उसे मिलता है वह यह हैं। दीन का इल्म जो उसने किसी को सिखाया हो या अशाअत करके फैलाया हो। या नहर जारी हो, अल्लाह

के लिये कोई कुआँ खुदवाया हो। या लोगों के फ़ायदे के लिये दरख़्त लगाया हो, या मस्जिद बनवाई हो, या वह क़ुरआन पाक जो तिलावत के लिये उसने छोड़ा हो। या सालेह और नेक औलाद छोड़ी जो उसके लिये दुआ करती हो। ये नेक आमाल ऐसे हैं कि मौत के बाद इनका सवाब इंसान को मिलता रहता है। इन तमाम आमाल में रज़ाये इलाही का मुक़द्दम होना ज़रूरी है।

हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सात आमाले सालिह ऐसे हैं जिनका सवाब आमिल को उसकी मौत के बाद क़ब्र में मिलता रहता है। जिसने किसी को इल्म दीन सिखाया, या नहर जारी की, या कुआँ खुदवाया या कोई दरख़्त लगाया या मस्जिद तामीर की या क़ुरआन करीम तिलावत के लिये दिया या अपने बाद ऐसा लड़का छोड़ा जो उसके लिये दुआ करता रहे। (कन्ज़ुलअमाल - जि. 15 सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम 954)

इसके अलावा चन्द नेक आमाल और भी हैं जिनका सवाब मरने वाले को पहुंचता है जिनका ज़िक्र आने वाले अहादीस में है।

सदक़ा जारिया :-

सदक़ा ज़ारिया वह होता है जिसका नफ़ा बाक़ी रहने वाला हो। मसलन कोई मस्जिद बनवाया गया जिसमें लोग नमाज़ पढ़ते रहे तो जब तक इसमें नमाज़ होती रहेगी उसको सवाब खुद बखुद मिलता रहेगा। इसी तरह से कोई मकान किसी दीनी काम के लिये बनवाकर वक़्फ कर गया कोई मुसाफ़िरख़ाना जिससे मुसलमानों को नफ़ा पहुंचता रहा तो इस नफ़ा का सवाब उसको मिलता रहेगा। कोई कुआँ रफ़ाहे आम के लिये बनवा गया तो जब तक लोग उससे पानी पीते रहेंगे वज़ु वग़ैरह करते रहेंगे उसको मरने के बाद भी इसका सवाब पहुंचता रहेगा। इसके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का फ़रमान यह है।

हज़रत अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि चार आमाल ऐसे हैं कि उनका अज्र मौत के बाद भी जारी रहता है। (1) जो शख़्स अल्लाह की राह में जेहाद करता हुआ शहीद हो गया। (2) और जिसने किसी को इल्मदीन पढ़ा या फिर उस पर अमल किया गया। (3) और जिसने इस क़िस्म का सदक़ा किया वह उसकी मौत के बाद भी जारी है। (मसलन मस्जिद

शफ़ाखाना था दीनी मदरसा तामीर किया) (4) और जिस शख़्स ने अपने पीछे ऐसा लड़का छोड़ा कि वह सालिह है अपने वालि के लिये उसकी मौत के बाद हमेशा दुआ करता रहता है।

(कन्जुल-आमाल-जि.15 सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम 952)

अपने किसी अज़ीज़ की तरफ़ से जो फ़ौत हो गया हो सदक़ा जारिया का काम कर सकते हैं यानी कोई नेक अमल इस नियत से करें कि इसका सवाब मरहूम को मिले तो इसका सवाब उसे मिलता रहेगा। जैसा कि हदीस पाक में है।

हज़रत आईशा रज़िअल्लाहु अन्हा रिवायत करती है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि मेरी वाल्दा का नागिहानी तौर पर इन्तक़ाल हुआ और मेरा ख़्याल यह है कि अगर वह बात करतीं तो सदक़ा की बाबत कहतीं अगर मैं उनकी तरफ़ से सदक़ा करूं तो क्या उनको अज्र मिलेगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। (मुस्लिम)

हज़रत उक़बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बेशक सदक़ा अपने अहल से ह रते क़ब्र को बुझाता है। (तिबरानी)

हज़रत सआद बिन अबादा रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि उम्मे सआद का इन्तक़ाल हो गया उनके लिये कौन सा सदक़ा अफ़ज़ल है। आपने फ़रमाया पानी का लिहाज़ा मैंने एक कुआँ खुदवाया और उसको उम्मे सआद के नाम से मौसूम किया। (अबूदाऊद, निसाई)

साहिबे "गदह" बयान करते हैं कि अगर कोई चशमा निकाले, कुआँ खोदे या दरख़्त लगाये या क़ुरआन को अपनी ज़िन्दगी में वक़्फ़ कर दे या इन कामों को दूसरे के मरने के बाद करे तो उसका सवाब मय्यत को पहुंचता है। जैसा कि हदीस में वारिद हुआ है और वक़्फ़ करना मसहफ़ और क़ुरआन के साथ मख़्सूस नहीं है बल्कि हर वक़्फ़ उसके साथ शामिल है।

हिकायत :-

हज़रत सालेह मरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा जुमा की शब में आखिर रात में जामा मस्जिद जा रहा था ताकि सुबह की नमाज़ वहाँ पढ़ूं सुबह में देर थी रास्ते में एक क़ब्रिस्तान था वहाँ एक क़ब्र

के क़रीब बैठ गया। बैठते ही मेरी आँख लग गई मैंने ख़्वाब में देखा कि सब क़ब्रें शक़ हो गई और उनमें से मुर्दे निकलकर आपस में हंसी खुशी बातें कर रहे हैं। उनमें एक नौजवान भी क़ब्र से निकला जिसके कपड़े मैले और वह मग़मूम सा एक तरफ बैठ गया। थोड़ी देर में आसमान से बहुत से फ़रिश्ते उतरे जिनके हाथों मे ख़्वान थे जिन पर नूर के रूमाल ढके हुए थे वह हर शख़्स को एक ख़्वान देते थे और जो ख़्वान ले लेता था वह अपनी क़ब्र में चला जाता था। जब सब ले चुके तो यह जवान भी ख़ाली हाथ अपनी क़ब्र में जाने लगा मैंन उससे पूछा कि क्या बात है तुम इस क़द्र ग़मगीन क्यों हो और यह ख़्वान कैसे थे? उसने कहा यह ख़्वान उन हदाया के थे जो ज़िन्दा लोग अपने अपने मुर्दों को भेजते हैं। मेरा और तो कोई है नहीं पीछे एक वालिदा है मगर वह दुनिया में फंस रही है मुझे कभी भी याद नहीं करती मैंने उससे उसकी वालिदा का पता पूछा और सुबह को इस पते पर जाकर उसकी वालिदा को परदे के पीछे बुलाया और उससे इसके लड़के का पूछा और यह ख़्वाब उसे सुनाया। इस औरत ने कहा बेशक वह मेरा लड़का था मेरे जिगर का टुकड़ा था मेरी गोद उसका बिस्तर था। इसके बाद उस औरत ने मुझे एक हज़ार दिरहम दिये कि मेरे लड़के और मेरी आँखों की ठंडक के लिये सदक़ा कर देना और मैं आइन्दा हमेशा उसको दुआ और सदक़ा से याद रखूंगी कभी न भूलूंगी। हज़रत सालेह फ़रमाते हैं कि फ़िर मैंने ख़्वाब में इसी मजमआ को उसी तरह देखा और उस नौजवान को भी बड़ी अच्छी पोशाक में बहुत खुश देखा वह मेरी तरफ़ को दौड़ता हुआ आया और कहने लगा कि सालेह हक़ तआला शन्हू तुम्हें जज़ाये ख़ैर अता फ़रमाये तुम्हारा हदिया मेरे पास पहुंच गया। (रौज़ुररियाहीन)

इल्म फैलाने वाले अमल का मय्यत को सवाब :-

ऐसा इल्मी काम करना जिससे लोगों को हमेशा फ़ायदा पहुंचता रहे तो उसका सवाब भी क़ब्र में मिलता है।

हज़रत अबू क़तादह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बेहतरीन चीज़ जो इंसान अपने पीछे (मरने के बाद) छोड़ता है वह तीन चीज़ें हैं (1) नेक लड़का जो उसके लिये दुआ करे (2) सदक़ा जारिया जिसका सवाब उसे पहुंचता है (3) और वह इल्म जिससे नफ़ा उठाया जाये।

(कन्जुलआमाल जि. 15 सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम 953)

इल्म से मुराद ऐसा इल्म दीन है जिससे लोगों को नफ़ा पहुंचता रहे मसलन किसी मदरसा में कोई किताब वक़्फ़ कर दिया जब तक वह किताब बाक़ी है उससे लोग नफ़ा उठाते रहेंगे उसको सवाब खुद बखुद मिलता रहेगा। किसी तालिब इल्म को अपने खर्च से हाफ़िज़ कुरआन या आलिम बना गया। जब तक उसके इल्म व हिफ़्ज़ से नफ़ा पहुंचता रहेगा चाहे वह हाफ़िज़ या आलिम खुद ज़िन्दा रहे या न रहे उस शख़्स को इसका सवाब मिलता रहेगा। मसलन किसी शख़्स को हाफ़िज़ बनाया था उसने दस बीस लड़कों को क़ुरआन पढ़ा दिया और वह हाफ़िज़ उसके बाद मर गया तो जब तक यह लड़के कुरआन पाक पढ़ते पढ़ाते रहेंगे उस हाफ़िज़ को मुस्तक़िल सवाब मिलता रहेगा और उस हाफ़िज़ बनाने वाले को सवाब खुद ब खुद मिलता रहेगा चाहे यह लोग सवाब पहुंचाये या न पहुंचायें यही सूरत बईनही किसी शख़्स के आलिम बनाने की है कि जब तक बिलावास्ता या बिलवास्ता उसके इल्म से लोगों को नफ़ा का सिलसिला चलता रहेगा इस अव्वल आलिम बनाने वाले को इन सबका सवाब मिलता रहेगा और यहाँ भी वही पहली बात है कि यह ज़रूरी नहीं कि पूरा हाफ़िज़ या पूरा आलिम खुद तने तन्हा बनाये अगर किसी हाफ़िज़ के हिफ़्ज़ में अपनी तरफ से मदद हो गई किसी आलिम के इल्म हासिल करने में अपनी तरफ़ से कोई अयानत हो गई तो इस अयानत की बक़द्रे सवाब क़यामत तक जारी रहेगा। खुशनसीब है वह लोग जिनकी किसी किसम की जानी या माली कोशिश इल्म के फैलाने में दीन की बक़ा और हिफ़्ज़ में लग जाये कि दुनिया की ज़िन्दगी ख़्वाब से ज़्यादा नहीं न मालूम कब इस आलम से एक दम जाना हो जाये। जितना ज़खीरा अपने लिये छोड़ जायगा वही देर पा और कारआमद है। अज़ीज़ करीबी अहबाब, रिशतदार सब दो चार रोकर याद करके अपने अपने मशाग़िल में लगकर भूल जायेंगे। काम आने वाली चीज़ें यही हैं जिनको आदमी अपनी ज़िन्दगी में अपने लिये कभी फ़ना न होने वाले बैंक में जमा कर जाये कि सरमाया महफ़ूज़ है और नफ़ा क़यामत तक मिलता रहे। मरहूम की तरफ़ से दीनी कुतुब और क़ुरआन मजीद छाप कर तक़सीम करने से भी मय्यत को क़ब्र में बहुत ज़्यादा फ़ायदा हासिल होता है।

नुसरत की तहक़ीक़ में कहा गया है क मुसलमानों के तमाम हसनात और उनके हर अमल सालिह हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के सहायफ़

यानी नामए आमाल में इससे ज़्यादा हैं जो आमिल के अज्र में है। और इस ज़्यादती को बजुज़ खुदा के कोई नहीं जानता इसलिये कि मुहतदी यानी हिदायत पाने वाला इसका अज्र और आमिल क़यामत तक होंगे और उसका ताज़ा बताज़ा अज्र शैख़ व मुअल्लिम के लिये उसके सवाब के बराबर होता है और उस्ताद के उस्ताद को दुगना तीसरे उस्ताद को चार गुना और चौथे उस्ताद को आठ गुना इसी तरह से बअददे उजूर हासिला हर मर्तबा में अज्र पहुंचता रहता है यहाँ तक कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम तक यह सिलसिला पहुंच जाता है और इसी बुनियाद पर बाद वालों पर पिछले लोगों की फ़ज़ीलत मालूम हो जाती है लिहाज़ा नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के बाद दस मरातिब को जब फ़र्ज़ किये जाये तो हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के लिये एक हज़ार चौबीस गुना सवाब हासिल होगा। फिर जब दसवी से ग्यारहवां हिदायत पायगा तो हुजूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का अज्र व सवाब दो हज़ार अड़तालिस हो जायगा इस तरह जितने मरतबे ज़्यादा होते जायेंगे इतने ही माक़बल से दो चन्द अज्र व सवाब बढ़ता जायेगा। और यह सिलसिला हमेशा जारी रहेगा जैसा कि मोहक़क़ीन जवाब देते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम तमाम अक़्सामे शर्फ़ में कामिल हैं लेकिन क़ारी की क़राअत का सवाब इसके मोअल्लिम को भी पहुंचेगा और फिर मोअल्लिम के मोअल्लिम को यह सिलसिला इसी तरह ऊपर को जारी होगा यहाँ तक कि मोअल्लिमे अव्वल जो कि शारअे अलैहिस्सलाम हैं आपको इन सबके बराबर अज्र पहुंचेगा जैसा कि ऊपर मज़कूर हुआ और ज़मरा में इस दुआ की मशरूयीअत है जो ख़ानए खुदा की रूयीअत के वक़्त है। ज़ायरीन कहते हैं। "अल्लाहुम्मा ज़िद हाज़ल बैता तशदीक़ौं व ताज़ीमा" (ऐ खुदा! इस घर की शराफ़त और अज़मत को और ज़्यादा फ़रमा) यह सब मवाहिबलदुनिया में बयान हुआ है चुनांचे इससे मालूम हुआ कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने अपने क़ौल में इसी तरफ इरशाद फ़रमाया है कि (जिसने कोई अच्छी बात निकाली तो उसके लिये उसके अमल करने वालों के बराबर सवाब है) यह सुन्नत हसनह के अमल के सुन्नत होने पर उम्मत को तरग़ीब व तहरीर है और इसमें हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के लिये उजूरे ग़ैर मतनाही के अस्बात और अपने कमाल की तरफ़ इशारा है। (मदारिजुन नबुव्वत)

नेक औलाद का क़ब्र में बाअसे सवाब बनना :-

नेक औलाद से भी मरने वालों को क़ब्र में फ़ायदा पहुंचता है क्योंकि नेक औलाद हमेशा अपने मरहूम वालदैन और अज़ीज व अक़ारिब के लिये दुआ करती है जिसका सवाब अहले क़बूर को मिलता है इसके अलावा औलाद को यह भी चाहिये कि वह नेक अमल करके इसका सवाब अपने मरने वालों को पहुंचाये। इससे भी मय्यत को क़ब्र में राहत हासिल होती है।

हज़रत अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब किसी की मौत का वक़्त आजाता है तो फिर अल्लाह तआला उसे मोहलत नहीं देता और इंसान की उम्र में इज़ाफ़ा की सिर्फ़ एक सूरत है कि वह नेक औलाद छोड़ जाये और वह उसके लिये दुआ करते रहें उनकी दुआ उस तक पहुंचती है पस यही उम्र में इज़ाफ़ा है कि मरने के बाद भी उसे सवाल मिलता रहता है। (कन्ज़ुल आमाल जि. 15 सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम 952)

औलाद का सालिह बनाना भी मुस्तक़िल सदक़ा जारीया है कि जब तक वह कोई भी नेक काम करती रहेगी अपने आप को उसका सवाब मिलता रहेगा। फिर अगर वह नेक औलाद वालदैन के लिये दुआ भी करती रहे। और जब वह सालिह है तो दुआएं करती ही रहेगी यह मुस्तक़िल ज़ख़ीरा वालदैन के लिये है।

हिकायत :-

एक दफ़ा का वाक़िया है कि एक बाहियह नामी औरत बड़ी कसरत से इबादत करने वाली थी जब उसका इन्तक़ाल होने लगा तो उसने अपना सर आसमान की तरफ़ उठाया और कहा कि ऐ वह ज़ात जो मेरा तोशा और मेरा ज़ख़ीरा है और इसी पर मेरी ज़िन्दगी और मौत क़ब्र में मुझे वहशत में मत रखियो। जब वह इन्तक़ाल कर गई तो उसके लड़के ने यह एहतमाम शुरू कर दिया कि हरजुमा को वह माँ की क़ब्र पर जाता और क़ुरआन शरीफ़ पढ़कर उसको सवाब बख़्शता और उसके लिये और सब क़ब्रिस्तान वालों के लिये दुआ करता। एक दिन उस लड़के ने अपनी माँ को ख़्वाब में देखा और पूछा अम्माँ तुम्हारा क्या हाल है? माँ ने जवाब दिया मौत की सख़्ती बड़ी सख़्त चीज़ है मैं अल्लाह की रहमत से क़ब्र में बड़ी राहत से हूँ रिहान मेरे नीचे बिछी हुई है रेशम के तकिये लगे हुए हैं

क़यामत तक यही बरताओ मेरे साथ रहेगा। बेटे ने कहा कोई ख़िदमत मेरे लायक़ हो तो कहो उसने कहा कि हर जुमा को तू मेरे पास आकर क़ुरआन पाक पढ़ता है इसको ना छोड़ना जब तू आता है तो सारे क़ब्रिस्तान वाले ख़ुश होकर मुझे ख़ुश ख़बरी देने आते हैं कि तेरा बेटा आ गया मुझे भी तेरे आने की बड़ी ख़ुशी होती है और इन सबको भी बहुत ख़ुशी होती है। वह लड़का कहता है कि मैं हर जुमा को इसी तरह जाता था एक दिन मैंने ख़्वाब में देखा कि बहुत बड़ा मजमा मर्दों और औरतों का मेरे पास आया मैंने पूछा तुम कौन लोग हो क्यों आये हो? वह कहने लगे कि हम फ़लां क़ब्रिस्तान के आदमी हैं हम तुम्हारा शुक्रिया अदा करने आये हैं तुम हर जुमा को हमारे पास आते हो और हमारे लिये दुआए मग़फ़िरत करते हो इससे हमको बड़ी ख़ुशी होती है इसको जारी रखना इसके बाद मैंने इसका और भी ज़्यादा एहतमाम शुरू कर दिया।

(रौज़ुररियाहीन)

औलाद की सालिह तरबियत :-

पस अगर कोई चाहता है कि मेरी औलाद मेरे मरने के बाद भी मेरे काम आए तो अपने मक़दूर के मुआफ़िक़ उसको नेक और सालिह बनाने की कोशिश करना चाहिये कि यह हक़ीक़त में औलाद के लिये भी ख़ैर ख़्वाही है और अपने लिये भी कारआमद है अल्लाह जल्लाशान्हू का पाक इरशाद है। "ऐ ईमान वालों! अपने आपको और अपने अहलो अयाल को (जहन्नम की) आग से बचाओ।"

हज़रत ज़ैद बिन असलम रदियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने यह आयत शरीफ़ा तिलावत फ़रमाई तो सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलअल्लाह अपने अहलो अयाल को किस तरह आग से बचाएं? हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि उनको ऐसे कामों का हुकुम करते रहो जिससे अल्लाह जल्ले शान्हू राज़ी हों। और ऐसी चीज़ों से रोकते रहो जो अल्लाह तआला को ना पसन्द हों।

हज़रत अली करमल्लाहु वजह से इस आयत शरीफ़ा की तफ़सीर में नक़ल किया गया है कि अपने आपको और अपने अहल को ख़ैर की बातों की तालीम और तंबीह करते रहो।

हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का इरशाद नक़ल किया गया है कि

अल्लाह तआला उस बाप पर रहम करे जो औलाद की इस बात में मदद करे कि वह बाप के साथ नेकी का बर्ताव करे यानी ऐसा बर्ताव उससे न करे जिससे नाफ़रमानी करने लगे। (अहिया हुल उलूम)

औलाद को नेक बनाना भी इसमें दाख़िल है अगर वह नेक न होगी तो फिर वालदैन के साथ जो करे वह बरमहल है। एक हदीस में है कि बच्चे का सातवें दिन अक़ीक़ा किया जाये और उसका नाम रखा जाये और जब छः वर्ष का हो जाय उसको आदाब सिखाये जायें और जब नौ वर्ष का हो जाय तो उसका बिस्तर अलहदा कर दिया जाये (यानी दूसरों के पास न सोये) और जब तेरह वर्ष का हो जाये तो नमाज़ न पढ़ने पर मारा जाये और जब सोलह साल का हो जाये तो निकाह कर दिया जाये फिर उसका बाप उसका हाथ पकड़कर कहे कि मैंने तुझे आदाब सिखा दिये तालीम दे दी निकाह कर दिया अब मैं अल्लाह से पनाह माँगता हूँ दुनिया में तेरे फ़ितने से और आख़िरत में तेरी वजह से अज़ाब से।

(अहिया उल उलूम)

एक हदीस पाक में हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का इरशाद है जो शख़्स कोई बुरा तरीक़ा अख़्तियार करता है तो उसके अपने फेल का गुनाह भी होता है जितने लोग उसकी वजह से उस पर अमल करेंगे उन सब का गुनाह भी उसको होगा। इस बिना पर जो औलाद अपने बड़ों की बुरी हरकात उनके अमल की वजह से अख़्तियार करती है उन सब का गुनाह बड़ों को भी होता है इसलिये अपने छोटों के सामने बुरी हरकात करने से खुसूसियात से परहेज़ करनी चाहिये।

बच्चा माँ बाप के मिज़ान में गरदाना जाता है और उनसे वह खुशी और मुसर्रत पाते हैं और हक़ तआला माँ बाप की शफ़ाअत बेटों के लिये और बेटों की शफ़ाअत माँ बाप के लिये क़बूल फ़रमाता है इसकी दलील हक़ तआला का यह इरशाद है। तुम्हारे वालदैन और तुम्हारी औलाद तुम न जानो कि नफ़ा में कौन तुम्हारे ज़्यादा क़रीब है। क़रतबी फ़रमाते हैं कि बकसरत अहादीस इस क़ौल पर दलालत करती हैं कि मोमिन को अमल सालेह का सवाब उसके ग़ैर की जानिब से उसे पहुंचता है।

मय्यत की तरफ़ से हज करना :-

मय्यत को सवाब पहुंचाने का एक तरीक़ा यह भी है कि मय्यत की तरफ़ से हज या उमरा किया जाये। क़ब्र में इससे उसे राहत

मुअस्सर आयेगा।

हज़रत बरीदह रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में बैठा था कि एक ख़ातून आई और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैंने एक बान्दी अपनी वालिदा को दी थी लेकिन उनका इन्तक़ाल हो गया तो हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारे लिये अज्र वाजिब हो गया और उनकी मौत ने तुम पर मिरास वाजिब कर दी उस ख़ातून ने कहा या रसूलुल्लाह! उनके ज़िम्मा एक माह के रोज़े वाजिब थे क्यों मैं उनकी तरफ से रोजे रखूं? आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रख लो। इस ख़ातून ने फिर कहा कि उन्होंने हज भी नहीं किया था क्या मैं उनकी तरफ़ से हज कर लूं? आपने फ़रमाया हाँ! तुम उनकी तरफ से हज करो। (मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जिस किसी ने मय्यत की जानिब से हज किया तो हज करने वाले और जिसकी जानिब से हज किया गया दोनों के लिये एक सा सवाब है। (तिबरानी)

हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि या रसूलअल्लाह! मेरे वालिद फ़ौत हो गये हैं और उन्होंने हज इस्लाम यानी हज फ़र्ज़ अदा न किया था तो आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तू मुझे यह बता कि अगर तेरे बाप के ज़िम्मा किसी का कर्ज़ होता तो क्या तू उसकी जानिब से अदा करता? उसने अर्ज़ किया हाँ! या रसूलुल्लाह! तो आपने फ़रमाया तो यह भी तो उसके जिम्मा क़र्ज़ ही है तू इसको अदा कर। (मसनद बाज़ार - तिबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो कोई अपने ग़ैर के लिये हज करे उसे लाज़िम है कि पहले अपना हज करे फिर उसकी तरफ से हज (बदल) करे। यह क़यास मय्यत की तरफ से कुर्बानी के जायज़ होने पर तक़ाज़ा करता है। इसलिये कि यह सदक़ा की एक क़िस्म है लेकिन "तहज़ीब" में कहा गया है कि इसके हुक्म के बग़ैर ग़ैर के लिये क़ुर्बानी करना जायज़ नहीं है यही हुक्म मय्यत का है मगर यह कि इस पर वसीयत कर दी गई हो।

अमीरूल मोमिनीन सय्यद अली मुर्तज़ा करमल्लाह वजह नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की रिहलत के बाद आप सल्लल्लाहू अलैहि

वसल्लम की तरफ़ से कुरबानी देते थे और अबूल अब्बास मुहम्मद बिन इसहाक़ ने "सिराज" में रिवायत की है कि उन्होंने कहा मैंने रसूलुल्लाहे सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की तरफ़ से सत्तर जानवरों की क़ुरबानी दी है अब रहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की तरफ़ हदिया करना तो इसके इनकार में मेरे पास न कोई हदीस है न कोई असर। एक क़लील जमाअत ने इसका इनकार किया है और कुछ कहते हैं कि इसे सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने नहीं किया। (हालांकि उपर हज़रत अली करमल्लाहू का अमल गुज़र चुका है) बआज़ फुक्हाये मुताख़िरीन ने इसे मुस्तहब क़रार दिया है।

मय्यत की तरफ़ से नमाज़ पढ़ना और रोज़ा रखना :-

हज़रत बरीदा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक औरत ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि या रसूलअल्लाह! मेरी वालिदा (मरहूमा) पर दो महीने के रोज़े हैं क्या मैं उसकी जानिब से रोज़े रख सकती हूँ? आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ! फ़िर उसने अर्ज़ कि मेरी माँ ने हज भी नहीं किया। क्या मेरा उसकी जानिब से हज करना काफ़ी है? आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। (मुस्लिम)

हज़रत आईशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो कोई मर जाये और उस पर रोज़े हों तो उसकी जानिब से उसका वली रोज़ा रखे। (सही हैन)

हजाज बिन दीनार रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि वालदैन के मरने के बाद उनके साथ नेकी यह है कि तू उनके लिये अपनी नमाज़ के साथ नमाज़ पढ़ और अपने रोज़े के साथ उनकी जानिब से रोज़ा रख और अपने सदक़ा के साथ उनकी जानिब से सदक़ा कर। (इब्न अबी शैबा)

हज़रत आईशा रदियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि उन्होंने अपने भाई अब्दुर्रहमान की तरफ़ से एतकाफ़ किया और उनकी तरफ़ से ग़ुलाम आज़ाद किया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बकर रदियल्लाहु अन्हु की दादी ने नज़र मानी थी कि पैदल मस्जिद क़ुबा जायेंगी। फिर उनका इन्तक़ाल हो गया और नज़र पूरी न कर सकीं इस पर हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहु अन्हु ने

फ़तवा दिया कि उनके बेटे उनकी जानिब से वहाँ तक जाये।

नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम फ़रमाते है कि जो शख़्स ईद के दिन "सुब्हानल्लाहि व बे ... हि" तीन सौ बार पढ़कर फ़ौत शुदा मुसलमानों की रूह को ईसाल सवाब करेगा तो उनकी हर हर क़ब्र में हज़ारों अनवार चमकेंगे आर जब वह फ़ौत होगा तो उसकी क़ब्र में भी हज़ार नूर चमकेंगे। (नुज़हतुल मजालिस जि. 1)

तिलावते क़ुरआन का सवाब मय्यत को पहुंचाना :-

अहले क़बूर के लिये एक और नफ़ा बख़्श अमल उनको तिलावत कुरआन या ज़िक्र इलाही का सवाब पहुंचाना है जिसे ईसाल सवाब कहा जाता है जिसके मुतअलिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का फ़रमान यह है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम से सुना है आपने फ़रमाया जब तुम में से किसी का इन्तक़ाल हो तो इसको ज़्यादा देर न रोको और जल्द इसको दफ़न कर दो और मय्यत के सरहाने सूरह बक़रह की इब्तदाई आयत और पायन्ती सूरह बक़रह की आख़री आयात की तिलावत करो। (बैहक़ी)

इस हदीस के ज़िमन में शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया है कि यानी अव्वल आयत से "मुफलेहून" तक और आख़री आयत यानी "आमनर-रसूल" से ता आख़िर सूरह बक़रह। और आसार में सूरह फातिहा माउज़तीन (क़ुलआउज़ो रब्बिल फ़लक़ और क़ुलआउज़ोरब्बिन नास) और सूरह क़ुल हो वल्लाहो अहद पढ़ने और अहले क़बूर के लिये सवाब का ज़िक्र आया है मय्यत को क़ुरआन का सवाब पहुंचने में उल्मा का इख़्तेलाफ़ है क़ौल सही यह है कि सवाब पहुंचता है।

हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हु से बतरीक़ मरफ़ुअ रिवायत है कि जो शख़्स क़ब्रिस्तान जाय और वहाँ क़ुल हो वल्ला हो अहद ग्यारह मर्तबा पढ़कर इसका सवाब अहले क़ब्रिस्तान को बख़्शे तो उसे क़ब्रिस्तान में मदफ़ून मुर्दों की तादाद के बक़द्र सवाब मिलता है।

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हु रावी है कि सरकार दो आलम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का इरशाद गिरामी है कि जो शख़्स क़ब्रिस्तान

जाये और सूरह फ़ातिहा, क़ुलहोवल्लाहो अहद, और अल्हाकोमुत्तकासुर पढ़ कर अल्लाह तआला से यह अर्ज़ करें करे कि मैंने तेरे कलाम पाक में से जो कुछ इस वक़्त पढ़ा है इसका सवाब इस क़ब्रिस्तान में मदफ़ून मोमिनीन और मोमिनात को पहुंचाता हूं। तो क़ब्रिस्तान में मदफ़ून मुर्दे उसके लिये अल्लाह तआला से शफ़ाअत करने वाले हो जाते है।

हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु रावी हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स क़ब्रिस्तान जाये और वहाँ (बग़र्ज़ ईसाल सवाब) सूरह यासीन तिलावत करे तो अल्लाह तआला अहले क़ब्रिस्तान के अज़ाब में कमी करता है और उस शख़्स को क़ब्रिस्तान में मदफ़ून मुर्दों की तादाद के बक़द्र नेकियां दी जाती हैं। अहले क़बूर दुआ और सदक़ात का तोहफ़ा भेजने के बारे में हुज़ूर की एक हदीस पाक यह है। तर्जुमा

हज़रत इब्न अब्बास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आं हज़रत सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ब्र में मय्यत की हालत ऐसे शख़्स की तरह है जो पानी में ग़र्क हो रहा हो और अपनी हिफ़ाज़त के लिये पुकार रहा हो वह अपने बाप, माँ, औलाद और सच्चे दोस्त की तरफ़ से (अपने लिये) दुआ का मुन्तज़िर रहता है। जिस वक़्त उसे किसी की दुआ पहुंचती है तो वह उसके नज़दीक दुनिया और उसकी तमाम नेमतों से ज़्यादा महबूब होती है। इसलिये कि अल्लाह तआला अहले दुनिया की दुआ के साथ अहले क़बूर के पास (राहत व आराम का सामान) दुनिया के पहाड़ों की मानिन्द भेजता है और ज़िन्दों की तरफ़ से मुर्दों के लिये तोहफ़ा उनके लिये बख़शिश की दुआ और राहे खुदा में सदक़ा व ख़ैरात का सवाब है।(कन्ज़ुल आमाल जि. 15 सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम 964)

हज़रत ईमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि जब तुम क़ब्रिस्तान जाओ तो वहाँ सूरह फ़ातिहा माउज़तैन और क़ुल हो वल्लाहो अहद पढ़कर इसका सवाब अहले क़ब्रिस्तान को पहुंचाओ जो उन्हें पहुंच जाता है ईसाले सवाब के लिये क़ब्रो पर जाने से अहले क़ब्र (यानी मय्यत) के लिये तो यह मक़सूद है कि वह ईसाले सवाब और दुआऐ मग़फ़िरत वग़ैरह से फायदा हासिल करें और क़ब्र पर जाने वाले के लिये इससे बेहतर है कि वहाँ पहुंच कर वह इब्रत हासिल करे। हज़रत ईमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि का भी यही मस्लक है कि मय्यत के लिये क़ुरआन की तिलावत नफ़ा नख़्श है और इसका सवाब उसे

पहुंचता है जिसकी बिना पर अहले क़बूर को राहत हासिल होती है।

हिकायत :-

हज़रत हम्माद मक्की रहमतुल्लाहि अलैहि अपना एक वाक़िया ब्यान करते हैं कि एक रात मैं मक्का के एक क़ब्रिस्तान पहुंचा और वहाँ एक क़ब्र पर सर रखकर सो रहाँ अचानक (ख़्वाब में) क्यो देखता हूँ कि अहले क़ब्रिस्तान (यानी मुर्दे) मुख़्तलिफ़ टुकड़ियों में हलक़ा बनाये बैठे हैं। मैंने कहा क्या क़यामत क़ायम हो गई है (जो तुम सब क़ब्रों से बाहर निकले बैठे हो) उन्होंने कहा नहीं बल्कि हमारे भाईयों में से एक शख़्स ने क़ुल हो वल्ला हो अहद पढ़कर उसका सवाब हमें बख़्शा है लिहाज़ा अब हम लोग एक वर्ष से यहाँ बैठे हुए इसी सवाब को आपस में तक़सीम कर रहे हैं।

हिकायत :-

एक और आलिम फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने ख़्वाब में देखा कि एक क़ब्रिस्तान की सब क़ब्रें एक दम शक़ हो गई और मुर्दे उनमें से बाहर निकलकर ज़मीन पर से जल्दी जल्दी कोई चीज़ चुन रहे हैं लेकिन एक शख़्स फ़ारिग़ बैठा है वह कुछ नहीं चुनता। मैंने उसके पास जाकर सलाम किया और उससे पूछा कि यह लोग क्या चुन रहे हैं इस शख़्स ने कहा कि जो लोग कुछ सदक़ा दुआ दुरूद के इस क़ब्रिस्तान वालों को भेजते हैं उसकी बरकात समेट रहे हैं। मैंने कहा तुम क्यों नहीं चुनते? इसने कहा मुझे इस वजह से इस्तग़ना है कि मेरा एक लड़का है जो फ़लां बाज़ार में ज़लाबिया (जो हलवे की एक क़िस्म जो मुँह को चिपक जाती है) बेचा करता है वह रोज़ाना मुझे एक क़ुरआन शरीफ़ पढ़कर बख़्शता है। मैं सुबह को उठकर उस बाज़ार में गया मैंने एक नौजवान को देखा कि वह ज़लाबिया फ़रोख़्त कर रहा है और उसके होंठ हिल रहे हैं। मैंने पूछा तुम क्या पढ़ रहे हो? उसने कहा मैं रोज़ाना एक क़ुरआन पाक ख़तम करके अपने वालिद को हदिया पेश किया करता हूँ। इस क़िस्सा के एक अरसा बाद मैंने फिर एक मर्तबा इस क़ब्रिस्तान के आदमियों को इसी तरह चुनते देखा और इस मर्तबा उस शख़्स को भी चुनते देखा जिससे पहली मर्तबा बात हुई थी फिर मेरी आँख खुल गई मुझे इस पर तआजुब था सुबह उठकर मैं फिर उसी बाज़ार में गया। तहक़ीक़ से मालूम हुआ कि उस लड़के का इन्तक़ाल हो गया।

(रौज़ुररियाहीन सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम 194)

एक खातून ने अपनी फ़ौत शुदा सहेली को ख़्वाब में देखा वह एक तख़्त पर बैठी है और उसके नीचे एक नूरानी बर्तन ठका हुआ रखा है। उसने पूछा इसमें क्या है? उसकी सहेली ने जवाब दिया इसमें वह तोहफ़ा रखा है जो कल रात मेरे शौहर ने मेरे लिये भेजा है। बेदारी के बाद सहेली के ख़ाविन्द से उस औरत ने पूछा कि तूने अपनी बीवी को शबे गुज़शता क्या हदिया रवाना किया था उसने कह क़ुरआन शरीफ़ पढ़ कर मैंने ईसाले सवाब किया था औरत ने अपने ख़्वाब का वाक़िया उसे बता दिया।

शैख़ याफ़यी यमनी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं मुल्क यमन में एक शख़्स ने अपने दोस्त को जिसका इन्तक़ाल हो चुका था ख़्वाब में देखा उसने कहा ज़रा मेरे फ़लां दोस्त को मेरा सलाम कहकर शुक्रिया अदा कर दीजियेगा कि मौला करीम उन्हें बेहतरीन जज़ा से नवाज़े उन्होंने मेरे लिये क़ुरआन मजीद की तिलावत करके सवाब बख़्शा है।

बआज़ उलमा ने तहरीर फ़रमाया है कि शेख़ ईमाम अज़ुद्दीन बिन अब्दुस्सलाम को लोगों ने उनकी वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा तो सवाल किया कि आप तो क़ुरआन मजीद के ईसाले सवाब को नहीं मानते थे। अब इस बारे में क्या ख़्याल है? उन्होंने कहा कि मैंने यहाँ (आलमे बरज़ख़ में) अपने गुमान के ख़िलाफ़ देखा। (स. 195)

औलिया अल्लाह और बुज़ुर्गाने दीन में से बआज़ कश्फ़ो करामात के ज़रिया अहले क़बूर के अहवाल पर मुत्तला होते हैं और कुछ ऐसे बुलन्द मर्तबा भी होते हैं जो मुर्दों को ज़िन्दों की मानिन्द देखते हैं और उनसे बाते करते हैं और उनकी हाजत रवाई भी फ़रमाते हैं। जैसे शैख़ आरिफ़ बिल्लाह, साहिबे मक़ामात, अबू अज़ज़बिह इस्माईल बिन मुहम्मद यमनी हज़रमी रहमतुल्लाहि अलैहि के बारे में रिवायत है।

हज़रत शैख़ हज़रमी रहमतुल्लाहि अलैहि मुल्क यमन में एक मक़बरा से गुज़रे आप पर गिरया तारी हुआ और सख़्त रंज व कुलफ़त से रोये। फिर कुछ देर बाद खूब हंसे और मोसर्रत व फ़रहत ज़ाहिर हुई। हाज़रीन ने हज़रत के यह हालात देख कर तआजुब किया और वजह दरयाफ़्त की फ़रमाया इस क़ब्रिस्तान के लोगों की ख़स्तह हाली मुझ पर ज़ाहिर हुई मैंने उन्हें अज़ाब में मुब्तला देखा तो ग़मनाक होकर रोया। रब तआला के हुज़ूर उनके लिये गिरया व ज़ारी की। अरहमुर-राहिमीन का हुक्म हुआ कि उनके हक़ में तेरी सिफ़ारिश क़बूल हुई यह सुनकर उस फ़्लाँ क़ब्र के

मुर्दे ने कहा मैं भी उन्हीं में से हूँ मैं फ़्लाँ गाने वाली औरत हूँ इस पर मुझे हंसी आ गई। और मैंने कहा तू भी उन्ही के साथ है। रावी का ब्यान है कि शैख़ ने गोरकुन से पूछा फ़्लाँ नई क़ब्र किसकी है? उसने बताया कि फ़्लाँ गाने वाली की क़ब्र है।

शैख़ अबू मोहम्मद अब्दुल्लाह असअद याफ़यी यमनी रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते हैं कि मुर्दों को अच्छी या ख़राब हालत में देखना ज़िन्दों के लिये एक तरह का कशफ़ है जो अल्लाह तआला की जानिब से ज़ाहिर किया जाता है ताकि उसके ज़रिया कोई खुश ख़बरी, कोई नसीहत, कोई अच्छाई, ईसाले ख़ैर, अदाये क़र्ज़ या और कोई मस्लेहत वाबस्ता होती है यह कशफ़ कभी ख़्वाब के ज़रिया होता है और कभी बेदारी में। ऐसा अकसर ख़्वाब ही में होता है।

शैख़ याफ़्यी यमनी अलैह रहमा ने अपने वालिद को उनकी वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा वह गुस्सा में थे क्योंकि इन्तक़ाल के वक़्त मैं दूर दराज़ मक़ाम पर था मैंने अर्ज़ कि अब्बा जान! सय्यदना याकूब अलैहिस्सलाम ने अपनी औलाद के लिये कितना सब्र फ़रमाया। जवाबन उन्होंने कहा हमें अंबियाऐ कराम से मशाबहत दे रहे हो क्या हमारा सब्र भला अंबिया के हम पल्ला हो सका है? इसके बाद एक बार माह रजब शबे जुमा उनकी क़ब्र पर मैं तिलावत करके लेट गया तो उन्हें ख़्वाब में देखा मुझे देख कर वह खुश थे। फ़रमाया अल्लाह तआला ने तुझ पर तीन अहसान किये हैं, एक तुम्हारी मुलाक़ात ---- इससे क़बल कि कुछ और कहें मैं बेदार हो गया।

बिला शुबह उल्मा का इसमें एख़्तलाफ़ है कि क़राअत क़ुरआन का सवाब मय्यत को पहुंचता है या नहीं मज़हब शवाफ़ा के अक्सर मशहूर उलमा और ईमाम मालिक और अहनाफ़ की मुख़्तसर जमाअत के नज़दीक नहीं पहुंचता है लेकिन शवाफ़ा और अहनाफ़ के अक्सर उलमा का यह मज़हब भी है कि पहुंचता है ईमाम अहमद भी इसी के क़ायल हैं बल्कि ईमाम अहमद से तो यह मनकूल है कि मय्यत को हर चीज़ पहुंचती है ख्वाह सदक़ा हो या नमाज़ व हज व ऐतकाफ़ व क़राअत और ज़िक्र वग़ैरह।

शैख़ शमशुद्दीन क़स्तलानी कहते हैं कि क़ुरआन करीम का सवाब पहुंचना सही है क़रीब से हो या अज नबी या वारिस या ग़ैर वारिस से हो जिस तरह की बईजमा, सदक़ा, दुआ और अस्तग़फ़ार नफा देता है।

क़ाज़ी हुसैन ने फ़तवा दिया है कि क़ब्र पर क़रआत क़ुरआन की उजरत लेना जायज़ है जिस तरह कि अज़ान और तालीम क़ुरआन के लिये उजरत लेना जायज़ है। चाहिये कि क़ुरआन के बाद मय्यत के लिये दुआ करे इसलिये कि दुआ उसके साथ मिल जाती है और बाद क़राअत दुआ करना क़बुलियत से ज़्यादा नज़दीक और बरकत की रू से ज़्यादा है। शैख़ अब्दुल करीम साल्वी ब्यान करते हैं कि अगर क़ारी अपनी क़िरअत के दौरान नियत करे कि इसका सवाब मय्यत के लिये है तो नहीं पहुंचेगा क्योंकि यह इबादत बदनी है लिहाज़ा ग़ैर से वाक़ि नहीं होगी लेकिन अगर नियत करने के बाद क़राअत की और जो कुछ हासिल हुआ है उसे मय्यत के लिये बख़्शा दे तो यह दुआ है और इसके हुसूल से सवाब मय्यत को नफ़ा देता है।

उलमा फ़रमाते हैं कि मौज़ये क़ुरआन, बरकत और नुज़ूल रहमत की जगह है और मुर्दा हुक्म में ज़िन्दा के मौजूद है लिहाज़ा जिस वक़्त क़ारी उसे सवाब पहुंचाये तो नुज़ूल रहमत और हुसूले बरकत की उम्मीद रखनी चाहिये।

तिलावते क़ुरआन के दलाईल :-

ईमाम जलालुद्दिनस्यूती ने शरहउस्सदूर में लिखा है कि मय्यत के लिये क़ुरआन पढ़ने से आया मय्यत को सवाब मिलता है या नहीं? इसमें इख़्तेलाफ़ है जम्हूर सल्फ़ और आईम्मा मुज़तहदीन सवाब पहुंचने के क़ायल हैं हमारे ईमाम, ईमाम शाफ़यी ने एख़्तेलाफ़ किया उन की दलील यह आयत है कि "व अलैसालिलइंसानइल्लामासआ" (इंसान को उसी की कोशिश का बदला मिलेगा) लेकिन इस आयत का जवाब चन्द वजूह से दिया गया है। अव्वल तो यह कि यह आयत मंसूख है इस आयत से "वल्लज़ीना आमन वत्त बअत हुम ज़ुर्रियतहुम" और वह लोग जो ईमान लाये और उनके बाद उनकी ज़ुर्रियत आई। इस आयत का मफ़ाद यह है कि बेटों को बाप की नेकी से जन्नत में दाख़िल कर दिया गया।

दोम यह कि यह आयत क़ौम इब्राहीम व मूसा के साथ मख़्तस है लेकिन यह उम्मते मरहूमा तो इसको वह भी मिलेगा जो खुद करेगी और वह भी जो उसके लिये किया जायगा यह क़ौल अकरमा का है।

तीसरे यह कि इंसान से मुराद यहाँ काफ़िर है और मोमिन इससे मुस्तसना हैं यह क़ौल रबीय बिना अनस का है।

चौथे यह क़ानून अदल है और दूसरे के किये से फ़ायदा का पहुंचना इसका फ़ज़्ल है यह हुसैन बिन फ़ज़्ल का क़ौल है।

पाँचवीं लाम बमानी अला है कि इंसान के ज़रर इसके किये हुए गुनाह का होगा न कि दूसरे का जो हज़रात सवाब के पहुंचने के क़ायल हैं वह यही क़यास करते हैं कि जब हज सदक़ा, वक़्फ़, दुआ, क़िराआत का सवाब पहुंच सकता है तो दूसरी इबादात का भी पहुंच सकता है अगरचे यह अहादीस ज़ईफ़ हैं लेकिन उनकी मजमूई हैसियत से ईसाल सबाब की असल साबित हो सकता है। नीज़ क़दीम से मुसलमान अपने मुर्दों के लिये जमा होकर क़ुरआन पढ़ते रहे और किसी ने इनकार न किया इससे इजमा मुस्लिमीन भी साबित होता है। यह सबकुछ हाफ़िज़ शमशुद्दीन बिन अब्दुल वाहिद अलमुक़्दसी हम्बली ने अपने एक रिसाला में ज़िक्र किया।

क़रतबी ने कहा कि शैख़ अज़ुद्दिन बिन सलाम ईसाले सवाब के क़ायल न थे फिर जब उनका इन्तकाल हो गया तो बाज़ लोगों ने उनको ख़्वाब में देखा तो दरयाफ़्त किया कि आप दुनिया में ईसाल सवाब के क़ायल न थे अब क्या हाल है? तो कहा कि हाँ पहले तो यही कहता था मगर अब मालूम हुआ कि खुदा के फ़ज़्लो करम से सवाब पहुंचता है और अब मैंने रूजू कर लिया है।

क़ब्र पर क़ुरआन पढ़ने के बारे में हमारे असहाब ने जवाज़ का क़ौल लिया है। ज़ाफ़रानी ने कहा मैंने ईमाम शाफ़यी रहमतुल्लाहि अलैहि से दरयाफ़्त किया कि क़ब्र के पास क़ुरआन पढ़ना कैसा है? तो आपने फ़रमाया हर्ज नहीं।

नूदी रहमतुल्लाह ने शरह मुहज़्ज़ब में फ़रमाया कि ज़्यारत करने वाले के लिये मुस्तहक है कि वह ज़्यारत के बाद क़ुरआन पढ़ें और दुआ करे इस पर ईमाम शाफ़ई की तसरीह भी है और उनके असहाब भी इस पर मुत्तफ़िक़ हैं और दूसरे मक़ाम पर फ़रमाते हैं कि अगर क़ुरआन ख़तम करें तो अफ़ज़ल है।

ख़िलाल ने जामय में शोअबी से रिवायत की कि जब अंसार का कोई मर जाता तो वह उसकी क़ब्र पर आते और क़ुरआन पढ़ते। अबू मुहम्मद समरक़न्दी ने सूरह एख़्लास के फ़ज़ायल में ज़िक्र किया कि जिसने क़ब्रिस्तान से गुज़रते हुए ग्यारह मर्तबा सूरह अख़्लास पढ़ी और उसक

सवाब मुर्दों को बख़्श दिया तो मुर्दों की तादाद के मोताबिक़ उसे अज्र मिलेगा।

अबुल क़ासिम सआद बिन अली ज़नजानी ने अपने फ़वायद में अबू हुरैरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो क़ब्रिस्तान से गुज़रा और उसने सूरह फ़ातिहा अख़्लास और अलहाको मुत्तका सोरो पढ़ी फिर यह दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! मैंने जो क़ुरआन पढ़ा है इसका सवाब मोमिन मर्द और औरत दोनों को देना तो वह क़ब्र वाले क़यामत के दिन उसकी सिफ़ारिश करेंगे।

अब्दुल अज़ीज़ जो खिलाल के साथी थे उन्होंने रिवायत किया कि हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं नबी करीम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने क़ब्रिस्तान में "यासीन" पढ़ी तो अल्लाह तआला उसकी बरकात से मुर्दों के अज़ाब में तख़फ़ीफ़ फ़रमा देगा और पढ़ने वाले को मुर्दों की तादाद के बराबर सवाब मिलेगा। क़रतबी कहते हैं कि यह हदीस कि अपने मुर्दों के पास यासीन पढ़ो, दो अहतमाल रखती है एक तो यह कि मरते वक़्त और दूसरा यह कि क़ब्र पर। पहला क़ौल जमहूर का है और दूसरा अब्दुल वाहिद मुक़दसी का है और हमारे उल्माए मोत्ताख़िरीन में से मुहिब तिब्री ने इसको आम रखा ग़ज़ाली ने अहियाअ में और अब्दुल हक़ ने अहमद बिना हम्बल से रिवायत करते हुए आक़बत में बयान किया कि जब तुम क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो तो सूरह फ़ातिहा, माउज़तैन और अख़्लास पढ़ो और उसका सवाब अहले क़ब्र को पहुंचा दो।

क़रतबी ने कहा कि एक क़ौल यह है कि पढ़ने का सवाब पढ़ने वाले को है और मय्यत को सुनने का सवाब है। इसीलिये तो नस क़ुरआनी के बमोजिब कुरआन के सुनने वाले पर रहम होता है क़रतबी फ़रमाते हैं कि खुदा के करम से कुछ बयीद नहीं कि वह पढ़ने और सुनने दोनों का सवाब मुर्दे को पहुंचा दे हनफ़ियों के फ़तावा क़ाज़ी खान में है कि जो मय्यत को मानूस करना चाहे तो वह क़ब्र के पास क़ुरआन पढ़े वरना जहाँ चाहे पढ़े क्योंकि खुदा हर जगह की क़िराअत सुनने वाला है।

हिकायत :-

बयान किया जाता है कि बनू हज़रमी के बुज़ुर्गों में एक बुज़ुर्ग शख़्स

बसरा में रहता था उसका एक भतीजा था जो फ़ाहशह औरतों की सोहबत में रहता था। बूढ़ा हमेशा अपने इस भतीजे को नसीहत करता था। इत्तफ़ाक़न वह लड़का मर गया। जब उसको क़ब्र में उतार दिया गया तो कुछ शुबह हुआ। चुनांचि एक ईंट सरका कर अन्दर देखा गया तो मालूम हुआ कि उसकी क़ब्र बसरा के घोड़ दौड़ के मैदान से भी ज़्यादा वसी है और वह दरम्यान में खड़ा है फिर ईंट को वापिस लगा दिया गया और घर आकर उसकी बीवी से उसके आमाल के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो उसने कहा कि जब मोअज़्ज़िन की शहादत को सुनता था तो कहता था कि "जिसकी तू गवाही देता है उसकी गवाही मैं भी देता हूँ" और दूसरों से भी कहता था कि यही कहा करो। (इब्न अबीअद्दुनिया)

हिकायत :-

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैंने हक़ तआला शान्हू से दुआ कि कि मुझे क़ब्रिस्तान वालों का हाल दिखा दे। मैंने एक रात को देखा जैसे क़यामत क़ायम हो गई और लोग अपनी क़ब्रों से निकलने लगे। उनको मैंने देखा कि कोई तो सुन्दस पर (जो एक ख़ास आला क़िस्म का रेशम है) सो रहा है कोई रेशम पर है कोई ऊँचे ऊँचे तख़्त पर है। कोई फूलों पर है कोई हंस रहा है कोई रो रहा है। मैंने कहा या अल्लाह! अगर यह सब एक ही हाल में होते तो कैसा अच्छा था। एक शख़्स ने इन मुर्दों में से कहा कि यह आमाल के तफ़ावुत की वजह से है। सुन्दस वाले तो अच्छी आदतों वाले हैं और रेशम वाले शोहदा हैं और फूलों वाले कसरत से रोज़ा रखने वाले हैं और रोने वाले गुनहगार हैं और आला मरातिब वाले (यह ग़ालिबन ऊँचे तख़्त वाले हैं) वह लोग हैं जो अल्लाह तआला शान्हू की वजह से आपस में मुहब्बत रखते थे।

□□□


हया और पर्दा
करीना-ए-ज़िन्दगी
मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ
हमारे गौसे आज़म
अल-बतूल
क़ब्र की पहली रात
इस्लामी
मिन्हाजुल आबिदीन
हदाइके बख़्शिश
कानूने शरीअत